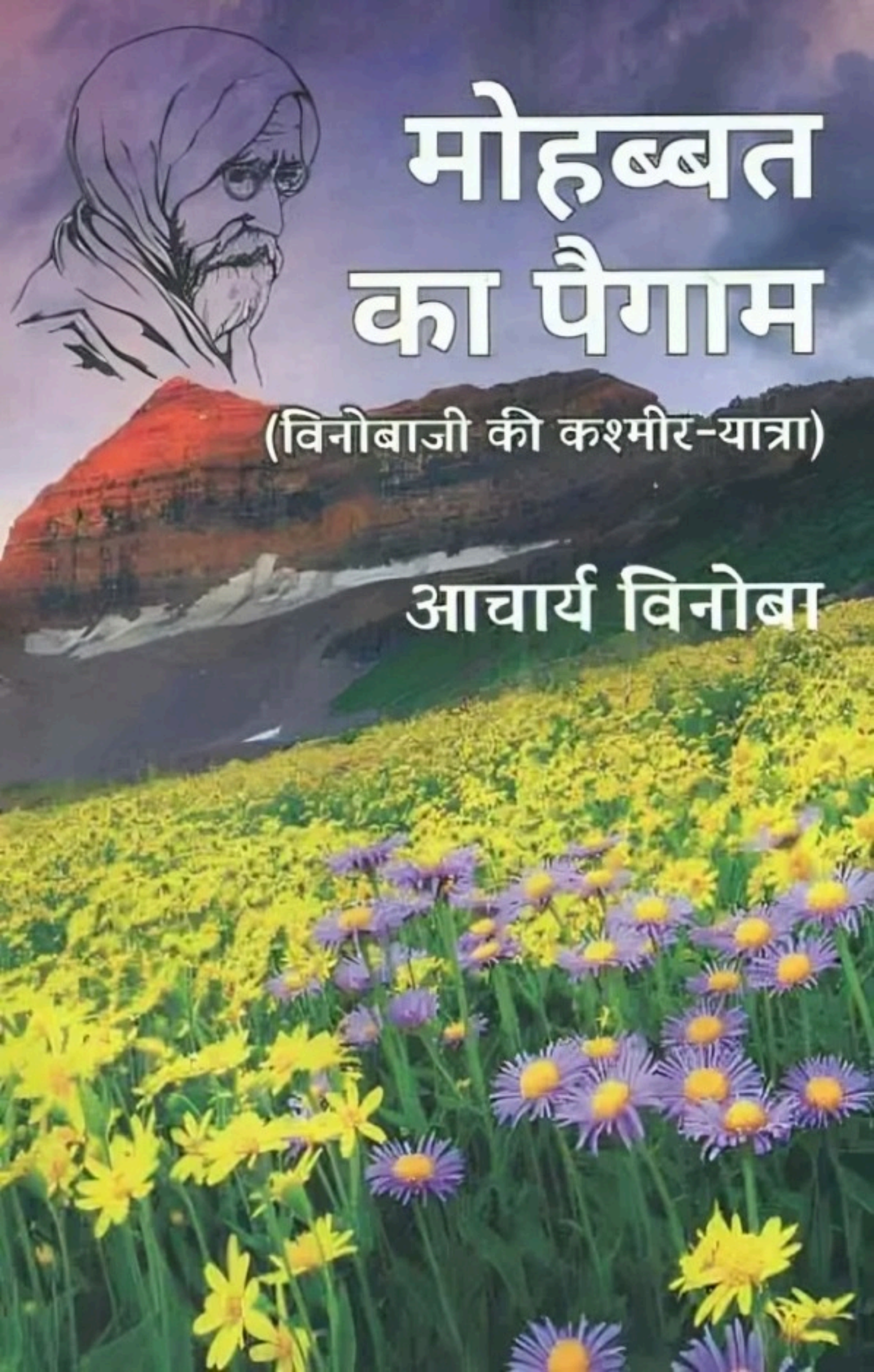
मोहब्बत
का पैगाम
(विनोबाजी की कश्मीर-यात्रा)
आचार्य विनोबा

मोहब्बत का पैगाम

(विनोबाजी की कश्मीर-यात्रा)

विनोबा

संपादन

बालविजय

सर्व सेवा संघ-प्रकाशन

राजघाट, वाराणसी-२२१००१

E-mail:sarvodayavns@yahoo.co.in

विनोबा की जम्मू-कश्मीर यात्रा (22-5-1951 से 20-9-1959 तक) के प्रवचनों के संकलन की यह पाँचवीं आवृत्ति पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है। उस यात्रा में विनोबाजी ने जो महत्त्वपूर्ण विचार रखे थे और जम्मू-कश्मीर के बारे में उनका जो दर्शन था वह इस पुस्तक में दिया गया है।

जम्मू-कश्मीर में यात्रा के कुल 80 पड़ाव हुए थे। वहाँ प्रवचनों में प्रयुक्त किये गये विशिष्ट उर्दू शब्दों की अर्थ-सूची पाठकों की सुविधा के लिए अन्त में जोड़ दी गयी है।

अनुक्रम

प्रकाशकीय

1. मेरा भरोसा : इंशा अल्लाह
2. जंगल से नसीहत
3. खुद और खुदा
4. कुरआनशरीफ़ की तालीम
5. जहाँ दिल बाग वहीं स्वर्ग
6. ग्राम-स्वराज्य और विश्व साम्राज्य
7. इन्किलाबे कल्ब
8. दिल जुड़ जायँ और निडर बनें
9. सियासत से कश्मीर की ताकत टूटेगी
10. आगे का जमाना सियासत का
11. रूहानियत से ही मसलों का हल
12. जम्हूरियत कब पनपेगी
13. जय-जगत् का कौल
14. जवान मेरा रूहानी सैलाब कबूल करें
15. फौजी भाइयों से
16. उस्ताद क्या करें ?
17. कश्मीरी अफसरों की जिम्मेवारी
18. हिन्दुस्तान का सिर सर्वोदय का सिर बने

शब्दकोश

प्रकाशकीय

विनोबाजी ने 1959 में जम्मू-कश्मीर की यात्रा की थी। यात्रा के पीछे उनकी योजना भूदान आंदोलन को व्यापकता एवं गति देने की थी, पर उसमें एक और संदेश निहित था - दिलों को जोड़ने का। भारत के लिए कश्मीर तब भी एक मसला था और आज भी है। लोगों के दिलों में तूफान होता है तो कई विध्वंसक घटनाओं, रूपों में प्रकट होता है। अक्सर इस तूफान को सियासत आग के गोलों से ठंढा करने की कोशिशें करती रहती है। जरा सोचें, तूफान और आग के मेल से कैसा सर्वनाश रचा जा सकता है। लगभग 4 महीने के कश्मीर प्रवास में विनोबाजी द्वारा व्यक्त विचार सावन की फुहारों की तरह हैं जो ताप को शीतलता देती हैं।

विनोबा कहते हैं कि "मसलों की वजह तंगदिली है। आज छोटे दिल और बड़े दिमाग की टक्कर हो रही है। पुराने जमाने में दिमाग भी छोटा था और दिल भी। आज भी वैसा ही होता तो निभ जाता। पर वैसा है नहीं, अब हम अपने दिल ऐसे ही तंग रखेंगे, छोटे रखेंगे तो मसले कतई हल तो होंगे ही नहीं, बढ़ जरूर जायेंगे।" कश्मीर की समस्या तंगदिली का परिणाम है। जिनके ऊपर मसलों को हल करने का जिम्मा है, वे ही उन्हें उलझा रहे हैं। जिस नजरिये से मसले पैदा हुए हैं, उसी नजरिये से उनका हल निकालने की बातें चल निकली हैं। वहाँ विनोबा की तरह 'मोहब्बत का पैगाम' लेकर जाना है।

अपने 80 पड़ावों में विनोबाजी का जो शिक्षण है, उसका दो महत्त्वपूर्ण निचोड़ है। विज्ञान और अध्यात्म। साइंस व रूहानियत। साइंस ने दुनिया को एकदम करीब ला दिया है। इसलिए कश्मीर सिर्फ कश्मीरियों का ही नहीं है, कुल दुनिया का है। जैसे हिन्दुस्तान सिर्फ हिन्दुस्तानियों का, पाकिस्तान सिर्फ पाकिस्तानियों का और जापान सिर्फ जापानियों का नहीं है, कुल समूची दुनिया का है।

इसी तरह रूहानियत को स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं—"रूहानियत मजहब नहीं है। मजहब हर जमाने में, हर कौम के लिए और हर समय के लिए एक नहीं होता, पर रूहानियत एक होती

है। जैसे प्यार करना, सच बोलना, रहम रखना रूहानियत है।" अर्थात् दुनिया के तमाम इंसानों के हक में जो बातें हैं, जो मूल्य हैं, वही अध्यात्म है और अध्यात्म तक पहुँचने के जो तौर-तरीके हैं, वही धर्म है। लोग इन तौर-तरीकों को लेकर झगड़ते हैं, जिन्हें समय के साथ बदल जाना है।

विचारों का यह संकलन कश्मीर के मसलों को वैकल्पिक नजरिये से देखने, समझने और हल करने को प्रोत्साहित करता है। हल का एक तरीका जम्हूरियत का, लोकतंत्र का सच्चा अनुपालन है। लोकतंत्र का अर्थ वोटतंत्र या प्रतिनिधितंत्र भर नहीं है। बल्कि वास्तविक स्वराज है, गाँवों में गणराज्य की स्थापना है। दिल्ली की सत्ता जब सर्वशक्तिमान हो जाती है तो अन्य स्तर की सत्ता इकाइयों में भी वैसा ही बनने की आकांक्षा जगती है। इससे सत्ता की खींचतान मचती है और कई मसले पैदा होते हैं। इसलिए हल इस तनाव को दूर करने में, सत्ता के विकेन्द्रीकरण में है।

इस पुस्तक को फिर से प्रकाशित करने का एक खास मकसद तो यह है कि कश्मीर की समस्या के हल के लिए उदात्त नजरिये की जरूरत है, इस प्रस्थापना से आज की पीढ़ी को परिचित कराया जा सके। इसके अलावा एक सामयिक जरूरत भी आ गयी है। गांधीजनों का एक जत्था 3 सितम्बर, 2016 से 3 नवम्बर, 2016 तक असम के कोकराझार से श्रीनगर तक साइकिल यात्रा कर शांति व मोहब्बत का पैगाम पहुँचायेगा। इस यात्रा में इस पुस्तक का पर्याप्त उपयोग हो, यह हमारी ख्वाहिश है।

इस ख्वाहिश को पूरा करने में सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री महादेव विद्रोही, प्रकाशन समिति के सभी गणमान्य सदस्यों व सहकर्मियों ने भरपूर सहयोग दिया है। हम सभी के प्रति आभार प्रकट करते हैं।

- अरविन्द अंजुम

संयोजक

1. मेरा भरोसा : इंशा अल्लाह

मैं यहाँ आकर क्या करना चाहता हूँ, इसकी ओर थोड़ा-सा इशारा कर दूँ। मैं अपनी ओर से कुछ भी नहीं चाहता। भगवान् जो करना चाहता है, वही होगा। मैं उसमें रुकावट न बनूँ, तो मैंने कमाया। उसकी जो इच्छा हो वही होनी चाहिए। वह जो चाहेगा, वही होगा। इसमें मेरा पूरा यकीन है। जैसे कुरआन में कहा है, यह केवल 'इल्मुल यकीन' नहीं, 'ऐनुल यकीन' भी है। मैंने देखा है कि भगवान् जो चाहता है, वही होता है। अभी तक मैंने अपना सारा भार या जीवन उसी पर सौंपा है। कभी भी मेरे लिए ऐसी चीज नहीं हुई, जो मेरे लिए और देश के लिए मुफीद न हो। मेरा उस पर भरोसा है। वह जो चाहेगा, वही होगा, इसलिए अगर भगवान् ने चाहा, इन्शा अल्लाह ! तो मैं तीन बातें करना चाहता हूँ : (1) मैं देखना चाहता हूँ, (2) मैं सुनना चाहता हूँ और (3) मैं प्यार करना चाहता हूँ। जितना प्यार करने की ताकत भगवान् ने मुझे दी है, वह सब मैं यहाँ इस्तेमाल करना चाहता हूँ। अगर वह सारी खतम हो जाय, तो मैं भगवान् से और मागूँगा। अगर लाचारी से मुझे बोलना पड़े तो केवल प्यार करने के लिए ही बोलूँगा, ज्यादा नहीं बोलूँगा। मेरा भरोसा बोलने पर नहीं है। हम दिल से भगवान् की प्रार्थना करें, उसी के बल से सारा होता है।

मैंने लुई पाश्चर की एक तस्वीर देखी थी। उसके नीचे एक वाक्य लिखा था, फ्रेंच, अंग्रेजी और हिन्दी में भी : "मैं तुम्हारा धर्म क्या है, यह नहीं जानना चाहता। तुम्हारे खयालात क्या हैं, यह भी नहीं जानना चाहता। सिर्फ यही जानना चाहता हूँ कि तुम्हारे दुख क्या हैं। उन्हें दूर करने में मदद करना चाहता हूँ। मजहब क्या है, यह देखना नहीं चाहता। खयालात नहीं देखना चाहता। दुख दूर करना चाहता हूँ। ऐसा काम करने वाले इन्सान का फर्ज अदा करते हैं।" इस वचन का मुझ पर बहुत असर हुआ। मेरी वैसी ही कोशिश हो रही है।

लखनपुर

बुद्ध पूर्णिमा : 22-5-1949

.

2. जंगल से नसीहत

कल मैं जंगल के रास्ते से आ रहा था। उस जंगल में मुख्तलिफ किस्म के दरख्त थे। हमारे साथ रेंजर थे। उन्होंने कहा कि जिस जंगल में एक ही किस्म के पेड़ होते हैं, वह जंगल बढ़ता नहीं और जिस जंगल में मुख्तलिफ किस्म के दरख्त होते हैं, वह जंगल तरक्की करता है। मैंने कहा— भारत ऐसी ही हालत में है। भारत में भी मुख्तलिफ जमातें रहती हैं। वेद के जमाने से आज तक यहाँ के लोगों को एक तजुर्बा है और सिलसिलेवार खेती की तहजीब मिली है और एक सभ्यता बनी हुई है। जोरदार और शानदार ऐसी 14 जबानें (भाषाएँ) यहाँ फली हैं, फूली हैं। ऐसा कौन-सा देश है, जो ऐसी शान दिखा सकता है?

हमारा काम इत्तहाद का

हमने जो काम उठाया है, वह जमीन का नहीं है। जमीन तो एक बहाना मात्र है। हमारा काम यह है कि दिल के साथ दिल जुड़ जायँ। हमने जो सवाल हाथ में लिया है, वह इत्तहाद का है। हम चाहते हैं कि दिलों का मेल हो। उसके लिए हमने बहाने के तौर पर जमीन के मसले जैसी एक ऐसी चीज हाथ में ली है, जो बुनियादी है और आज के जमाने की माँग है। अगर हम ऐसा कोई मसला हाथ में न लेते और यहाँ आकर सिर्फ कहते जाते कि भाई, आपस में मत लड़ो, प्यार से रहो, तो ऐसा कहने वाले तो कई सन्त हो गये। लोग उनकी बात सुनने के आदी बन गये हैं। हम सिर्फ इतना ही नहीं कहते कि प्यार करो, बल्कि यह भी कहते हैं कि प्यार का सुबूत, निशानी, अलामत भी पेश करो। लोग दान देते हैं, तो हमारी बात उनके हृदय में पैठ जाती है, इसका सुबूत मिलता है।

दिलों को जोड़ना ही देश की मुख्य समस्या

हिन्दुस्तान की मुख्य समस्या यही है कि लोगों के दिल जुड़ जायें। यहाँ अनेकजमातें रहती हैं, अनेक जमातों में अनेक मजहब, पंथ हैं, जिनसे सुन्दर संगीत बन सकता है। केवल एक ही

सुर हो, तो संगीत नहीं बनता। संगीत के लिए मुख्तलिफ सुर हों, यह निहायत जरूरी है। लेकिन वे सुर एक-दूसरे के खिलाफ न हों। अनेक मजहबों, अनेक जमातों का होना हिन्दुस्तान का ऐब नहीं, बल्कि वैभव, गुण है। यहाँ पर दुनियाभर से जमातें आयीं। तिलक महाराज ने तो कहा था कि हमारे पूर्वज उत्तर ध्रुव से आये थे। उत्तर में ऋषिदेश है, जिसे आजकल रशिया कहते हैं। यह कश्यप ऋषि का स्थान है। कश्मीर से लेकर जो कश्यप समुद्र (Caspian Sea) है वहाँ तक कश्यप ऋषि ने पराक्रम किया है, जैसे कि दक्षिण में अगस्त्य मुनि ने पराक्रम किया। दुनियाभर के लोग यहाँ आये और हमने उन्हें जज्ब कर लिया। कभी-कभी आरम्भ में कुछ कशमकश भी चली, लेकिन हमने प्रेम से सबको हजम कर लिया। यहाँ ईसाई, मुसलमान आदि जो भी आये, उन पर यहाँ की हवा का रंग चढ़ा। उनमें हिन्दुस्तान की सिफत आयी। एक मिली-जुली सभ्यता यहाँ बनी। यहाँ हिन्दू और मुसलमान बड़े प्रेम से रहते थे। परन्तु अंग्रेजों ने यहाँ आकर फूट डालो और शासन करो का रवैया अपनाया, जिससे तमाम राजनैतिक झगड़े पैदा हुए। जहाँ सियासी बातें आती हैं, वहाँ दिमाग के टुकड़े हो जाते हैं।

हिन्दुस्तान में अनेक धर्म हैं, अनेक पंथ हैं। उनका ठीक उपयोग करने का फन और सिफत होनी चाहिए। तभी वह खूबी कायम रहेगी। यहाँ लद्दाख में बौद्ध हैं। जम्मू में हिन्दू और सिख हैं, कश्मीर में मुसलमान हैं, ऐसे चार धर्म यहाँ हैं। इसके अलावा कुछ ईसाई भी होंगे, ऐसी मुख्तलिफ जमातें यहाँ हैं, तो हमें उनका ठीक उपयोग करना चाहिए। हम यह न समझें कि यह मुख्तलिफ जमातें हमारे मार्ग में रोड़े डालेंगी। ये रोड़े नहीं, सीढ़ियाँ हैं। भोजन में खारापन, मीठापन, तीखापन सब तरह के रस होने चाहिए। वैसे ही हिन्दू, बौद्ध, सिख, इस्लाम आदि अनेक धर्मों में भी अलग-अलग रस है। सभी धर्मों की सीख या सार हमें समझना चाहिए। वह एक ही है।

रसूलों में फर्क नहीं

गुरु नानक ने कहा है कि अठारह हजार बातें हैं, लेकिन बुनियादी चीज एक ही है— **'सहस अठारह कहनि कतेबा असलू इक धातु।'** जितने भी अलग-अलग धर्म हैं, वे सब इबादत

के अलग-अलग प्रकार हैं। इबादत के अनन्त तरीके हो सकते हैं। लेकिन अनन्त तरीकों में चीज एक ही है। अनुभव एक ही आता है। सबके अनुभव इकट्ठा कर सकते हैं। यही बात कुरआन में कही है। उसमें कहा है कि हर जमात अपने-अपने पंथ पर चलती है, डटी रहती है, फख्र करती है। एक-दूसरे को नीचा ऊँचा समझती है। लेकिन आप सब लोग एक ही जमात हैं। जितने नबी, गुरु, पैगम्बर आदि महान् लोग हो गये, उन सब रसूलों में हम फर्क नहीं करते। 'उम्मतुम वाहिद' भगवान् मुहम्मद को कह रहे हैं कि कुछ रसूल ऐसे हैं, जिनके नाम तुम जानते हो। लेकिन ऐसे बहुत से रसूल हैं, जिनके नाम तुम्हें मालूम नहीं। **'ला नुफ़र्रीकु बैन अहदिम् मिर रूसुलिह'** हम किन्हीं रसूलों में फर्क नहीं करते।

सभी धर्मों की खूबियाँ इकट्ठा करें

तात्पर्य यह कि सब खूबियों को इकट्ठा करना भारत की खूबी है। सबकी अलग-अलग खूबी होती है। जैसे इसलाम में एकता का खयाल है। समानता की भावना है, ऊँच-नीचता का स्थान नहीं है। नमाज पढ़ने के लिए बादशाह भी देर से आयेगा, तो पीछे जहाँ जगह होगी, उस स्थान पर बैठ जायेगा। मजदूर और बादशाह में कोई फर्क नहीं है। सब समान हैं और सारे इबादत में मगन हो जाते हैं। यह लेने लायक बात हमें लेनी चाहिए। ऐसी ही खूबियाँ हर धर्म में होती हैं ईसाइयों की ही बात देखिए! दुनिया में जहाँ कहीं कोई बीमार होते हैं, उनकी खिदमत में, सेवा में, ईसाई पहुँचते हैं। कुष्ठ रोगियों की सेवा भी वे करते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि प्रभु ईसा का सन्देश पहुँचाने के लिए वे सेवा करते हैं। पर मैं कहता हूँ कि यह शर्म की बात है कि हमारे देश में बीमारों की सेवा हम न करें और वे आकर करते हैं। ईसाई लोग अपने जीवन और कर्म से एक बहुत बड़ी नसीहत देते हैं। हिन्दू धर्म में वेदान्त और ब्रह्मविद्या है, जो लेने लायक है। बौद्ध धर्म में करुणा है, बुद्धि पर जोर दिया गया है, उसे हमें लेना चाहिए। इसलाम में जाति-भेद मिटाने की बात है, वह हमें लेनी चाहिए। सिखों ने वीरता और पराक्रम के साथ भक्ति को जोड़ दिया है। उनके

यहाँ जो बड़े-बड़े योद्धा थे, वे ही उत्तम ज्ञानी हो गये यह बात लेने लायक है। इस तरह हर धर्म में जो लेने लायक है, उसे हमें ले लेना चाहिए।

मसले हम पैदा करते हैं

मैंने कभी कहा था कि 'हम तो समझते हैं कि कश्मीर में मसला है ही नही।' जब यह अखबारों में छपा, तो कुछ लोग हैरान हो गये और कहने लगे कि यह मैंने कैसे कहा? मैंने उनसे कहा कि मृगजल वहीं होता है, जहाँ धूप की किरणें पड़ती हैं। लेकिनि जहाँ रात होती है, वहाँ मृगजल नहीं होता, मृगजल एक खयाल मात्र ही है। इसी तरह वे मसले भी खयाली हैं। अगर हम ठीक ढंग से पेश आते हैं, तो मसले काफूर हो जाते हैं। मसले हमने बनाये हैं, वे परमेश्वर के बनाये नहीं हैं। अब यह बात ठीक है कि बिहार में बाढ़ आती है, तो कुदरत एक मसला खड़ा करती है। आज भी चीन में तीन-तीन हजार मील बहनेवाली नदियाँ बाढ़ के कारण अपनी जगह बदलती रहती हैं तो यह एक कुदरती मसला है। इसमें विज्ञान की मदद ली जाय, तो मसला कुछ हद तक हल होगा, कुछ हद तक हल नहीं भी होगा। कश्मीर में मसला हमने पैदा किया है। हम मसले पैदा करने में बहादुर हैं। लेकिन हम प्रेम से रहना सीखेंगे, तो ऐसे किये हुए सब मसले जरूर हल होंगे इसलिए मैं तो कहता हूँ कि यहाँ मसला है ही नहीं।

भारत की जनता बुराई को भूल जाती है

दस साल से यहाँ अनेक जमातें आ बसी हैं और यहाँ मिली-जुली सभ्यता चल रही है। हम प्रेम से रहना जानते हैं। हमारी सभ्यता में ही यह चीज पड़ी है। फिर भी कभी कहीं कुछ हो जाता है और जो खराब चीजें होती हैं वे ही अखबारों में बड़े-बड़े टाइपों में छपती हैं। दस हजार साल का इतिहास यही बताता है कि हिन्दुस्तान की यह खूबी है कि यहाँ के लोगों के चित्त पर बुराइयाँ ज्यादा देर तक नहीं टिकतीं। यही इन्सानियत है, जो यहाँ पनपी है। कोई बुरी चीज थोड़ी देर के लिए हावी होती है और दूसरे क्षण में खत्म हो जाती है। इसलिए यहाँ पर जो मसले हैं, वे तो

खयाली हैं, दूसरे प्रान्त में मसले नहीं हैं, ऐसी बात नहीं। पर ऐसा कोई मसला नहीं, जो हमारी अक्ल से परे हो। हमें सिर्फ एक बड़ी बात करनी है और वह यह कि हम प्रेम से रहना सीखें। यह कोई नयी बात नहीं है। अभी गांधीजी हमें यही सिखाकर गये हैं। भारत में तो सत्पुरुषों की बारिश हुई है। बड़े-बड़े सत्पुरुष यहाँ आये और जगाकर चले गये। उन्होंने हमें सिखाया कि प्रेम से रहो। यह मुसलमान है, यह हिन्दू है, ये सारे इबादत के भिन्न-भिन्न प्रकार हैं। चीज तो एक ही है।

गैरजानिबदारों की सलाह लें

बात यह होती है कि कुछ 'एम्बीशस' (महात्त्वाकांक्षी) लोग होते हैं और वे 'एम्बीशन' के कारण हाथ में सत्ता ले लेते हैं, बावजूद जम्हूरियत के। फिर चन्द लोगों के हाथ में देश की बागडोर आ जाती है। अब मुझे माफ करेंगे, लेकिन ये लोग औसत अक्लवाले होते हैं। औसत अक्ल याने डेयरी का दूध । डेयरी का दूध किसी एक उत्तम गाय के दूध की बराबरी नहीं करता और न बिलकुल खराब ही होता है। इसी तरह जम्हूरियत में कोई औसत से ऊपर की अक्लवाला नहीं होता। ऐसे ही लोगों के हाथ में देश की बागडोर होने पर खतरा होता है। ऊँचे आदमी इसमें नहीं आते। क्या गुरु नानक आज की जम्हूरियत में चुनकर आते? क्या वे यह कबूल करते कि 49 मुझे वोट न दें, तो भी 51 के वोट से मैं काम करूँगा। पैगम्बर, गुरु नानक इन लोगों की जो अक्ल थी, ऐसी अक्लवाले लोग वे नहीं हैं, जिनके हाथ में आज बागडोर है। उनकी अक्ल खराब नहीं है, बल्कि औसत है, इसलिए उनसे काम भी औसत होते हैं। इसलिए हमें तटस्थ लोगों की सलाह लेनी चाहिए।

मैं कहना यह चाहता हूँ कि कोई मसला नहीं, अगर हम प्रेम से रहें। यहाँ हिन्दू, सिख, मुसलमान और बौद्ध, ये चार धर्म हैं। हरएक की अपनी-अपनी खूबी है, अपना-अपना रंग है। उनका ठीक उपयोग हो, तो हम देखेंगे कि कोई मसला है ही नहीं। हरएक खूबी का उपयोग, लाभ मिल सकता है। ये सारे अच्छे रंग हैं, इन्हीं में से अच्छी बात निकल सकती है।

कश्मीर की सुन्दर आबोहवा

यहाँ पर हम सब तरह के भेद मिटायेंगे, तो बड़ा आनन्द आयेगा और कश्मीर एक सुन्दर स्वर्ग बन जायेगा। इस स्वर्ग में सुविधा भी है। कश्मीर में ठंडक हुई, तो जम्मू में आने की सुविधा है। गर्मी हुई, तो हम कश्मीर में जा सकते हैं। दोनों प्रकार की आबोहवा का लाभ मिल सकता है, यह अच्छी बात है। कुदरत ने हमें बहुत नियामतें दी हैं, इसमें विज्ञान से भी मदद मिल सकती है। लेकिन विज्ञान की शर्त है। उस शर्त के साथ उसका उपयोग हमें करना होगा, तभी लाभ होगा। विज्ञान कहता है कि तुम लोग एक बनोगे तो लाभ होगा, नहीं तो खात्मा होगा। हमें विज्ञान से लाभ लेना चाहिए और हम उसे ले सकते हैं। उसके लिए हमें प्रेम से मिल-जुलकर रहना चाहिए।

कश्मीर का कर्तव्य

कश्मीरवालों की बड़ी हैसियत है। वे हिन्दुस्तान के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं। उसके लिए एक ही बात करनी है। जैसे कुदरत में मेल-जोल है, ऐसे हमारे जीवन में भी हो। आम के पेड़ में जो लकड़ी है वह खाने के नहीं, जलाने के काम में आती है। लकड़ी का उस मीठे आम से क्या सम्बन्ध ? लेकिन एक बीज बोयें तो उसी में से लकड़ी, फल, फूल, पत्ते निकलते हैं। पेड़ का एक पत्ता दूसरे पत्ता से मिला नहीं होता है। लेकिन सारे पत्ते एक ही पेड़ के हैं। लकड़ी, पत्ते, फल, फूल, सब में एक प्रेमरस भरा है। पेड़ को ऊपर से सूर्य की किरणें मिलती हैं। नीचे जड़ें हैं, वहाँ से पानी मिलता है, हवा भी मिलती है। अगर हवा, पानी या रोशनी इनमें से एक भी चीज न मिले, तो पेड़ नहीं बढ़ेगा। इस तरह कुदरत में सारी चीजें मिली-जुली रहती हैं, इसीलिए खूबसूरती पैदा होती है। सृष्टि में जैसे अन्दर एक रस है, वैसे मनुष्य के जीवन में प्रेमरस भरा रहेगा, तो सृष्टि के समान मनुष्य-समाज भी हरा-भरा रहेगा।

अब मैं चाहता हूँ कि हम सब एक हों। कश्मीरवाले यह न समझें कि हम कश्मीर के बाशिंदे हैं या हिन्दुस्तान के बाशिंदे हैं। बल्कि हम यह समझें कि हम दुनिया के बाशिंदे हैं। इसीलिए हम

'जय जगत्' कहते हैं। मैं यहाँ अच्छा खादिम बनकर आया हूँ, खिदमत में मुरब्बी बना हूँ। उसकी मश्क मुझे हुई है। आठ साल हिन्दुस्तान घूमकर मैं यहाँ आया हूँ, तो मुझे कुछ फन हासिल हुआ है। इसलिए मैं कुछ खिदमत कर सकता हूँ।

•

3. खुद और खुदा

दौलत और गुर्बत : आजमाइश के ही लिए

कुरआनशरीफ में कहा है कि अल्लाह हमारी आजमाइश करता है। वह किसी को दौलत या गुर्बत देता है, तो उसकी आजमाइश करने के लिए ही देता है। वह किसी को दौलत देता है, तो देखता है कि क्या वह पड़ोसियों पर प्यार करता है? अगर आदमी अपनी दौलत का हिस्सा बाँटता है, तो उस आजमाइश में पास होगा। और अगर दूसरों को लूटता है, चूसता है, तो फेल होगा। जो फेल होगा, उसे वह आग में ले जायेगा और जो पास होगा, उसे बाग में ले जायेगा। लोग समझते हैं कि जिसे अल्लाह ने गुर्बत दी, उस पर वह नाराज है और जिसे दौलत दी, उस पर राजी है। लेकिन यह खयाल गलत है। अल्लाह किसी को गुर्बत भी देता है, तो आजमाइश के लिए ही देता है। वह देखता है कि जिसे गुर्बत दी है क्या वह चोरी करता है, झूठ बोलता है या हाथ फैलाकर भीख माँगता है? अगर वह यही सब करता है, तो फेल होगा। लेकिन अगर वह दोनों हाथों से मेहनत करता है, झूठ नहीं बोलता है, चोरी नहीं करता, लाचार और दब्बू नहीं बनता, हिम्मत और सब्र रखता है, अल्लाह का नाम लेता है और जो भी थोड़ा-सा मिलता है, उसमें खुश रहता है- उसे दो रोटी की भूख है और एक ही हासिल हुई हो, तो उसमें से भी थोड़ा-सा हिस्सा दूसरे को देता है- तो इम्तहान में पास होगा। इस तरह अल्लाह दौलत या गुर्बत देकर अपने बन्दों की अजामाइश करता है, उन्हें कसता है। अल्लाह कभी खौफ पैदा करता है, कभी भूख की तकलीफ देता है, तो यह सब आजमाइश करने के लिए ही! जरा सब्र रखो ! सब्र रखनेवाले को खुशखबरी सुनने को मिलती है।

हम अपने दोष देखें दूसरों के नहीं

कश्मीर में कई राजनैतिक पार्टिया हैं। आज डेमॉक्रेटिक कान्फ्रेन्स के लोग हमसे मिलने आये थे। उन्होंने कहा कि “हम इसलाम को मानने वाले हैं। इसलिए हम मानते हैं कि यह जो

सैलाब आया है, वह हमारी बुराइयों का नतीजा है। यह इसलाम का एक अकीदा (विश्वास) है कि जब हम खुदा को भूल जाते हैं, तभी आफतें आती हैं। यदि हम उसे न भूलें, तो कभी तबाही नहीं हो सकती।"

यह सही बात है कि हमारी बुराइयों के कारण अल्लाह का गजब हम पर उतरता है। किन्तु जब हम यह बोलते हैं, तब सिर्फ तोते की तरह बोलते ही हैं, इस पर एतबार नहीं करते। सही माने में यह बात हमारी जबान पर तो है, पर दिल में नहीं है। क्योंकि दरअसल हम ऐसा मानते, तो अपने अन्दर दिल में पैठते और यों सोचते कि हममें क्या बुराइयाँ हैं? तब हम दूसरों की नहीं, अपनी ही नुत्ताचीनी करते, जरा अपने को जाँचते कि क्या मैं ठीक काम कर रहा हूँ। बजाय इसके कि हम दूसरों के दोष देखें, हम अपने दोष देखा करेंगे, तो इन्सान कुछ सुधर सकता है।

मिल्कियत मिटने से कशमकश मिटेगी

हमारा यह मानना है कि अल्लाह का गजब तब तक जारी रहेगा, जब तक हम मिल्कियत कायम रखेंगे। आज दुनिया में जितने दुख हैं, उनकी वजह है- मिल्कियत। यह घर, यह खेती, यह दौलत सब 'मेरी' 'मेरी' कहते हैं। यह 'मेरी' ही हमें तकलीफ देती है। इस तकलीफ और दुनिया की कशमकश को मिटाने के लिए आप सिर्फ 'मेरी' की जगह 'हमारी' दाखिल कर दीजिए। आप यों कहना सीखिए कि यह घर हमारा है, यह खेती हमारी है, यह दौलत हमारी है और ये सभी चीजें हमारी हैं। 'मेरी' कुछ नहीं, सब 'हमारी' हैं। यहाँ तक कि यह जिस्म भी मेरा नहीं, सबका है, सबके लिए है, जो सिर्फ मेरे सुपुर्द किया गया है, ताकि इसके जरिये सबकी खिदमत की जा सके। इस तरह हम सोचेंगे, तो कुल कशमकश खत्म हो जायेगी। एक भाई ने हमसे पूछा कि यह जद्दोजहद कायम ही रहेगी या मिटेगी? हमने कहा कि अगर इसकी वजह मालूम करके मिटाया जाय तो मिट सकेगी। इसकी वजह है मिल्कियत।

जमीन की मिल्कियत कुफ्र है

मेरी निगाह में हम गलत बातें बहुत करतें हैं। उनमें सबसे बुरी बात जमीन की मिल्कियत है, जो नहीं होनी चाहिए। जमीन के हम मालिक कैसे हो सकते हैं? उसका मालिक तो खुदा ही हो सकता है। जमीन की मिल्कियत का हक अल्लाह का ही है, हमारा नहीं। हम तो उसके खिदमतगार ही बन सकते हैं। जमीन की खिदमत करने का नसीब हमें हासिल है और वह हमारा फर्ज है। हवा, पानी और सूरज की रोशनी की तरह जमीन भी अल्लाह की पैदा की हुई चीज है। इसलिए जमीन की मिल्कियत नहीं हो सकती। हम जमीन को छोड़कर चले जाते हैं और वह यही पड़ी रहती है। आश्चर्य की बात है कि फिर भी हम उसके मालिक बन गये हैं। मालिक, मुजारे, बेजमीन यह जो सारा बनाया है, यह अल्लाह ने नहीं बनाया है, यह अल्लाह की कुदरत के खिलाफ है। उसने जितनी चीजें बनायी हैं, सबके लिए खोल दी हैं। सूरज की धूप आपको हासिल है, मुझे भी हासिल है। बादशाह को हासिल है और सबको हासिल है। कोई उसका मालिक नहीं है। हवा, पानी, सूरज की रोशनी, आसमान— ये सारी चीजें खुदा ने सबके लिए पैदा की हैं। हमने उनकी मालकियत बनायी, यह एक बहुत बड़ा पाप किया है। अल्लाह की कुदरत के खिलाफ यह हमारी बगावत है। बगावत जब तक जारी रहेगी, तब तक हम खुशहाल नहीं रह सकते।

मैं कहना चाहता हूँ कि हम जमीन के मालिक बनते हैं, तो उसका मतलब यह हुआ कि हम अल्लाह के साथ 'शिर्कत' करते हैं। इसे मैं 'कुफ्र' समझता हूँ। समझना चाहिए कि 'मालिक' अल्लाह ही हो सकता है, हम नहीं। हम तो जमीन के 'खादिम' ही हो सकते हैं। इसलिए गाँव-गाँव में लोग जमीन की मिल्कियत मिटायें, बाँटकर खायें, मिल-जुलकर काम करें और यह समझें कि जमीन 'मेरी' नहीं, 'हमारी' हैः गाँव की है। याद रखिए कि 'खुद' याने हमारा गाँव। खुद और खुदा, इन दो के सिवा तीसरी बात बीच में मत आने दीजिए।

जिन्दगी खुद और खुदा के हाथ में

बड़ी खुशी की बात है कि जो मिशन लेकर हम यहाँ आये हैं, यहाँ के लोग उसे जरूरी मानते और समझते हैं। वह कामयाब हुआ, तो बहुत बड़ा काम होगा। आखिर कश्मीर का नसीब

किसके हाथ में है? सियासतदाँ (राजनीतिज्ञ) कहते हैं कि आपका नसीब उसके या इसके, इस पार्टी या उस पार्टी के हाथ में है। कोई यह नहीं कहता कि आपकी 'जन्नत' और 'जहन्नुम' आपके ही हाथ में है, दूसरे किसी के हाथ में नहीं है। कहा जाता है कि कश्मीर का फैसला यहाँ के बड़े लोग करेंगे। कश्मीर के मसले का हल देहली में हो या दुनिया में और कहीं। लेकिन आप यह समझ लीजिए कि अगर अपनी जिन्दगी किसी के हाथ में है, तो खुद के और खुदा के हाथ में है। खुद और खुदा इन दो के सिवा तीसरे किसी का उसमें दखल नहीं है।

हमारी लकीर के दो नुक्ते

पहली बात यह है कि हम अपने हाथ-पाँव और दिल-दिमाग पर भरोसा करें, नेक काम करें और एक होकर काम करें। हम ऐसा करते हैं, तो हमारा नसीब एक हद तक हमारे हाथ में रहता है। उस हद के बाद और किसी के हाथ में है, तो खुदा के, हुकूमत के या दूसरे किसी के हाथ में नहीं। खुद और खुदा— ये दो नुक्ते मजबूत बनाओ। दोनों को जोड़नेवाली जो लकीर होगी, वही हमारा रास्ता, सबील होगी। लकीर दो नुक्तों से बनती है। उन दोनों को जोड़ने से हमारे लिए रास्ता बन जाता है। पहला नुक्ता हम खुद हैं, जहाँ हम काम करते हैं और दूसरा नुक्ता खुदा है, जहाँ हमें पहुँचना है।

'खुद' की तफ्सीर

'खुद' के मानी क्या है, ठीक से समझ लीजिए। 'खुद' के मानी मैं अकेला, इस जिस्म में रहनेवाला छोटा-सा जीव नहीं है। बल्कि 'खुद' याने हमारा गाँव। तवारीख में देहली, काशी जैसे 5-7 शहर हैं, जिनके नाम हम पुराने जमाने से सुनते आये हैं। लेकिन हम आपसे कहना चाहते हैं कि वे शहर उतने पुराने नहीं, जितने पुराने ये छोटे-छोटे गाँव हैं। अभी मैं आपके सामने 'खुद' की तफ्सीर बयान कर रहा हूँ। 'खुद' याने मैं अकेला, मेरा जिस्म या मेरा छोटा-सा कुनबा नहीं।

बल्कि हम जिस गाँव में रहते हैं, वह सारा गाँव मिलकर 'खुद' बन गया है जहाँ हमें अपनी मिली-जुली ताकत बनानी है।

ताकतें टकराने से सिफ़्र ही बनता है

मैं बार-बार कहता हूँ कि आपके बीच एक ऐसी चीज पैठ गयी है, जो आपको तोड़ती है—आपके दिलों को, आपकी जिन्दगी को तोड़ती है। वह चीज है, मिल्कियत। इस मिल्कियत के बोझ को पटक देंगे, तो आप देखेंगे कि आपकी जिन्दगी आसान बनेगी और आपकी ताकत बढ़ेगी। हमने आज मिल्कियत का बड़ा भारी बोझ अपने सिर पर उठा रखा है। यहाँ की सरकार ने बाइस एकड़ का सीलिंग बनाया है, तो हम समझते हैं कि अब हम उतनी जमीन के कानूनी मालिक बन गये हैं। मगर ऐसी मिल्कियत को क्या चाटना है? क्या अंग्रेजों के पास कानूनी हक नहीं था? वे हिन्दुस्तान पर हुकूमत चलाते थे। कहा जाता था कि उनका राज्य दुनियाभर में फैला है, जिसमें सूरज कभी नहीं डूबता। लेकिन आखिर हमने देखा कि उनके राज्य में भी सूरज डूबा और उन्हें यहाँ से बोरिया-बिस्तर बाँधकर जाना पड़ा। अंग्रेजों की बहुत बड़ी ताकत थी। उन्होंने जंग में जर्मनी को भी हराया था। लेकिन यहाँ उनके कदम नहीं टिक सके। क्योंकि वे बहाव के खिलाफ काम करते थे। बहाव के खिलाफ कोई नहीं टिक सकता। राजा-महाराजा भी नहीं टिके। इसलिए समझ लीजिए कि जमाने का बहाव किस तरफ है? यह भी समझ लीजिए कि हम मिल्कियत का दावा करेंगे, तो मार खायेंगे और हार खायेंगे। उससे गाँव के दिल और दिमाग के टुकड़े पड़ जायेंगे, गाँव की ताकत टूट जायेगी।

मान लीजिए, मेरी ताकत चार सेर और आपकी तीन सेर है। अगर हम दोनों की ताकतें मिलती हैं, तो सात सेर बनती हैं। लेकिन ताकतें टकराती हैं, तो नतीजा यह होता है कि मेरी नाम की जीत होती है, लेकिन दुनिया को सिर्फ एक सेर ताकत का ही फायदा मिलता है। मेरे दो हाथ और आपके दो हाथ मिल जाते हैं, तो चार बनते हैं। लेकिन एक-दूसरे के खिलाफ जाते हैं, तो

आप मेरे हाथों को काटते हैं, मैं आपके हाथों को काटता हूँ और (2-2=0) 'सिफ्र' (शून्य) बच जाता है। अभी हमारे समाज में दूसरा हिसाब चल रहा है, ताकतें टकराती हैं और सिफ्र बनता है।

ये बहकाने वाले सियासतदाँ

जो सियासतदाँ हैं, उनका नजरिया तंग रहता है। उनका दिमाग वैसा नहीं होता, इसलिए वे पार्टियाँ बनाते हैं। हम लोगों में पहिले ही तफरके (भेद) कम नहीं हैं। उनमें उन्होंने और एक 'पार्टी' वाला भेद पैदा किया है। वे इन्सानियत पैदा नहीं होने देते। पार्टी के नाम पर वे गाँव-गाँव लोगों को बहकाते हैं।

गाँववालों के पास जाकर उनकी ताकत बनाने के बजाय ये सियासतदाँ उनकी ताकत तोड़ते हैं। जिन्होंने कभी देहातों का मुँह भी नहीं देखा, वे भी चुनाव के वक्त देहातों में जाते और कहते हैं कि "हमें वोट दीजिए। हम यह करेंगे, वह करेंगे।" इस तरह बढ़ा-चढ़ाकर वादे करते हैं। वे कहते हैं कि "हमें वोट देंगे, तो आपको कोई फिक्र नहीं करनी पड़ेगी, आपकी तरक्की का कुल जिम्मा हम उठायेंगे।" इस तरह लोगों को बहकाया जाता है।

केवल 'इल्म' ही नहीं, 'अमल' भी चाहिए

होना तो यह चाहिए कि गाँववालों को समझाया जाय कि आपकी तरक्की का जिम्मा आप पर ही है, बाहर वाले तथा सरकार भी सिर्फ थोड़ी इमदाद (मदद) दे सकती है। हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहेंगे, तो अल्लाह के बारिश बरसाने पर भी फसल नहीं, घास ही उगेगी। याने अल्लाह भी फसल नहीं, घास ही पैदा कर सकता है। अल्लाह की बारिश का फायदा हमें तब मिलेगा, जब हम खेत में बोयेंगे, मेहनत- मशक्कत करेंगे। अल्लाह भी आलसी को मदद नहीं करता। हम बबूल बोयेंगे और अल्लाह का नाम लेकर उससे कहेंगे कि हमें आम दो, तो वह आम नहीं, बल्कि बबूल ही देगा। इसलिए सिर्फ अल्लाह का नाम लेने से कुछ नहीं होगा। नाम के साथ काम भी करना होगा।

सारा मामला अमल पर रुका हुआ है। 'इल्म' है, लेकिन 'अमल' नहीं है। चावल कैसे पकाना इसका इल्म तो है, लेकिन अमल नहीं किया, चूल्हा नहीं सुलगाया, चावल नहीं पकाया, तो क्या फायदा हुआ? उसूल जरूरी है, लेकिन उन उसूलों पर अमल भी होना चाहिए।

एक बनें और खुदा को याद करें

दो बातें याद रखिए : 1. सारा गाँव मिलकर हम 'खुद' बन जायँ। सारी जमीन, दौलत, अक्ल गाँव की बनायें। हमारे गाँव में बेजमीन कोई न रहेगा, कोई न रहेगा, कोई न होगा। चाहे अन्न हो या दौलत— जो कुछ भी हो, बाँटकर खायें। 2. खुदा को याद करें। बीच में किसी को दखल न देने दें।

.

4. कुरआनशरीफ़ की तालीम

आज सुबह 11 बजे हमने भाइयों को बुलाया था, कुरआनशरीफ़ की तिलावत (पढ़ाई) करने के लिए। तिलावत करनेवाले बहुत निकले और लोग भी बहुत आये थे। बहुत से लोग कुरआन पढ़ना जानते थे और कुछ बेचारे नहीं जानते थे। इसलिए गलतियाँ भी कुछ होती थीं। लेकिन अल्लाह तो 'गफूरुर्रहीम्' कहलाता है। इसलिए वह तो मुआफ कर ही देगा। बच्चा जब ठीक नहीं बोलता, तब भी उसकी टूटी- फूटी जबान माँ को प्यारी लगती है। इसी तरह से अल्लाह को भी वह सारा प्यारा लगा होगा। मुझे बड़ी खुशी हुई कि बहुत-से लोगों ने इसमें हिस्सा लिया। ऐसा प्रोग्राम मैं इसलिए करता हूँ कि यहाँ के भाइयों से वाकिफ हो जाऊँ।

'सूरे-हश्र' सबका प्यारा

मैंने देखा, करीब 13-14 शख्स होंगे, जिन्होंने तिलावत की। सबसे पहले जिन्होंने तिलावत की, उन्होंने सूरे-हश्र में से की। जब से इस प्रकार तिलावत करना शुरू किया है, तब से मैंने देखा कि हर मजलिस में 'सूरे-हश्र' का जिक्र हुआ ही है। इस बात की मुझे बेहद खुशी होती है। इससे जाहिर होता है कि कौन-सी चीज लोगों के दिलों को प्यारी लगती है। वैसे पैगम्बरों और नबियों ने दूसरी जगहों पर भी जो नसीहतें दी हैं, वे सबकी भलाई के लिए ही दी हैं। इसलिए किसी की कीमत कम, किसी की ज्यादा ऐसी तौल नहीं कर सकते। कुछ बातें किसी के काम आती हैं, तो कुछ बातें किसी दूसरे के काम आती हैं। इसका मतलब यह है कि कुछ बातें मेरी गरज के लिए होती हैं और कुछ दूसरे की गरज के लिए। कुछ ऐसी भी होती हैं जो सबके काम की होती हैं और वे सबको प्रिय होती हैं, प्यारी होती हैं।

अल्लाह के लाताअदाद नाम

'सूरे-हश्र' में अल्लाह के लाताअदाद नाम आते हैं। वे उनके विशेषण हैं। उनकी जितनी सिफतें (गुण) हैं, उतने ही नाम हैं। पर अल्लाह की सिफतों की गिनती हो ही नहीं सकती। उसके गुण, उसकी सिफत जबान पर भी नहीं ला सकते। उनको हम नाप नहीं सकते।

हिन्दू-धर्म में व्यासजी ने 'महभारत' नाम का एक ग्रन्थ लिखा है। उसमें 'विष्णुसहस्त्रनाम' आता है। याने भगवान् के सहस्र नाम हैं। मुसलमानों ने अल्लाह के 99 नाम माने हैं। क्या वाकई में अल्लाह के नाम 99 तक ही महदूद (सीमित) हैं? नहीं! लेकिन ऐसी सिर्फ गिनती मान रखी है। इसी तरह 'सूरे-हश्र' में अल्लाह के नाम इकट्ठे किये हैं और वह हिस्सा लोगों को बहुत ही प्यारा है। इसलिए हर प्रोग्राम में कोई न कोई उसे गानेवाला निकल ही आता है। यह बताया है कि हिन्दुस्तान के लोगों में अक्ल है। किस चीज की क्या कीमत है, इसे वे अच्छी तरह जानते हैं। इस तरह परमात्मा के नाम की अहमियत सब धर्मों में गायी गयी है। यह ठीक है कि बौद्ध-धर्म में बुद्ध का याने एक महापुरुष का नाम गाया है। खैर ! लोग किसी का भी नाम लें। आखिर इन्सान को बचानेवाला है कौन, यह पूछा जाय, तो नाम ही है। इसके सिवा दूसरी चीज इन्सान के पास नहीं है जो उसे खौफ से बचा सके।

अल्लाह की बड़ी देनें : मीजान और रहम

अल्लाह ने इन्सान को अक्ल और मुहब्बत दी है। अल्लाह का यह फज्ल (कृपा) है। उसमें जो नियामतें दी हैं, वे 'सूरे-हश्र' में आती हैं। उसमें ऐसा कहा है कि कौन-सी ऐसी अल्लाह की नियामत (देन) है, जो आप कबूल नहीं करते। उसमें अल्लाह की नियामतें गिनी हैं। यों उसकी गिनती तो नहीं हो सकती, लेकिन कुछ फेहरिस्त जरूर दी है।

अल्लाह ने जो कुछ पैदा किया है, उसका जिक्र करते हुए उसमें यह कहा गया है कि अल्लाह ने इन्सान को 'मीजान' याने तराजू दिया है। इसीलिए वह ठीक-ठीक वजन, नाप, तौल करता है। अल्लाह ने जो चीजें पैदा कीं, उनमें जमीन, आसमान, पहाड़, दरख्त, फूल, फल, अनाज आदि कई नाम आते हैं और अजीब बात यह है कि उनमें 'तराजू' का भी नाम आता है, 'मीजान'! और फिर नसीहत दी गयी है कि अल्लाह ने जो नियामतें दी हैं उनका पूरा फायदा उठाना हो, तो अपनी तराजू जरा ठीक रखें। उसमें कम-बेसी न होने दें। मेरे प्यारे भाइयों, तराजू हमने अपने पास इसलिए रखा है कि न्याय में कभी भी फर्क न हो, न्याय ठीक-ठीक दे सकें। तराजू से भी बढ़कर

कोई चीज हो सकती है, लेकिन वह तराजू (इसीलिए) है कि हम जिन्दगी में तौलकर काम करें। जीने के लिए अच्छी चीज मिलेगी, लेकिन हमारा नापना-तौलना कम न हो।

सबसे बड़ी चीज अल्लाह ने जो हमें दी है, वह है 'रहम'। अल्लाह का नाम है 'अल्रहमान'। मुहम्मद पैगम्बर यह नाम लेता है। उसने कहा है कि दूसरे-तीसरे माबूद (पूज्य ईश्वर) नहीं हैं। अल्लाह एक ही है। लेकिन वह 'अल्रहमान' यह नाम भी लेता है। कुरआनशरीफ में आता है कि एक दिन मीटिंग में एक शख्स ने मुहम्मद पैगम्बर से पूछा कि आप कभी 'रहमान' कहते हैं, कभी 'अल्लाह' कहते हैं तो क्या ये दो शख्स हैं? आप तो कहते हैं कि इबादत के लायक एक ही है।" इस पर पैगम्बर ने जवाब में कहा कि "अरे, जो अल्लाह है, वही रहमान है और जो रहमान है, वही अल्लाह है।"

अल्लाह भर-भरकर देता है

अल्लाह का सबसे बड़ा नाम है 'रहमान' याने रहम करनेवाला। अगर अल्लाह हम पर रहम करता है, तो हमारा फर्ज क्या है? अल्लाह ने हमें 'तराजू' दिया है, इसलिए जितना उसने दिया, उतना वापस हम करें, यह तो कम से कम बात हुई। अगर इससे भी कम हम करें, तो इन्सानियत से भी नीचे गिर जायेंगे। लेकिन अल्लाह ने हमारे सामने एक मिसाल रखी है। आप जितना देते हैं, उससे ज्यादा ही वह आपको देता है। आपके सामने किसान की मिसाल है। किसान एक दाना बोता है, लेकिन वापस कितना पाता है? यह जाहिर है कि बनिये की तरह अल्लाह तौलकर नहीं देता। वह एक के बदले एक नहीं देता। वह ऐसा नहीं करता कि आपने मुझे एक दाना दिया है, इसलिए मैं भी आपको वह दाना ही वापस करता हूँ और सूद के तौर पर और एक, इस प्रकार दो बीज देता हूँ। वह तो एक के बदले सौ देता है। भर-भरकर देता है, खूब खूब देता है।

हमारी जिन्दगी में भी रहम हो

कुरआनशरीफ में एक जगह आया है कि 'कोई शख्स अच्छा काम करेगा, तो अल्लाह उसे दसगुना देगा और अगर बुरा काम करेगा, तो उसे उतना ही देगा।" इसमें मीजान कहाँ रह गया? वह उसका इस्तेमाल ही नहीं करता। जहाँ बुरा काम किया गया, वहाँ वह उतना ही देगा और जहाँ अच्छा काम किया वहाँ वह दसगुना देगा। याने प्यार बरसाने के लिए वह तैयार बैठा है। आखिर में अल्लाह की हमारे लिए सबसे बड़ी मिसाल है 'रहम' । मैं आपसे पूछना चाहता हूँ, क्या वह रहम भी जिन्दगी में रहा है? वह तराजू भी नहीं रहा है। जितना दिया, उससे ज्यादा पाने की नीयत है। एक सेर पाया, तो पौन सेर लौटाने की नीयत है। लोग तो अल्लाह को भी ठगना चाहते हैं। वह 1 बीज के बदले 100 देता है, तो ये लोग उससे कहते हैं कि "हमारे 1 के बदले तू 100 देता है, तो हम कुछ भी नहीं दें— सिफ्र दें, तो तू हमें 99 दे।" अल्लाह कहता है : "तू मूझे बेवकूफ मत बना। प्यार देता हूँ। यह ध्यान रख कि 1 का 100 गुना 100 होता है। लेकिन सिफ्र का 100 गुना भी सिफ्र ही होता है। 0 × 100 = 0, 1 × 100 = 100 होता है।" ऐसी दया, रहम अल्लाह ने सब पर चलाया। कोई अच्छा काम करेगा, तो अल्लाह खूब देगा। कोई मेहमान आये, तो बाप अपने बेटे के थोड़े-से काम की खूब तारीफ उसके पास करता है। माँ-बाप का यह दिल कुदरत के करीब है। वह इन्सान को भर-भरके देती है।

दुनिया का बोझ उठानेवाले अनन्तनाग मजदूर

पीर-पंचाल लाँघते वक्त हम तो पैदल चल रहे थे, लेकिन हमारा सामान दूसरे भाइयों के कन्धे पर था। तब हमें लगा कि हम भी अपने सामान का कुछ हिस्सा क्यों न उठायें। जब से हमने थोड़ा सामान उठाना शुरू किया है, तब से हमारा दिल मजदूरों के दिल के साथ घुल-मिल गया है। दुनिया का कुछ बोझ मजदूरों ने उठाया है। हम उन्हीं की खिदमत करना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि हम और वह एक हो जायँ। संस्कृत में अनन्तनाग के मानी हैं साँप, जिसके सिर पर धरती है। हम मानते हैं कि कुछ धरती का बोझ उठानेवाला अनन्तनाग है, बेजमीन मजदूर। जब से हमने

सिर पर बोझ उठाना शुरू किया, तब से पता चला कि गरीबों के सिर पर कितना बोझ है। हम लोग उन पर इतना बोझ लादते हैं कि उनकी पीठ झुक जाती है। फिर भी हम महसूस ही नहीं करते कि उसपर हम कोई जुल्म करते हैं, उन पर ज्यादती करते हैं। जब तक हम गरीबों की जिन्दगी के साथ अपना मेल नहीं मिलाते, तब तक उनके दुख का अन्दाज हमें नहीं लगेगा। तब तक हमारे दिल में हमदर्दी पैदा नहीं हो सकती है। हमारी गिनती जालिमों में होती है और इसका जवाब हमें अल्लाह के सामने देना पड़ेगा। हमने अपना बोझ उठाना शुरू किया, उससे जिस्म को तो तकलीफ होती है, लेकिन रूह को खुशी होती है। गरीब भाई हमारे ही साथी हैं, हमारे कुनबे के ही लोग हैं, इस खयाल से दिल में सुकून पैदा होता है।

खूबसूरत कुदरत, बदसूरत इन्सान

यहाँ जितनी खूबसूरत कुदरत है, उतना ही बदसूरत इन्सान हमने देखा। हम लोरेन गाँव में गये थे। वहाँ से पीर-पंचाल का पहाड़ लाँघकर यहाँ आये। लोरेन में बड़ा ही सुन्दर नजारा देखने को मिला। आँखों के लिए सुकून (शान्ति), आँखों के लिए भोजन वहाँ मिलता है। लेकिन हमने देखा, जहाँ ज्यादा से ज्यादा खूबसूरत जगह है, वहाँ इन्सान ज्यादा से ज्यादा बदसूरत है। आपके जितने ब्यूटी स्पॉट्स (सुन्दर जगहें) हैं, उतने ही डर्टी स्पॉट्स (भद्दे धब्बे) भी हैं। वहाँ गुर्बत (गरीबी) भी खूब देखी। गरीबों की ओर कुछ भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

पीर-पंचाल के उस पार मण्डी-राजपुरा में हम छह दिन रुके थे। सैलाब के कारण वहाँ रुकना पड़ा। जमीन खिसकने (लैण्ड-स्लाइड) के कारण एक मकान गिर गया। उसके नीचे सात शख्स मर गये, आठवाँ जिन्दा निकला। हमारे साथियों ने वहाँ जाकर खोदा, लाशों को निकालना, दफनाना, कुल का कुल काम किया। मुसलमानों को दफनाने का काम हिन्दुओ ने किया। एक जो जिन्दा लड़का निकला था, उसकी भी तीन दिन तक खिदमत की, पर वह तीसरे दिन मर गया। यह सारा वहाँ हुआ। हम कुछ न कर सके, तो भी दुनियाभर में उसकी खबर पहुँची। हम वहाँ रुके, इसलिए दुनिया का ध्यान उस तरफ गया। सोचा जाने लगा कि अब बाबा का क्या

होगा? लेकिन जिनकी फिक्र नहीं की जाती, उनकी फिक्र करनी चाहिए। बाबा की फिक्र तो सभी करते हैं। हमने देखा, वहाँ मजदूर कहते थे : "आप हमें पैसा न दीजिए, अनाज दीजिए।" ऐसी गुर्बत वहाँ है। इस सैलाब की वजह से यह आफत आयी, यह अलग बात है। फिर भी वहाँ बहुत गुर्बत है। इधर गुलमर्ग में दुनियाभर के लोग देखने आते हैं। इतनी सुन्दर कुदरत वहाँ है। लेकिन वहाँ जो मजदूर हैं, उनकी हालत बहुत ही खराब है। अचरज की बात है कि जहाँ इतनी खूबसूरत कुदरत हो, वहाँ का इन्सान इतना संगदिल ! इतना तंगदिल बना है ! कुरआनशरीफ में 'सूरे बकर' में आता है कि "तेरा दिल पत्थर जैसा है।" बाद में कहा है, "लेकिन ऐसा कहना भी गलत है, क्योंकि दूसरे ऐसे कितने ही कीमती पत्थर होते हैं, जिनसे तेरा दिल ज्यादा सख्त है।" आश्चर्य है कि हमारा दिल इतना सख्त बन गया है।

प्यार को महदूद करने का नतीजा

फिर भी अल्लाह की क्या करामात है? उसने मनसूबा किया और हरएक को प्यार की तालीम बचपन से ही दी है। सरकार अक्ल की तालीम देती है। लेकिन मुहब्बत और प्यार की तालीम हर बच्चे को मिले— ऐसी तजबीज अल्लाह ने की है। हरएक बच्चा माँ की गोद में जन्म लेता है, चाहे वह अमीर हो या गरीब। प्यार और मुहब्बत की तालीम— इतनी बड़ी तालीम अल्लाह ने उसे दे रखी है। हम प्यार से जनमते हैं, प्यार से ही बढ़ते हैं। इतना सारा प्यार अन्दर-बाहर, ऊपर-नीचे, आगे-पीछे मिलता रहता है। फिर भी हम कैसे सख्त बन जाते हैं! घर में प्यार करते हैं और पड़ोसी के प्रति पत्थर का दिल बनाते हैं। इस तरह प्यार को हमने घर में महदूद किया है, कैदी बनाया है। प्यार को बहने नहीं दिया है। पानी को बहने नहीं दिया, तो पानी गन्दा बन जाता है, उसमें कीड़े पड़ते हैं, वैसे ही घर में 'मेरी बीबी', 'मेरे बच्चे'— याने बाकी और जो हैं गाँव में, वे 'मेरे नहीं'— ऐसा हो जाता है, तो प्यार की भी वही हालत हो जाती है। उसमें फिर प्यार का रूप नहीं रहता। जैसे वह पानी पीने लायक नहीं रहता, गन्दा हो जाता है, वैसे ही जो प्यार सिर्फ घर में रहता है, वह प्यार नहीं रहता, वह शहबत (कामवासना), हवस बन जाती है। कुरआन

में एक जगह आया है— 'नहनूनप्रस अनिलहवा।' बड़े-बड़े नबी, बड़े-बड़े सन्त सत्पुरुषों ने प्यार किया और खिदमत की है। वह प्यार गंगा का पानी है। उनमें प्यार था, इसलिए उन्होंने दुनिया की खिदमत की। लेकिन प्यार को रोका जाय, तो जिन्दगी बरबाद होगी, बिगड़ जायेगी।

कबीर की नसीहत

हम अपना आलीशान मकान बनाते हैं, जब कि आसपास झोपड़े भी होते हैं। हमारी जिन्दगी के लिए सारा सामान मुहैया है, फिर हमारे घर के लिए कोई खतरा न हो, इसलिए हथियार लेकर रक्षा के लिए, बचाव के लिए सन्तरी खड़े करते हैं। इस तरह हमारा अपना घर भरा है। कबीर का एक दोहा है –

"पानी बाढ़े नाव में, घर में बाढ़े दाम।
दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम ।।"

किश्ती में पानी भरा, यह खुशखबरी नहीं, डर है, इसलिए उसे दोनों हाथों से उलीचना चाहिए। जिस घर में पैसा भर गया, उसकी भी हालत उस किश्ती जैसी हो जाती है। पानी चाहिए, पर किश्ती के बाहर-नीचे, अन्दर नहीं। वैसे ही पैसा, धन दौलत चाहिए जरूर, पर घर में नहीं घर के बाहर, समाज में। दौलत को घर में कैद कर रखें, तो खतरा है। दौलत इस हाथ से उस हाथ में जानी चाहिए। जैसे फुटबॉल का खेल होता है। अगर मैं गेंद न फेकूँ, अपने ही हाथ में लिए रहूँ, खुदगर्ज बनूँ, तो खेल खत्म हो जायेगा। जहाँ गेंद हाथ में आयी, तो उसे फौरन लात मारकर आपके पास भेज दिया जाता है, वैसे ही दौलत एक के हाथ से दूसरे के हाथ में, समाज में बहती रहनी चाहिए, दौड़ती रहनी चाहिए, फैलती रहनी चाहिए। ऐसा करने से ही समाज की जिन्दगी अच्छी, खुशहाल बनती है।

जकात और रहम की जरूरत

कुरआनशरीफ में आता है— 'वयुअतुज्जकात।' जकात देनी चाहिए। 'मिम्मारजकना हुम युनफ़िक़ून।' जो भी थोड़ा है, उसी में से देना चाहिए। देना धर्म है और धर्म सभी को लागू होता है, इसलिए गरीबों को भी देना चाहिए। जो भी थोड़ा मिलता है, उसी में से पेट काटकर देना चाहिए। देने का यह फर्ज हरएक को अदा करना चाहिएं। किसान क्या करता है? फसल आयी, तो बोने के लिए उसमें से अच्छे

से अच्छा, उत्तम से उत्तम बीज निकालकर रखता है, क्योंकि दिये बगैर खाना नहीं चाहिए इसीलिए थोड़ा गल्ला हो, तो भी उसमें से किसान बोने के लिए निकालकर रखता है। खाने को कम हो, तो भी वह नहीं खाता। यह एक तरह से उसकी कुर्बानी है। इसलिए भगवान् खुश होते हैं और दसगुना देते हैं। इसलिए हम भी अपना फर्ज अदा करें, रहम करें और इन्साफ रखें। अगर हम इन्साफ भी न करें, तो इन्सान गिरेगा। इसलिए 'मीजान' रखें, 'तराजू' रखें। इन्साफ दें और ज्यादा रहम करें। आज रहम की सख्त जरूरत है।

ईमान के साथ अमल हो

"जो ईमान रखते हैं, वे नेक अमल भी करें।" इसका मानी यह है कि ईमान की कसौटी अमल ही है। इसलिए 'तिलावत करेंगे और जन्नत में जायेंगे'— ऐसा मानना गलत है। संस्कृत में कहावत हैः 'श्रुतं हरति पापानि ।' सुन लिया और पाप मिट गये। लेकिन सुनने भर से पाप खत्म नहीं होते। उसके लिए तो अमल करना चाहिए। अल्लाह से हमने भर-भरकर रहम पाया है। इसलिए हमारा भी फर्ज है कि हम भी इन्साफ करें, रहम करें। यह सूझ सूझती है अल्लाह का नाम लेने से ही। इसलिए 'सूरे हश्र' की तिलावत करते हैं। अल्लाह 'अलहक' है, तो हमें भी सच्चाई से चलना चाहिए। वह 'अलरहमान' है, तो हमें भी रहम करना चाहिए। जो-जो गुण, जो-जो नाम अल्लाह के हम गायें, उनका अमल हमें हमारी अपनी जिन्दगी में भी करना होगा। हमें उन सिफतों

(गुणों) को अपनी जिन्दगी में लाना चाहिए। उसकी रहम बेहिसाब है। हमारी छोटी कूबत है। फिर भी हम जो नाम ले रहे हैं, इसका अमल जिन्दगी में करना चाहिए। आज की तिलावत से हमें बड़ी खुशी हुई। 'सूरे हश्र !' अल्लाह का नाम लिया करो। ऐसा करने से इन्सान जरूर ऊपर उठता है।

आखिरी लमहे के लिए सारी कोशिश

आखिरी लमहा (क्षण) अच्छा हो, इसलिए हाथ से नेक काम होना चाहिए। आखिरी क्षण हम अल्लाह का जिक्र करते रहेंगे, उसका नाम लेते रहेंगे, तो हमने पा लिया। वह आखिरी क्षण, लमहा अच्छा हो, इसलिए यह कोशिश हो रही है। जिन्दगी भर हमने बहुत त्याग किया, तकलीफ उठायी, पर आखिरी क्षण में उसे याद न कर सके, तो हमने सब कुछ खो दिया।

.

5. जहाँ दिल बाग वहीं स्वर्ग

प्यार के साथ गुर्बत क्यों?

परसो हम सोपोर में थे, जो एक बहुत बड़ा सियासी मरकज है। वहाँ बहुत लोग आये थे। उन्होंने बड़ा प्यार, खूब मोहब्बत बरसायी। यहाँ भी वैसा ही प्यार हम देख रहे हैं। वहाँ इतने झगड़े इतनी गुर्बत क्यों? यह मेरे लिए एक सोचने की बात हो जाती है। इतना प्यार है, फिर भी काम क्यों नहीं बनता? यह सोचता हूँ, तब मुझे बिजली याद आती है। घर-घर में बिजली पहुँची है। जरा बटन दबाया, तो झट बिजली घर में रोशनी करती है। बिजली घर में आयी है, फिर भी घर में अन्धेरा है, क्योंकि बटन नहीं दबाया है।

एतबार का बटन दबाओ

प्यार हरएक के दिल में खूब भरा है। उसे बाहर लाने के लिए बटन दबाने की तरकीब हाथ में आ जायेगी, तो कोई शख्स ऐसा नहीं मिलेगा, जो अपनी दौलत, मेहनत आपको नहीं देगा। उसके पास जो कुछ है, उसे वह आपको जरूर देगा। इस पर मैं सोचता हूँ, तो लगता है कि प्यार एक बिजली है और बटन है एतबार, विश्वास, यकीन, भरोसा। इस यकीन के साथ हम दूसरे के पास पहुँचेंगे, तो हमें उसके दिल में जगह मिलेगी। आज यह नहीं होता। हम एक-दूसरे की तरफ शक-शुबह से देखते हैं। क्या हम घर के बाहर किसी भाई पर यकीन रखते हैं? हम एकदम सोचने लग जाते हैं कि वह दूसरी पार्टी का है, दूसरे मजहब का है। न मालूम उसके मन में क्या होगा? इस तरह मन में शक-शुबह पैदा हो जाय, तो हम एक दिल नहीं बन सकते। दूरी-भाव कायम रहता है। और फिर झगड़े भी पैदा हो सकते हैं। लेकिन अगर एतबार हो, तो जो भी हमें मिलेगा, हमारा प्यारा बन जायेगा।

यह जो एतबार है— मनुष्य का मनुष्य पर, वही प्रेम को खींचता है। प्रेम तो बिजली है। उस प्रेम से, उस बिजली से हर दिल भरा है। लेकिन एतबार कहाँ है? इसलिए वह प्यार काम में नहीं

आता। इसलिए मन में जो शक-शुबह है, वह हम छोड़ें और पूरा एतबार रखें, तो प्यार दिल से बाहर आयेगा।

यकीन के तीन रूप

हमें यकीन था कि सही चीज लोगों को कबूल करनी ही पड़ती है। इन्सान के दिमाग में ऐसी खुसूसियत है कि जब उसे असलियत का पता चल जाता है, तो झूठ का परदा हट ही जाता है। हमने यकीन रखा था और वह 'इल्मुल यकीन' था। हमने देखा, लोग हजार-हजार दानपत्र और ग्रामदान दे रहे हैं। फिर 'ऐनुल यकीन' हो गया। हम यकीन रखकर, लोगों के दिलों पर भरोसा रखकर माँगने चले गये, तो हमें मिला।

पहले 'इल्मुल यकीन' था फिर 'ऐनुल यकीन' हो गया— साक्षात्कार हो गया। अब 'हक्कुल यकीन' होना चाहिए। यह यकीन की बात क्या है, यह मुसलमान लोग जानते होंगे। शास्त्रों में भी यह बात आती है। मान लीजिए, एक शख्स ने सुना कि लड्डू की पंगत पड़ोस के गाँव में हुई है। पर उससे पेट नहीं भरा। इसे इल्मुल यकीन कहते हैं। याने उसने सुना। फिर दूसरे ने देखा कि पंगत हो रही है और लोग लड्डू खा रहे हैं। यह 'ऐनुल यकीन' हो गया। लेकिन 'हक्कुल यकीन' तब होगा, जब लड्डू खाने को मिलेंगे। इस तरह जब ग्रामदान होगा, ग्राम-स्वराज्य होगा— गाँव में बच्चों को तालीम मिलेगी, शामिलात दूकान होगी, गाँव के झगड़े गाँव के बाहर न जायेंगे, वकील का मुँह न देखना पड़ेगा, सारी शादियाँ मिली-जुली होंगी— तब जो यकीन होगा, वह 'हक्कुल यकीन' होगा। इल्मुल यकीन से शुरू हुआ और 'हक्कुल यकीन' हो गया है। यहाँ जम्मू और कश्मीर में जमीन मिल रही है, तो लोगों को ताज्जुब हो रहा है। यहाँ सीलिंग हो गया है और उसके बाद भी जमीन मिल रही है। यानी लोग जिगर का टुकड़ा काटकर दान दे रहे हैं। यह बहुत बड़ी बात है। बड़ी खुशी की बात है। हमारा जी चाहता है कि यहाँ ग्रामदान भी हो। यहाँ का राज्य इस काम के लिए अनुकूल भी है।

ऐसे बाग से आग ज्यादा पसन्द

अगर यहाँ यह काम होता है, तो हम जो सुनते थे कि कश्मीर स्वर्ग है, वह सचमुच स्वर्ग बनेगा। जहाँ कुछ जमीनवाले हों और कुछ बे-जमीन, वह स्वर्ग कैसे होगा? हम स्वर्ग का वर्णन सुनते थे, तो बड़ा अजीब लगता था। क्योंकि कहते थे कि वहाँ कुछ लोग पालकी में बैठते हैं, तो कुछ लोगों के कन्धे पर पालकी रहती है। हम कहते थे, ऐसा स्वर्ग हमें नहीं चाहिए। हमें ऐसा ही स्वर्ग चाहिए, जहाँ सभी लोग समान हों। हम ऐसे बाग में जाना पसन्द नहीं करेंगे, जहाँ सब नहीं जा सकते। बल्कि ऐसी आग पसन्द करेंगे, जहाँ सबके साथ जा सकें। वही स्वर्ग है, वही बहिश्त है, जहाँ सब समान हैं। सब भाई-भाई भी नहीं, दोस्त हैं। क्योंकि भाई-भाई में भी एक काफी बड़ा और एक काफी छोटा हुआ करता है।

भाई और दोस्त

जैसे भाई-भाई में छोटा-बड़ा रहता है, वैसे दोस्त में छोटा दोस्त, बड़ा दोस्त नहीं होता। भाई-भाई के तो झगड़े होते हैं, कोर्ट में— अदालत में पहुँचते हैं। चार भाई हों, तो उनके मुँह चार दिशाओं में होते हैं। भाई-भाई जितना लड़ सकते हैं, उतना दुश्मन भी नहीं लड़ सकता। जहाँ हक की बात आती है, वहाँ झगड़ा होता है और मुहब्बत नहीं रहती। वहाँ हर कोई अपने हक पर अड़ा रहता है। इससे कशमकश होती है। लड़ाई होती है। भाई-भाई में ऐसा हमेशा चलता है। देखिए, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों भाई-भाई हैं। दक्षिण कोरिया और उत्तर कोरिया भाई-भाई हैं। इस तरह घर में, कुनबे में सिर्फ मुहब्बत नहीं रहती है, उसके साथ हक भी रहता है। इसके कारण घर में कानून पैठ गया है। सिर्फ प्यार होता, तो वह स्वर्ग होता। जहाँ दिल की उदारता है, बड़ा दिल है, वहीं स्वर्ग है। यहाँ बड़े-बड़े पहाड़ हैं। बड़े-बड़े गुल हैं। बड़े-बड़े तालाब हैं। पर वह स्वर्ग नहीं है। जहाँ दिल बाग है, वहीं स्वर्ग है।

आज की बहुत सारी कशमकश बनावटी

आज दुनियाभर में कशमकश चल रही है। उसमें से बहुत सारी बनावटी है। चन्द लोगों ने अपने खयालों के लिए उन्हें खड़ा किया है। उनमें खुदगर्जी है, बहुत- सी गलतफहमी है और कुछ असलियत भी है। असलियत यह है कि अभी भी हमारे देश में गरीबी मिटी नहीं, बल्कि कायम है। हमने कुछ तरक्की तो की है, लेकिन जितनी करनी चाहिए, उतनी नहीं की। देश में जो गरीबी है, उसका फायदा उठानेवाले पड़े हैं। यूरोप, अमेरिका में हमारे जैसी गरीबी नहीं है, फिर भी वहाँ झगड़े कम नहीं हैं। वहाँ गरीबी के नहीं, अमीरी और खुशहाली के मसले हैं। जैसे गरीबी के मसले होते हैं, वैसे ही खुशहाली भी इन्सान के लिए मसला बन जाती है। अमीरी हो तो इन्सान का दिल, जिसे कुरआनशरीफ में 'हयातुद्दुनिया' कहा है, उसमें याने इस चन्द रोज की दुनिया में फँस जाता है। फिर दिमागी बुराइयाँ और बीमारियाँ बढ़ जाती हैं। यूरोप, अमेरिका में बाहरी तरक्की खूब हुई है। वहाँ खाना, पीना, कपड़ा खूब है। ऐशोआराम के तरह-तरह के साधन मौजूद है, फिर भी एक चीज की कमी है। वहाँ दिल में सुकून, शान्ति, तसल्ली नहीं है। वहाँ के डॉक्टरों के सामने दिमागी बीमारियों का मसला पेश है। वहाँ तरह-तरह के पागलपन हैं। इन्सान के दिमाग पर एक जब्बा हावी हो जाता है। कभी गुस्सा हावी हो जाता है और वह अपने दिमाग पर काबू नहीं कर पाता।

अमीरी में भी खतरा

इसलिए समझना चाहिए कि सिर्फ गरीबी मिटने से मसले हल नहीं होंगे। वह तो जरूर मिटनी ही चाहिए। लेकिन इन्सान पर अमीरी का हमला होता है, तो वह गलत रास्ते पर जाता है। इसलिए बीच की राह लेनी चाहिए। न गरीबी हो, न अमीरी, बल्कि मसावात हो। आखिर हमारी जिन्दगी का मकसद खाना, पीना और बाल-बच्चे पैदा करना ही नहीं है, बल्कि परमात्मा के पास पहुँचकर उनका दीदार हासिल करना है। हमें इस दुनिया में ऐसा काम करना चाहिए, जिससे हम परमात्मा की आजमाइश में फेल न हों और उनके पास इज्जत के साथ पहुँचें। जहाँ गरीबी होती है, वहाँ इन्सान अपना दिमाग खो बैठता है। उसमें सोचने की ताकत नहीं रहती, जिससे

तरह-तरह की उलझने पैदा होती हैं। अमीरी हो, तो भी तरह-तरह के मसलें पैदा होते हैं। इस तरह गरीबी में भी खतरा है और अमीरी में भी। इन्सान को परमेश्वर ने ऐसा पैदा किया है कि उसे न तो इधर झुकना चाहिए और न उधर ही। बल्कि सीधी राह लेनी चाहिए, जिसे कुरआनशरीफ में 'सिरातल मुस्तकीम' कहा है। इसलिए हमें सोचना चाहिए कि हमें अपने मुल्क में क्या करना है।

टीले की मिट्टी खोद गड्ढे में भरो

बड़ी खुशी की बात है कि यहाँ के लोगों के दिल इस बात के लिए तैयार हैं कि हम अपने गाँव का एक कुनबा बनायें, गाँव के लिए योजना बनायें। यहाँ के आपके नुमाइन्दे कह रहे थे कि हम ईमान की बात को मानते हैं। इन्सान का एक ईमान होता है और वह चाहता है कि हम ईमान पर कायम रहें, हमारा ईमान न टूटे। लेकिन अगर इन्सान अपना दिमाग खो बैठता है, तो उसका ईमान टूट जाता है। इसलिए यह जरूरी है कि न तो ज्यादा गरीबी हो और न ज्यादा अमीरी ही। जैसे दुख में खतरा है, वैसे ही सुख में भी है। चढ़ाई में खतरा है, तो उतराई में भी है। उतराई हो, तो बैल जोर से दौड़ना चाहते हैं। उस समय उन्हें काबू में न रखा जाय, तो गाड़ी गड्ढे में गिरने का खतरा रहता है। जैसे उतराई पर बैल बेकाबू होते हैं, वैसे ही सुख में, ऐशो-आराम में इन्सान दौड़े जाता है और पता नहीं चलता कि वह किस गड्ढे में गिरेगा। जैसे चढ़ाई पर बैल आगे बढ़ना ही नहीं चाहते, उन्हें पीछे से ढकेलना पड़ता है, वैसे ही दुख में हमारी इन्द्रियाँ आगे बढ़ने से इन्कार करती हैं। चढ़ाई और उतराई दोनों हालत में इन्सान को सावधान रहना ही पड़ता है। हाँ, लेकिन जहाँ ऊँचा-नीचा न हो, बिल्कुल समान, सीधा रास्ता हो, वहाँ सावधान रहने की जरूरत नहीं पड़ती। ऐसे रास्ते पर बैल बढ़ते रहते हैं और गाड़ी वाला सो भी जाता है। इस तरह यूरोप-अमेरिका का अनुभव दिखा रहा है कि जहाँ बहुत ज्यादा सुख होता है, वहाँ भी खतरा है। अपने देश का अनुभव बता रहा है कि जहाँ बहुत ज्यादा दुख— गरीबी होता है, वहाँ भी खतरा है। टीले और गड्ढे हों तो वहाँ खेती नहीं हो सकती। इसलिए करना यह चाहिए कि टीले की मिट्टी खोदकर गड्ढे में भरनी चाहिए, तभी खेती होगी।

हमें ग्रामदान करना है

हमें अपने देश में यही करना होगा और समझ-बूझकर करना होगा। हमारे पास ज्यादा सुख है, तो अपने दुखी पड़ोसी के लिए उसका हिस्सा देना चाहिए। इसी को ग्रामदान कहते हैं। हम अपने गाँव की जमीन की मालकियत मिटाकर जमीन सबकी बना दें और यह तय करें कि हम अपनी जरूरियात की चीजें गाँव में ही पैदा करेंगे। आज गाँव के लोग सारा कपड़ा बाहर से खरीदते हैं। लेकिन अगर वे तय करें कि हम गाँव में चरखा चलायेंगे, तो घर-घर में थोड़ी-थोड़ी दौलत आयेगी। जैसे बारिश बूंद-बूंद गिरती है, लेकिन सब दूर गिरती है, वैसे ही चरखा हर घर में बूंद-बूंद दौलत पैदा करता है।

कश्मीर अपना कपड़ा बनाये

कश्मीर में जाड़े के दिनों में छह महीने बर्फ के कारण लोग घरों में बैठे रहते हैं, कुछ काम नहीं करते। उस वक्त लोगों को कुछ न कुछ काम मिलना चाहिए। यहाँ पर ऊनी कपड़ा ज्यादा बनता है, लेकिन सूती भी इस्तेमाल होता है। मेरा हिसाब है कि हर मनुष्य के लिए सालभर में बीस रुपये का कपड़ा लगता होगा। यानी यहाँ की चालीस लाख की आबादी के लिए आठ करोड़ रुपये का कपड़ा बाहर से आता है। यहाँ की बेरोजगारी दूर करने के लिए कपड़ा यहीं बनाना होगा। जम्मू में कपास होती है। यहाँ कातने का फन भी है और घर-घर में चरखा पड़ा है। इसलिए यह काम चलना चाहिए।

इंजन साइन्स का, पटरी रूहानियत की

कुछ लोगों का खयाल है कि बाबा बिलकुल पुराने दकियानूस औजार लेकर गाँव में काम करना चाहता है। लेकिन यह बिलकुल गलत बात है। मैं तो चाहता हूँ कि गाँव में 'एटॉमिक एनर्जी' आये, जो विकेन्द्रित हो। मैं उसके इन्ताजार में हूँ। मुझे साइन्स का कतई डर नहीं है। मैं चाहता हूँ कि साइन्स का इंजन जोरदार चले। हमारी जिन्दगी की ट्रेन बहुत रफ्तार से बढ़े, लेकिन उसके

लिए पटरी रूहानियत की हो। इंजन साइन्स का हो, लेकिन ट्रेन किस पटरी पर चले, यह इंजन नहीं बतायेगा, यह अक्ल उसे नहीं है। इसलिए मैं साइन्स के इंजन के साथ रूहानियत की पटरी चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि इस तरह गाँव का, मुल्क का और दुनिया का मन्सूबा बने। इस मन्सूबे के दो पहलू होंगे : 1. रूहानियत और 2. साइन्स।

ग्रामदान यानी बुनियादी इन्कलाब

हम कहते हैं कि गाँव गाँव की ताकत बने। इधर रहे देहात और उधर दुनिया। दोनों के बीच की सूबा, मुल्क जैसी— जो कड़ियाँ हैं, वे धीरे-धीरे खत्म होंगी और आगे यह सूरत आयेगी कि गाँव का सम्बन्ध सीधा दुनिया से होगा। आज बीच की कड़ियाँ मौजूद हैं, लेकिन हम चाहते हैं कि गाँव आजाद हो, अपने पाँवों पर खड़ा हो। इसी का नाम है ग्रामदान।

ग्रामदान में यह जरूरी नहीं है कि जमीन इकट्ठा की जाय या किसान का इनीशिएटिव (अभिक्रम) खत्म किया जाय। ग्रामदान में मिल्कियत सबकी रहेगी और हरएक को पूरी आजादी रहेगी। हर कुनबे को काश्त करने के लिए गाँव-सभा की ओर से जमीन मिलेगी। साल के आखिरी में सब लोग अपनी फसल का एक हिस्सा गाँव के लिए दान देंगे, तो उसमें से गाँव का बैंक बनेगा, जिसमें से बेवा, बच्चे बूढ़े, बीमार— इन सबके लिए दिया जायेगा। इस तरह गाँव में स्वराज्य बनना चाहिए। देहात का मन्सूबा देहली नहीं, देहात ही बनायेगा। फिर देहली और श्रीनगर की हुकूमत देहात को मार्गदर्शन और मदद देगी।

कश्मीर पर अल्लाह का फज्ल

आप ग्रामदान करेंगे, तो जम्मू-कश्मीर में एक बुनियादी इन्कलाब होगा और ऐसे तरीके से होगा कि सबको सब किस्म का फायदा होगा। किसी को कोई नुकसान नहीं होगा। यहाँ के लोगों ने हमें यकीन दिलाया है कि यहाँ ग्रामदान होगा और हम करके ही रहेंगे। तब हमें एहसास

हुआ कि हम यहाँ आये हैं, तो यहाँ के लोगों की खिदमत में हम कुछ कर सकते हैं और भगवान् के भरोसे वह होकर रहेगा।

मैं देख रहा हूँ कि कश्मीर के लोगों के दिल तैयार हैं। जमीन तपी हुई हो तो पहली बारिश होने पर वह पानी को चूस लेती है, क्योंकि वह प्यासी होती है। वैसे ही यहाँ प्रेम की प्यास है। मुझे यहाँ अजीब तजुरबा हो रहा है। पहले मुझे इतना खयाल नहीं था कि मैं कश्मीर जाऊँगा, तो इतनी हमदर्दी, इतना नरम दिल दीखेगा और इतने प्रेम के प्यासे लोग मिलेंगे। यहाँ मुझे जो तजुरबा हो रहा है, उससे मुझे लगता है कि अल्लाह का फज्ल इस जमीन पर है। इससे यहाँ बहुत काम बनेगा।

6. ग्राम-स्वराज्य और विश्व-साम्राज्य

असली आजादी गायब है

हमारे देश को आजादी हासिल हुई है, लेकिन अभी सच्ची आजादी हासिल करना बाकी है। आज स्वराज्य न अमेरिका में है, न रूस में, न चीन में, न जापान में, न हिन्दुस्तान में और न पाकिस्तान में ही है। किसी भी देश में स्वराज्य नहीं है। वैसे ये सारे देश सियासी मानी में आजाद जरूर हैं। लेकिन दरअसल इन देशों में से कोई देश आजाद है, ऐसा मुझे तो मालूम नहीं देता। कम से कम अपना देश तो आजाद नहीं ही हुआ है, यह मुझे पक्का मालूम है।

'यतेमहि स्वराज्ये'

यह ठीक है कि अंग्रेजों की हुकूमत गयी। यहाँ ऐसी कई हुकूमतें आयीं और गयीं। लेकिन स्वराज्य आया, ऐसा मैं नहीं कह सकता। बल्कि वेद में तो एक मंत्र है 'यतेमहि स्वराज्ये'। अर्थात् स्वराज्य हासिल करने के लिए यत्न करें— ऐसी प्रार्थना ऋषि करता है। वैदिक ऋषियों के जमाने में भी स्वराज्य नहीं था। लोगों का खयाल है कि वेद के जमाने में सभी ऋषि थे और वे ध्यान-धारण करते थे। लेकिन ऐसा नहीं है। जनता आज के जैसी ही थी। ऋषि को यह महसूस नहीं होता था कि स्वराज्य आया है। बल्कि वह कहता है कि हम स्वराज्य के लिए कोशिश करेंगे।

आजादी के माने लोगों के हाथ में राज्य

हमें सरकार से मदद माँगने का हक है, लेकिन योजना हमारी हो और सरकार सिर्फ मदद दे। आज सरकार ही सब कुछ करती है और लोग जड़ बने हुए हैं। लोगों में ऐसी जड़ता आये, तो इस जमाने के लिए शोभा नहीं देगा। आज तालीम भी सरकार के हाथ में है और शिक्षक नौकर की हैसियत से आये हैं। इससे तालीम कुंठित हो जायेगी। लेकिन लोग इसको समझते नहीं। वे सरकार से कहते हैं कि हम स्कूल के लिए मकान बना देंगे और स्कूल आप चलायें। हम बीमार

पड़ेंगे और आप दवाखाना खोलिए। क्या यह भी कोई जिम्मेवारी का बँटवारा है? यह कोई आजादी नहीं है। लोगों को लगता है कि आजादी का माने है— हमारी जातवालों की सरकार। पाकिस्तान में मुसलमानों की हुकूमत है, तो वहाँ के लोग समझते हैं कि हम आजाद हैं। चीन में चीनी की हुकूमत, जापान में जापानी की हुकूमत है, तो वहाँ वाले समझते हैं कि हम आजाद हैं। यह आजादी नहीं है। आजादी के मानी है, जनता के हाथ में राज्य हो।

ताली कब बजेगी?

सरकार एक हाथ है और जनता दूसरा हाथ। दोनों हाथ जुड़ जाते हैं, तब ताली बजती है। आज सरकारवाले शिकायत करते हैं कि पंचवर्षीय योजना के काम में लोगों की तरफ से सहयोग नहीं मिल रहा है। एक हाथ से ताली कैसे बजेगी? इसलिए लोगों की तरफ से सहयोग मिलना चाहिए और लोगों का हाथ ज़बर होना चाहिए और सरकार का हाथ ज़ेर होना चाहिए। आज तो सरकार का हाथ ऊपर है और जनता का हाथ इतना नीचे है कि ताली बजती ही नहीं। होना तो यह चाहिए कि जतना का हाथ ज़बर हो और सरकार का हाथ ज़ेर। सियासी आजादी कम से कम आजादी है। उतनी आजादी से इन्सान तरक्की नहीं कर सकता। इन्सान तभी तरक्की कर सकता है, जब माली, इक्तेसादी, सामाजिक आजादी भी हासिल हो और उसका दिल भी आजाद हो। लेकिन दिल की यह आजादी तभी महसूस होती है, जब इन्सान अपने पर जब्त रखता है। जब वह अपने मन, इन्द्रियों और बुद्वि पर काबू रखता है, तभी अन्दर की आजादी हासिल होती है।

सच्ची आजादी कब?

बाहरी आजादी के लिए यह जरूरी है कि हम जिस जगह रहते हैं, वहाँ हमारा जीवन मिला-जुला हो, हम आपस में एक-दूसरे पर प्यार करते हों। फिर किसी तीसरे की हुकूमत हम पर नहीं चलेगी। लेकिन अगर हम आपस में लड़ते-झगड़ते हैं, तो सरकार का कानून आ बैठता है और हमारी आजादी में पाबन्दी आ जाती है। गाँव- गाँव के लोग मिल-जुलकर रहते हैं, अपना

कारोबार खुद सम्भालते हैं, प्यार से गाँव का एक परिवार बनाकर रहते हैं, तो वह आजादी है। फिर गाँव को सरकार की मदद तो मिलेगी, लेकिन सरकार का दखल न होगा। जगह-जगह सरकार का कानून आये, प्रजा के बोझ का सारा जिम्मा सरकार पर आये, लोग आपस में लड़ते-झगड़ते रहें और उनके झगड़ों को मिटाकर अमन कायम करने की सारी जिम्मेदारी भी सरकार पर ही आये, तो वह सच्ची आजादी नहीं है।

सच्ची आजादी तभी आयेगी, जब : 1. हम अपने मन, इन्द्रियों और बुद्वि पर काबू रखना सीखेंगे, 2. गाँव का एक परिवार बनाकर रहेंगे, जमीन की मालकियत मिटायेंगे, गाँव के झगड़े गाँव के बाहर नहीं ले जायेंगे, 3. कपड़ा तेल आदि रोजमर्रा की चीजें गाँव में ही बनायेंगे, जिससे गाँव के सब हाथ काम में लगें। अगर रोजमर्रा की चीजें बाहर से लेनी पड़ती हैं, तो वह गुलामी ही है, न कि आजादी।

आजादी याने अपने पर पाबन्दी

आजादी के मानी यह नहीं कि कोई पाबन्दी ही न हो। आजादी के माने हैं अपने- आप पर अपनी पाबन्दी। आजादी का लक्षण यह नहीं कि जो मन में आये, सो करना। सरकार कानून बनाये और पुलिस के जरिये सबसे उस पर अमल करवाये, तो वह आजादी नहीं कही जायेगी। हम ही अपना कानून बनाते हैं और हम ही उस पर अमल करते हैं, तो वह आजादी है। यद्यपि आज चोरी के लिखाफ कानून बना है और चोरी करनेवाले को सजा मिलती है, फिर भी हम इसलिए चोरी नहीं करते कि हम उसे अधर्म मानते हैं। सरकार के दण्ड के, सजा के भय से हम भलाई से बरतते हैं, तो वह आजादी नहीं है। लोग अच्छी चीज को खुद अच्छा समझ लेते हैं और उस पर अमल करते हैं। खराब चीज को खराब समझते हैं और उसे छोड़ देते हैं, तब आजादी है, ऐसा कहा जायेगा।

जब जेल खाली रहेंगे

अच्छा काम करना चाहिए, बुरा नहीं करना चाहिए, यह बात बच्चों को सरकार का कानून सिखायेगा या पुलिस समझायेगी? माता-पिता ही बच्चों को धर्म की तालीम देंगे कि सच्चाई बरतना चाहिए, झूठ नहीं बोलना चाहिए, किसी को तकलीफ नहीं देना चाहिए, सब पर प्यार करना चाहिए, सबके साथ अदब से और नम्रता से पेश आना चाहिए। इस प्रकार की तालीम माता-पिता अपने बच्चों को देंगे, तब बच्चे अच्छे बनेंगे। अगर यह तालीम देने की बात हम सरकार पर छोड़ेंगे, तो आजादी नहीं रहेगी। क्या बच्चों को मादरी जबान सरकार ने सिखायी? जैसे माता बच्चे को मादरी जबान सिखाती है, वैसे ही भलाई, बहादुरी, विनय, सत्यनिष्ठा, प्रेम से मिल-जुलकर काम करना आदि बातें सिखाये, तो फिर सरकार के कानून की जरूरत नहीं रहेगी। फिर कानून किताब में पड़ा रहेगा। कोई चोरी या झगड़ा नहीं करेगा। अदालत में कोई केस नहीं जायेगा। कोर्ट खाली रहेंगे, जेल खाली रहेंगे। जब जेल खाली रहेंगे, तब सच्ची आजादी आयेगी।

दुर्जन को सज्जन बनाना

गाँव वालों को हर रोज शाम को इकट्ठा होकर भजन करके फिर गाँव के बारे में सोचना चाहिए। किसी को क्या दुख है, किसको क्या कमी है, कहाँ सेवा की जरूरत है आदि सब देखकर सेवा का इन्तजाम करना चाहिए। दुर्जन पर प्रेम से जब्त रखकर उसे सज्जन बनाया जायेगा। खराब चीज में से अच्छी चीज पैदा हो सकती है। जैसे मनुष्य के मैले की खाद बनती है, तो उससे मेवे और फल पैदा होते हैं। इस तरह समाज में जो बुराइयाँ हैं, उनका इलाज सारे गाँव वाले मिलकर सोचेंगे। झगड़े मिटाने के काम में बहनों को आगे आना चाहिए। इस तरह अपने गाँव के लोगों को खुद सम्भालना यह आजादी का लक्षण है।

भगवान् की नियामतों का अच्छा उपयोग करें

आठ साल से मैं यही प्रेम की बात समझाता हुआ घूम रहा हूँ। प्रेम का लक्षण है 'देना'। 'हाथ दिये कर दान रे, कहत कबीर सुनो भाई साधो, कंचन निपजत खान रे', जैसे खान में से

सुवर्ण निकलता है, वैसे ही यह मनुष्य देह सोने की खान है। लेकिन सोने की खान में भी कचरा होता है, उसे अलग करके खालिस सोना लेना होता है। इसी तरह इस शरीर में अच्छाई भी है और खराबी भी। भगवान् ने हमें हाथ दिये हैं, तो उन हाथों से हम अच्छे काम भी कर सकते हैं और बुरे काम भी। हमें चाहिए कि अच्छे काम करें, बुरे न करें। भगवान् ने इन्सान को जबान दी है, जो दूसरे किसी जानवर को नहीं दी है। उस जबान से हम 'राम-नाम' ले सकते हैं, प्रेम और ज्ञान की बातें कर सकते हैं और गालियाँ भी दे सकते हैं। भगवान् ने हमें जो नियामतें, ताकतें दे रखी हैं, उनका अच्छा उपयोग करें, तो वह होती है आजादी और गलत उपयोग करें, तो बर्बादी। आप तय कीजिए कि आप आजादी चाहते हैं या बर्बादी? अगर आजादी चाहते हैं, तो अपने-आप पर जब्त रखना होगा, अच्छाई से बरतना होगा, बुराई को छोड़ना होगा, एक-दूसरे को बचाना होगा।

सजा के बदले सुधार

जैसे इन्सान तैरते हुए कभी थक जाता है, तो डूबने लगता है, फिर उसे बचाना पड़ता है। उसी तरह कमजोरी के कारण इन्सान कभी गलती कर लेता है, तो उसे हीन या नीच न समझकर उसकी मदद करनी चाहिए। यह ध्यान में रखना चाहिए कि हरएक में कमजोरी होती है, हम में भी है। कोई बीमार पड़ा, चाहे वह अपनी ही गलती से बीमार पड़ा हो तो भी हम उसकी सेवा करते हैं, उसे सजा नहीं देते। किसी ने मीठे आम ज्यादा खाये और वह बीमार पड़ा, तो हम उससे यह नहीं कहते कि तुमने आम ज्यादा खाये, अब उसका फल भोगो। बल्कि पहले हम उसकी सेवा में दौड़े जाते हैं। फिर उसे प्रेम से समझाते हैं कि ज्यादा नहीं खाना चाहिए। उसी तरह कोई बुरा काम करता है, तो उसे बीमारी मानकर उस शख्स की सेवा करके उसे सुधारने की कोशिश करनी चाहिए। सजा देने से मामला सुधरता नहीं, बल्कि बिगड़ता है।

जम्मू-कश्मीर अच्छा राज्य कैसे बनेगा?

हम चाहते हैं कि गाँव-गाँव में ग्राम-स्वराज्य बने और गाँव-गाँव की सेवा के लिए शान्ति-सैनिक मिलें। वे जाति, धर्म, पंथ, पक्ष आदि का खयाल नहीं करेंगे, इन्सान की इन्सान के नाते सेवा करेंगे और मौके पर शान्ति कायम रखने के लिए मर मिटेंगे। इस तरह अपने भाइयों के लिए प्रेम से जमीन देनेवाले और प्रेम से उनकी सेवा करनेवाले निकलेंगे।

आज यहाँ हमें चार भूदान-पत्र मिले थे। यहाँ जमीन पर सीलिंग है। इसके बावजूद यहाँ के लोगों ने, जिनके पास मर्यादा से भी कम जमीन है, हमें दान दिया। यह बहुत बड़ी बात है। इससे मुझे बहुत खुशी हुई। भगवान् ने हमें सम्पत्ति, श्रम-शक्ति, जमीन आदि जो कुछ दिया है, उसका एक हिस्सा समाज को देना चाहिए। ये दान दिल की गहराई से दिये जा रहे हैं। अन्दर के प्रेम को बता रहे हैं।

जैसे हवा, पानी सबके लिए है, वैसे ही जमीन सबके लिए है, ऐसा समझकर गाँव के लोग सारी जमीन गाँव की बना दें, तो गाँव में सरकारी दखल नहीं होगा। लेकिन सरकारी मदद मिलेगीं। कानून तो स्टीम रोलर जैसा होता है। कानून की मंशा सभी को इन्साफ देने की हो, तब भी वह सभी को इन्साफ नहीं दे सकता, इसलिए गाँव को एक परिवार बनाकर हम जमीन सबकी बना देते हैं, तो सरकार का कानून गाँव में दखल नहीं दे सकेगा। गाँव-गाँव के लोगों को यह एहसास हो कि हमारा गाँव एक कुनबा है। यों समझकर वे जमीन की मिल्कियत मिटा दें, शामिलात मिल्कियत मानें, जमीन बाँट दें, शख्सी मिल्कियत न रहने दें, गाँव की एक सभा बनायें, जो यह जिम्मा उठाये कि गाँव के हर शख्स को काम और खाना देना होगा। गाँव की दस्तकारियाँ बढ़ाने का काम भी वह करे। इस तरह गाँव-गाँव अपना गाँव याने एक स्टेट ही है, ऐसा महसूस करके अपना मंसूबा बनाये। फिर हम कहाँ रहें, भारत में, एशिया में या दुनिया में, यह सवाल ही नहीं रहेगा। हम अपनी जगह हैं और ईश्वर की गोद में हैं।

हर गाँव बहिश्त बनाना है

बेवकूफ मुसाफिर यहाँ आकर ताँगेवाले से पूछते हैं कि तुम कहाँ जाना चाहते हो ? कोई चिड़िया होती, तो बताती कि फलाने घोसले में जाना चाहती हूँ। लेकिन हमें कहाँ जाना है? हमें अपने खेत में काम करना है, अपनी जगह नहीं छोड़नी है और अल्लाह की गोद में रहना है। तुम टूरिस्ट आओ और जाओ, हमसे कोई मतलब नहीं। हमें परमात्मा की, इन्सान की सेवा करनी है। हम सारे गाँव वाले इकट्ठा हुए हैं। कुदरत की, इन्सान की और अल्लाह की खिदमत करते-करते हम जियेंगे और जब अल्लाह हमें बुलायेगा, तब हँसते-हँसते उसके पास जायेंगे, रोते-रोते नहीं। अगर हमसे पूछा जाय कि तुम्हें कहाँ जाना है, तो हम कहेंगे कि परमात्मा के पास जाना है। जब तक वह नहीं बुलायेगा, तब तक हम अपने गाँव में प्यार से रहेंगे और अपने गाँव को बहिश्त बनाने की कोशिश करेंगे। रूहानियत और साइन्स की मदद से हम इस दुनिया में जन्नत ला सकते हैं। वह लाने की हमारी कोशिश चलेगी। हमारा किसी के साथ कतई झगड़ा-फसाद नहीं है। यह बात गाँव-गाँव के लोग समझें और सरकार भी गाँववालों को यह बात समझाने की कोशिश करे।

कोई चीज ऊपर से लादी जाती है, तो हम या तो ऊपरवालों की तारीफ करते हैं या उनके खिलाफ बोलते हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए। बल्कि हमें यह महसूस करना चाहिए कि हम अपने गाँव को बनायेंगे। गाँव में सियासी जमातों को दखल नहीं देने देंगे। सियासत का गाँव से कोई ताल्लुक नहीं है। ऊपर के तबके में आप सियासत रखना चाहते हैं, तो रखें, लेकिन गाँव की तरक्की के साथ सियासत का कोई ताल्लुक नहीं है। अब तो सियासी पार्टियों को मिलकर तय करना चाहिए कि हमारे रवैये ऐसे हैं कि हमें देहात में दखल नहीं देना चाहिए। बल्कि देहात को प्यार से मुकम्मिल बनाने का रवैया हमें अख्तियार करना चाहिए।

सब एक साथ भगवान का नाम लें

गाँव में हिन्दू, मुसलमान, सिख वगैरह सब मजहबों के लोग भगवान् का नाम लेने में प्यार से इकट्ठा हों। रूहानियत और साइन्स दोनों के लिए यह जरूरी है। मुझे कभी-कभी यह देखकर दुख होता है कि और कामों के लिए तो हम इकट्ठा हो सकते हैं, लेकिन जहाँ भगवान् का नाम लेने का मौका आता है, वहाँ हिन्दू, मुसलमान, सिख सब अलग-अलग हो जाते हैं। मैं सोचता हूँ कि भगवान् कम्बख्त कैसा है कि उसका नाम लेने का मौका आया, तो हमें अलग होना पड़ता है। कामों में अलग होना मैं समझ सकता हूँ लेकिन परमात्मा का नाम लेने में हमें एक होना चाहिए। इस तरह हम हर गाँव में परमात्मा का नाम लेने में इकट्ठा हों और उस वक्त कुरआनशरीफ, गीता, ग्रन्थ साहब, धम्मपद, बाइबिल वगैरह किताबों का मुताला मिलकर करें। एक मिला-जुला समाज बनायें। कुरआनशरीफ में कहा है 'उम्मतुँ वाहिद्' तुम सब एक उम्मत् हो। जितने भी पैगम्बर, नबी, वली, ऋषि, मुनि, साधु, महापुरुष हो गये, उन सबकी एक ही जमात है, एक ही कौम है। यह इजहार कुरआनशरीफ ने दिया है। गीता में भी कहा है कि तुम कहीं से भी आते हो, तो मेरी तरफ ही आते हो। 'मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः' हे अर्जुन सब इन्सान सब बाजुओं से मेरी तरह ही आ रहे हैं। याने बिलकुल कुरआनशरीफ ने जो बात कही— 'कुल्लुन् इलैना राजीऊन' वही बात गीता कहती है। सब अच्छे-अच्छे धर्मग्रन्थ एक ही बात कहते हैं। हम सब प्यार से एक साथ बैठकर उन धर्मग्रन्थों का मुताला करें। हम एक साथ गायें, एक साथ खायें, एक साथ खेलें, कूदें, नाचें, एक-दूसरे पर खूब प्यार करें और जाते समय हँसते-हँसते चले जायँ। मेरी सिर्फ एक ही ख्वाहिश है कि परमेश्वर के पास जाते समय रोने का मौका न आये, हम हँसते-हँसते चले जायँ। यों सोचकर कि हम भगवान् से मिलने जा रहे हैं, हमें खुशी होनी चाहिए। हमें अन्दर से यह यकीन होना चाहिए कि हम भगवान् के पास पहुँच रहे हैं, तो अब उनका प्यार हमें हासिल होनेवाला है। हम उनके हुक्मबरदार हैं, उनके कदमों की खिदमत करने की हमने कोशिश की है, इसलिए हमें कोई खौफ नहीं है, कोई डर नहीं है। बिलकुल बेखौफ, बेडर, जैसा

कि कुरआनशरीफ ने कहा हैः 'ला खौफु ? अलैहिम वला हुम् यह जनून' निर्भय होकर हम परमात्मा के पास हँसते-हँसते चले जायँ। गाँव-गाँव के लोगों को हम इस तरह तैयार करेंगे, तो जो सियासी मसले हैं, वे हवा में उड़ जायेंगे।

गाँव वालों का सत्संकल्प

इस गाँव (सवार) के लोगों ने सभी भूमिहीनों को जमीन दी है और यहाँ एक आश्रम खड़ा करने का भी संकल्प किया है, जिसके लिए जमीन तथा सम्पत्ति भी मिली है। इस तरह यहाँ नये सिरे से एक समाज बन रहा है। परमेश्वर की प्रेरणा काम कर रही है। अब हमें संकल्प करना है कि हम अपने गाँव में ग्राम-स्वराज्य स्थापित करेंगे, जमीन की मालकियत मिटायेंगे, अपना कपड़ा गाँव में ही तैयार करेंगे। छुआछूत आदि सब भेद मिटा देंगे, प्रेम से रहेंगे। जो किसी को डराता नहीं और न किसी से डरता है, सब पर प्रेम करता है, ऐसे शख्स की मदद भगवान् ऊपर-नीचे, अन्दर-बाहर आदि सभी तरफ से करने के लिए तैयार खड़े रहते हैं। यकीन रखें कि ऐसे को कोई तकलीफ नहीं होती है। यहाँ का काम ऐसा बढ़े कि सारे भारत को गौरव महसूस हो। यह है विज्ञान का जमाना, जिसकी एक तमन्ना, एक ख्वाहिश है कि सारे इन्सान मिल-जुलकर काम करें। ये जो अलग-अलग राष्ट्र और अलग-अलग कौमें बनी हैं, विज्ञान के जमाने में नहीं टिकेंगी, इन्सान को कुल एक होकर रहना पड़ेगा। इधर तो गाँव रहेगा, छोटी-सी आबादी, जहाँ सब लोग इकट्ठा होकर रहेंगे और उधर कुल दुनिया की एक सरकार बनेगी। आज बीच-बीच में राष्ट्र, प्रान्त और जिले हैं, लेकिन विज्ञान के जमाने में एक बाजू गाँव और दूसरी बाजू दुनिया रहेगी और इस बीच जो कड़ियाँ होंगी, वे सभी को जोड़नेवाली होंगी। भौतिक सत्ता गाँववालों के हाथ में होगी और अखलाकी, नैतिक सत्ता, दुनिया का जो मरकज होगा, विश्व का मुख्य केन्द्र होगा, उसमें रहेगी। उसमें ऐसे लोग रहेंगे, जो गैरजानिबदार होंगे, अच्छे सोचनेवाले होंगे, स्वार्थी नहीं होंगे, वे सलाह-मशविरा देते रहेंगे।

आज दुनिया में जगह-जगह कशमकश चल रही है। इसका एक ही इलाज है— इधर ग्राम-स्वराज्य और उधर विश्व-साम्राज्य। ये दोनों मिलकर पूरा इलाज हो जाता है। गाँव-गाँव आजाद हों, इन्सान जहाँ भी बैठा हो, अपनी योजना खुद बनाये और उस पर खुद अमल करे, तो ग्राम-स्वराज्य हो जायेगा। ग्राम-स्वराज्य और विश्व- साम्राज्य के बीच में स्टेट, सूबा आदि जो रहेंगे, वे सब जोड़नेवाली कड़ियाँ होंगी। लेकिन ऊपर विश्व-साम्राज्य और नीचे ग्राम-स्वराज्य— इस तरह कुल दुनिया की योजना बनेगी, तभी दुनिया में सच्ची आजादी आयेगी। विज्ञान के जमाने में यही चीज माकूल होगी।

.

7. इन्किलाबे कल्ब

कश्मीर दुनिया का मरकज

यहाँ से सारी दुनिया को रोशनी मिली है। यह सिर्फ लफ्जों की बात नहीं है। हमारे पुराणों में इसका जिक्र है। हमारे पुरखों ने माना है कि दुनिया का मरकज या मध्यबिंदु मेरु कहाँ है? आज पता चलता है कि मेरु याने कश्मीर है— काश मेरु याने प्रकाशमेरु, जहाँ से चारों ओर प्रकार फैलता है। इसी 'काशमेरु' को बोलचाल की भाषा में 'कश्मीर' कहते हैं। देवता कहाँ रहते हैं, इसका जवाब पुराणों में दिया है कि वे मेरु के स्थान में रहते थे, याने आजकल की जबान में कश्मीर में रहते थे। इसमें कोई शक नहीं कि हमारे पुरखा बहुत पुराने जमाने से यहाँ रहते होंगे और यहाँ से चारों ओर फैले होंगे। लोकमान्य तिलक ने कहा था कि हमारे पुरखा उत्तरी ध्रुव पर रहते थे और वहाँ से आगे बढ़े। कुछ लोगों का खयाल है कि एक जमाने में कश्मीर सारी दुनिया का मरकज रहा होगा। यहाँ से चीन जा सकते हैं, हिन्दुस्तान जा सकते हैं, पश्चिम एशिया भी जा सकते हैं। इस लिहाज से कश्मीर की तवारीख शायद दस हजार साल की होगी। इसकी खुसूसियत यह थी कि यहाँ मुख्तलिफ जमातें रहती आयी हैं।

दुख की तरह ही सुख की बर्दाश्तगी

कश्मीर में तकलीफें बहुत हैं और खूबसूरती भी खूब है। बर्फ के मौसम में यहाँ तकलीफ होती है और दूसरे मौसम में खूबसूरत मंजर (दृश्य) देखने को मिलते हैं। दोनों को बर्दाश्त करते हुए यहाँ के लोग जिन्दगी बसर करते हैं। सुख और दुख दोनों बर्दाश्त करने होते हैं। दुख को बर्दाश्त करने की बात लोग समझते हैं, लेकिन सुख को बर्दाश्त करने की बात नहीं समझते। सुख भी बर्दाश्त करना होता है। दुख एक मिकदार से ज्यादा बढ़ा, तो खतरा है और सुख भी एक मिकदार से ज्यादा बढ़ा, तो खतरा है। सुख भी ज्यादा हुआ, तो मनुष्य दिमाग खो बैठता है।

यहाँ के लोग जाहिल नहीं

यहाँ के लोग सुख और दुख को बर्दाश्त करते गये। इसलिए वे पढ़े-लिखे भले ही न हों, लेकिन उनमें गहरा इल्म भरा हुआ है। वह इल्म तजुरबे से हासिल होता है और पुश्त-दर पुश्त चला आता है, यानी बाप से बेटे को मिलता है। इसलिए यहाँ के लोग जाहिल नहीं हैं, वे एकदम किसी के बहकावे में नहीं आते हैं। उनकी जिन्दगी धीरे-धीरे आगे बढ़ती है, इसलिए वे पिछड़े हुए दीख पड़ते हैं। खासकर बाहर के लोग यहाँ आते हैं, तो कहते हैं कि यहाँ के लोग आगे बढ़े हुए नहीं हैं। इसमें कोई शक नहीं है कि ये लोग दूसरों को लूटने के काम में आगे बढ़े हुए नहीं हैं। ये नहीं जानते कि दूसरों को कैसे लूटना, चूसना और अपना बोझ दूसरों पर कैसे लादना! ये अपना बोझ खुद उठाते हैं। इसीलिए जाहिल या अज्ञानी कहे जाते हैं। लेकिन ये ईमानदार हैं, नेक हैं, अपने दोनों हाथों से काम करके जीना पसन्द करते हैं। दिल में प्यार है।

अंग्रेजी और कश्मीरी

जब हम कश्मीर के लोगों की तरफ देखते हैं, तो उनकी तमीज में कोई कमी नजर नहीं आती है। हमदर्दी में, जबान से भगवान् का नाम लेने में, हाथ से काम करने में वे किससे कम हैं? तो उनमें कमी क्या है ? कहा जाता है कि ये लोग अंग्रेजी नहीं जानते हैं, यही बड़ी कमी है। ये अंग्रेजी नहीं जानते, तो अंग्रेज लोग कश्मीरी नहीं जानते। उनकी जबान अंग्रेजी है, तो इनकी कश्मीरी है। उनके लिए अंग्रेजी काफी है, तो इनके लिए कश्मीरी काफी है। लल्लेश्वरी ने कश्मीरी में गाने लिखे, जिनका अंग्रेजी तर्जुमा हमने पढ़ा, तो हमें अचरज मालूम हुआ। एक औरत 600 साल पहले कश्मीरी जबान में इतने ऊँचे विचार लिखती है, तो वह जबान कमजोर नहीं मानी जायेगी। कश्मीर के लोग बड़े तजुर्बे वाले हैं, दस हजार साल के पुराने हैं। इसलिए हमें यह खयाल कतई नहीं करना चाहिए कि ये लोग पिछड़े हुए हैं।

कश्मीरी भाषा नागरी में

मैं चाहता हूँ कि कश्मीर की यात्रा में कश्मीरी सीखूँ। यहाँ के तालीम के मंत्री से हमने कहा कि कृपा करके कश्मीरी किताबें नागरी और उर्दू-दोनों रस्मूलखत (लिपि- अक्षर) में छापा कीजिए। इससे कश्मीरी के आगे बढ़ने में काफी मदद मिलेगीं। मैं चाहता हूँ कि कश्मीरी खूब बढ़े। कश्मीरी साहित्य को आप खूब बढ़ा सकते हैं। जहाँ इतनी खूबसूरत कुदरत है, वहाँ बड़े-बड़े शायर पैदा हो सकते हैं। आप यह न समझें कि कश्मीरी में जान नहीं है। कश्मीरी में खूब जान है। उसने संस्कृत, फारसी, अरबी, पंजाबी वगैरह सभी भाषाओं से माल लिया और वह मालामाल हुई है। उसके साथ- साथ उसकी अपनी भी चीजें हैं। इसलिए कश्मीरी में बहुत कुछ लिखा जा सकता है।

कश्मीरी जबान देहात और शहर का भेद मिटायेगी

कश्मीरी जबान खूब फले, फूले। उसकी तरक्की हो। वह स्कूलों में चले और उसमें अच्छी-अच्छी किताबें शाया हों। हिन्दी, उर्दू, अरबी, फारसी, संस्कृत भी चले। थोड़ी अंग्रेजी भी चले। थोड़े बच्चे अरबी, संस्कृत सीखेंगे, ज्यादा हिन्दी-उर्दू सीखेंगे और उससे भी ज्यादा कश्मीरी सीखेंगे। अगर कश्मीरी जबान यहाँ नहीं चलेगी, तो शहर और देहात के बीच एक दीवार-सी खड़ी हो जायेगी। इल्म से देहात दूर रहेंगे। चन्द लोगों को इल्म रहा, तो वे बाकी के लोगों को, गरीबों को चूसते-लूटते, ठगते रहेंगे और दोनों के बीच कशमकश, दंगे-फसाद जारी रहेंगे। इसलिए जरूरी है कि शहरवाले लोग भी कश्मीरी जबान सीखें, पढ़ें, लिखें, बोलें। यह न समझें कि यह गँवार लोगों की जबान है। जिस जबान में लल्ला के वाक्य हैं, वह जबान गँवारों की नहीं हो सकती है और न बेवकूफों की ही हो सकती है।

हिन्दी और उर्दू जबान बड़ी है, लेकिन कश्मीरी भी उतनी ही बड़ी है। वह आसान भी है। आपकी मादरी जबान है। बच्चों को स्कूल में वह जबान लाजिमी नहीं है। — माँ बोलेगी कश्मीरी,

बाप बोलेंगे उर्दू, बाजार में उर्दू चलेगी और उस्ताद अंग्रेजी बोलेगा। इस तरह तीन बाजू की खिंचानों में आपके तीन टुकड़े हो जायेंगे। देहात और शहर के बीच दीवार खड़ी रहेगी। उनमें मेल नहीं होगा। इसलिए आपको फख्र होना चाहिए कि आप कश्मीरी बोलते हैं।

ज्ञानी सबके पास पहुँचें

यह बात ठीक है कि यहाँ के लोगों के पास दुनिया का इल्म कम है और वह बढ़ना चाहिए।

एक जमाना था, जब इस देश में बड़े-बड़े ज्ञानी, फकीर नबी, वली पैदल घूमते थे और घर-घर जाकर लोगों को ज्ञान देते थे। जैसे गाय के थनों में दूध भरा हुआ हो, तो वह दौड़ी जाती है और बछड़े को दूध पिलाती है, वैसे ही ज्ञानी सबके पास जाते थे। इन दिनों तो जो ज्ञानी हैं, वे श्रीनगर या दिल्ली में रहते हैं, वे गाँवों में नहीं जाते ! अगर वे गाँव-गाँव और घर-घर जाकर ज्ञान पहुँचाते, तो कितना ज्ञान फैलता और कौड़ी का भी खर्चा नहीं होता।

इसलिए यहाँ के लोगों के पास इल्म नहीं है, यह कहना उन लोगों के लिए अच्छा नहीं है, जो इन्हीं लोगों के पैसे से इल्म पा चुके हैं। मैंने आपके पैसे से इल्म पाया है और आपको ही मूरख कहूँ, यह कहाँ तक ठीक होगा? यहाँ के लोग दस हजार साल के तजुर्बेकार हैं। इनके पास अगर इल्म कम है, तो जिनके पास इल्म है, उनका फर्ज है कि इनके पास जायँ और सिर झुकाकर, इनके पाँव छूकर कहें कि आपने हमें पढ़ाया, तो अब हम आपके पास इल्म पहुँचाने आये हैं।

कश्मीर की ऊँची तमद्दुन

कल एक भाई दान देने आये थे, जिनकी औरत ने उन्हें दान देने के लिए कहा था। उस औरत ने किसी अखबार में एक फोटो देखा, जिसमें बाबा किसी का हाथ पकड़कर कठिन रास्ते से गुजर रहा था। वह फोटो देखकर उस बहन को लगा कि यह शख्स गरीबों के वास्ते इतनी तकलीफ उठाता है, इसलिए इसे जमीन न दें, तो ठीक नहीं होगा।

जिस औरत को वह तस्वीर देखकर अन्दर से यह सूझ आयी कि हमें गरीबों के वास्ते कुछ करना चाहिए, उसकी तमद्दुन में कुछ कमी है ? मैं मानता हूँ कि बाबा पीर-पंचाल की 13।। हजार फुट की ऊँचाई पर चढ़ा था, उस पहाड़ से भी उस बहन की ऊँचाई ज्यादा है। इसलिए ये लोग पढ़े-लिखे नहीं हैं, गँवार हैं, ऐसा सोचने का ढंग ही गलत है। आपके लिए मेरे दिल में बहुत प्यार और इज्जत है। मैं आपको नीच नहीं मानता हूँ। आप अल्लाह के बन्दे हैं, नेक हैं, हाथ से मेहनत करके रोटी कमाते हैं, इसलिए आप ऊँचे हैं। अल्लाह को याद कीजिए। गरीबों के लिए गरीब को भी कुछ करना है, यह सोचकर दिल की रहम को बाहर लाइए। आपकी तमद्दुन बहुत ऊँची है।

नया कश्मीर नया इन्सान

आप देख रहे हैं कि 'नया कश्मीर' बन रहा है। सरकार की तरफ से योजना बन रही है। बहुत पैसा खर्च किया जा रहा है, हजारों नौकर काम कर रहे हैं। गाँव-गाँव में डेवलपमेण्ट ब्लॉक, कम्युनिटी प्रोजेक्ट वगैरह चल रहे हैं। कहीं सड़कें, स्कूल, मकान बन रहे हैं, तो कहीं कुछ कारखाने खोले जा रहे हैं। कहीं कुछ, तो कहीं कुछ ! नित-नया कुछ बन ही रहा है।

हर सूबे में निर्माण का बहुत बड़ा प्रयत्न हो रहा है, वैसे यहाँ भी हो रहा है। लेकिन क्या नया समाज बन रहा है ? क्या कुछ नयी कद्रें (वैल्यूज) बन रही हैं ? अगर इन सब सवालों का जवाब 'नहीं' है और आज भी अगर वे ही पुराने झगड़े, फिरकापरस्ती, संगदिली, छोटे-छोटे जज्बात हैं तो फिर मकानात, खेती और सड़कों में फर्क होने से क्या होगा ? वैसे तो सैलाब आये या जलजला हो जाय, तब भी बहुत फर्क पड़ेगा। अस्सी फीसदी मकानात वगैरह ढह जायेंगे और फिर नयी दुनिया बसानी होगी। पर उससे क्या हुआ ? कुदरत, मकानात, कपड़े पहनने का ढंग आदि सब बदला, लेकिन दिल और दिमाग में कोई बदल नहीं हुआ, तो इतना ही होगा कि पुराने जमाने में जो झगड़े छोटे पैमाने पर होते थे, वे अब साइन्स की वजह से बड़े पैमाने पर होंगे।

इन्किलाब कब आयेगा?

दिल और दिमाग में फर्क न पड़ने से इन्सान की जिन्दगी में इन्किलाब नहीं आ सकता। इन दिनों 'इन्किलाब जिन्दाबाद' कहा जाता है। इसके मानी यह है कि मकान गिराने और नये खड़े करने की जो ताकत उसके हाथ में थी, वह इसके हाथ में चली आयी। लेकिन यह कोई इन्किलाब नहीं है। माना कि दुनिया बदल रही है, दस साल पहले का कश्मीर आज नहीं रहा है, लेकिन दिल और दिमाग वही रहा, तो इन्किलाब नहीं होगा।

रूहानी ताकत नया इन्सान बनायेगी

भूदान-ग्रामदान में छोटे पैमाने पर लोगों के दिल बदलने की कोशिश हो रही है। दिल और दिमाग में तबदीली लाकर उन्हें नया बनाया जा रहा है। यह कोशिश छोटी है, लेकिन राह नहीं है। पुरानी राहें सब उखड़ गयी हैं। हम नयी राह बना रहे हैं। आज कश्मीर की सरकार कुछ काम करती है, लेकिन गाँव-गाँव के लोग क्या करते हैं? क्या वे मिल-जुलकर काम करने लगे हैं? जमीन की मिल्कियत मिटाने लगे हैं? अपना मन्सूबा बनाने लगे हैं? अगर यह सब होता है, तो नया इन्सान बनेगा, नहीं तो नयी दुनिया बन जायगी, तब भी नया इन्सान नहीं बनेगा। सरकार की तरफ से जो काम किया जाता है, उससे नयी दुनिया बनती है, लेकिन नया इन्सान नहीं बनता। नया इन्सान बनाने का काम वे करते हैं, जो रूहानी ताकत को पहचानते हैं। माली हालत बदलना बाहर की चीज है। अन्दर की चीज बदलनी हो, तो रूहानी ताकत चाहिए। नयी राह पर चलकर रूहानी ताकत बढ़ाने की हमारी यह एक छोटी-सी कोशिश हो रही है।

जोड़ने वाली ताकत : रूहानियत

हर इन्सान में ताकत पड़ी है। अगर हम ताकतों को जोड़ना चाहते हैं, सबकी ताकतें इकट्ठा करके नया समाज बनाना चाहते हैं, तो जोड़नेवाली तरकीब चाहिए। जोड़नेवाली तरकीब सियासत या मजहब नहीं हो सकती है, रूहानियत ही हो सकती है। रूहानियत कुल इन्सानों को

एक बनायेगी। इसलिए आप इस तहरीक की तरफ माली तबदीली लानेवाली तहरीक की निगाह से मत देखिए, बल्कि अखलाकी और रूहानी तरक्की की निगाह से देखिए, तभी इसकी असलियत आपको मालूम होगी और आपके दिल का रुझान उसकी तरफ होगा।

सियासी नेताओं से बचो

12 साल पहले जब यहाँ कबाइलियों का हमला हुआ था तब मीरपुर, मुजफ्फराबाद, पुंछ बरामुल्ला के इलाके में कई लोग मारे गये। किसी के भाई, बाप, चाचा, या किसी के पति मारे गये। वे सब बेकसूर, बेगुनाह मारे गये। जब हम उस हमले को याद करते हैं, तो हमें लगता है कि किसी की किसी के साथ कोई अदावत नहीं थी। जो सियासत के पीछे पागल होते हैं, वे ही लोगों को बहकाते हैं और फिर लोगों में लड़ाई-झगड़े होते हैं।

पिछली लड़ाई में दो करोड़ लोग मारे गये थे। आपके कश्मीर की आबादी 40 लाख है, तो यही समझो कि ऐसे पाँच कश्मीर बर्बाद हो गये। यूरोप के मुल्कों के हर परिवार में कोई न कोई मरा है या जखमी हुआ है। जैसे पतंग लड़ाने वाले होते हैं, वैसे ही सियासत लड़ाने वाले लड़ाकू लोग भी होते हैं। वे लीडर, नेता कहलाते हैं और लोगों को बहकाते रहते हैं। जब तक लोग जाहिल रहेंगे और नेताओं के बहकावे में आयेंगे, तब तक दुनिया की यही हालत रहेगी। इसीलिए मैं हमेशा लोगों से कहता हूँ कि तुम पार्टी पॉलिटिक्स से अलग रहो। दुनिया में इससे बदतर कोई चीज नहीं है। ये सियासतदाँ हमेशा लड़ाने वाले, नफरत पैदा करनेवाले, फसाद फैलानेवाले होते हैं। ये एक-दूसरे की तरफ शक-सुबहे की निगाह से देखते हैं, कहीं किसी पर एतबार नहीं रखते हैं। दुनिया बेजार है इन लीडरों से !

प्यार कैदी बना

अमेरिका, रूस, हिन्दुस्तान, पाकिस्तान आदि सभी देश के लोग अपने बाल-बच्चों में रहते हैं। वे प्यार करना नहीं जानते सो नहीं, परन्तु उन्होंने प्यार को कैदी बनाकर रखा है। घर में प्यार

और बाहर दुश्मनी, शक-सुबहा, अदावत। प्यार को महदूद करने का नतीजा यह हुआ है कि प्यार की ताकत ही नहीं रह गयी है। इस समय प्यार फायदेमन्द न रहकर नुकसानदेह चीज साबित हो रहा है। पानी का बहना रुक जाय, तो पानी गन्दा हो जाता है। उसी तरह प्यार बहता रहे, तो उसमें मजा आता है, जिन्दगी रहती है। यह मेरा बाप है, यह मेरा भाई है, बेटा है और इनके सिवा बाकी सब मेरे नहीं हैं, यह अगर इसी तरह चलता रहा, तो इन्सान के दिल के टुकड़े हो जायेंगे। हमें समझना चाहिए कि जिसे इन्सान का दिल कहते हैं, वह सभी जिस्मों में है। हम सिर्फ हमारे ही जिस्म में नहीं रहते हैं, आपके भी जिस्म में रहते हैं और आप भी सिर्फ आपके ही जिस्म में नहीं रहते, हमारे जिस्म में भी रहते हैं। जिस तरह से आसमान, आलीशान मकान, झोपड़ी आदि सभी जगहों में फैला हुआ है, वैसे ही अपनी रूह सिर्फ एक ही जिस्म में नहीं, बल्कि सभी जिस्मों में है। इसलिए मेरा-तेरा छोड़ दीजिए। मैं मुझमें हूँ और आपमें भी हूँ। आप आपमें भी हैं और मुझमें भी हैं। इस तरह हम महसूस करेंगे तो हमें मालूम होगा कि यह जो सारा खेल चल रहा है, वह हममें ही चल रहा है। दुनिया में हम ही हम हैं। सारे हमारे ही मुख्तलिफ रूप हैं, हम ही हमारे सामने खड़े हैं। कुछ आइने छोटी या बड़ी परछाई बताते हैं, लेकिन हमारे चारों ओर आइने न भी हों, तो हम सब जगह अपनी परछाई देखते हैं। वैसे ही हम महसूस करें। हमें जो भी दीखते हैं, वे सब हमारे ही रूप हैं। हम आपके हैं और आप हमारे हैं। इसी को रूहानियत कहते हैं।

जब इन्सान को रूहानियत का खयाल आता है, तब उसकी जिन्दगी में आनन्द ही आनन्द, मजा ही मजा होता है। यह ऐसी बात है, जो 'इन्किलाबे-कल्ब' (हृदय- परिवर्तन) लाने वाली है, सिर्फ बाहरी इन्किलाब नहीं, दिल को तबदील करने वाला इन्किलाब लाने वाली है।

•

8. दिल जुड़ जायँ और निडर बनें

ये वृक्ष हरे-भरे क्यों?

वृक्षों को ऊपर से आसमान में धूप मिलती है, तो नीचे पाताल से पानी। इन दोनों की मदद से ये गरमी में भी हरे-भरे दीख रहे हैं। अगर ऊपर से सिर्फ धूप होती और नीचे से पानी न मिलता, तो ये सारे वृक्ष सूख जाते। अगर धूप न होती और सिर्फ पानी मिलता, तो वे सड़ जाते। इसी तरह हमारे जीवन में प्रेम और भक्ति का पानी चाहिए और बाहर से मेहनत, मशक्कत, सतत तपस्या होनी चाहिए, सेवा होनी चाहिए। चन्दन के मुआफिक शरीर पिसता जाय, तपस्या की अग्नि में जलता रहे, तो जीवन में रस आयेगा, जिन्दगी में लुत्फ आयेगा।

आज 12 मील ऊपर चढ़ना और नीचे उतरना हुआ। बड़ा आनन्द आया। डेपुटी कमिश्नर कहते थे कि "आपको हमारे जिले में बड़ी तकलीफ है।" लेकिन हमें तो इसमें बड़ा आनन्द आता है, क्योंकि ऊपर से यह ताप और अन्दर से भक्ति का झरना (पानी) बह रहा है। नहीं तो इतनी तकलीफ उठाते हुए हम सूख जाते— शरीर थक जाता। अन्दर से भक्ति के प्रेम का पानी है, इसलिए थकान नहीं आती।

मेरे प्यारे भाइयो ! मैं कश्मीर में आया तो खास अपनी ओर से कुछ करने नहीं आया। मैं चाहता हूँ कि यहाँ के भाइयों के दिलों के साथ मेरा परिचय हो। फिर अगर वे चाहें तो अन्दर दाखिल होना चाहता हूँ।

अमल करने से आवाज दुनिया में फैलेगी

"नौशेरा" का नाम तो बहुत सुना था। यहाँ के कई किस्से सारे देश में फैले हैं। एक जमाना था, जब कि इस नौशेरा में बड़े-बड़े महापुरुष घूमे हैं। यह एक ऐसा मुकाम है, जहाँ से बहुत से लोगों ने दुनिया को नीति का सन्देश दिया है।

आपने अभी बहुत ऊँची आवाज में अपना 'कौल' सुनाया— 'जय जगत्' ताकि वह पड़ोसी पाकिस्तान की हद तक पहुँचे। अगर आपने ठीक उच्चारण किया और जो बोल रहे हैं उसका अमल अपनी जिन्दगी में करेंगे तो यह आवाज सिर्फ पाकिस्तान में ही नहीं, कुल दुनिया में पहुँच जायेगी। उसे फैलाने के लिए कहीं जाना नहीं होगा। लोग यही आयेंगे और यहाँ 'जय-जगत्' की जिन्दगी देखेंगे। इसलिए हमें यह ध्यान में रखना होगा कि हम जिस शब्द का उच्चारण करते हैं, उसका अमल हमें जिन्दगी में करना है।

'जय-जगत्' का तर्जुमा नामुमकिन

आज एक पुलिस-अधिकारी 'गीता-प्रवचन' पर हस्ताक्षर लेने आये थे। पूछने लगे : 'जय जगत्' की मानी क्या है? मैंने उन्हें इसका मानी समझाया। फिर उन्होंने पूछा कि इसका उर्दू तर्जुमा क्या हो सकता है ? मैंने समझाया कि ऐसे शब्दों का तर्जुमा नहीं हो सकता। ऐसे शब्द दुनिया में ऐसे ही फैलेंगे, ऐसे ही जायेंगें 'सत्याग्रह' यह एक ऐसा शब्द है, जो मुझे अंग्रेजी, फ्रेंच और यूरोप की दूसरी भाषाओं की किताबों में देखने को मिला है। चीनी और जापानी किताबों में भी, जिनमें हिन्दुस्तान की बात हो, मैंने 'सत्याग्रह' शब्द देखा है। इसलिए इन कौलों का तर्जुमा करने की जरूरत नहीं है। इनके जो सही मानी हैं, उन्हें हम प्राप्त कर लें, तो ये शब्द भी दुनिया में ऐसे ही पहुँचेंगे। इनके अनुवाद की जरूरत नहीं। हम इसे जिन्दगी में लाते हैं या नहीं, यही देखने की बात है।

'दुश्मन नहीं, दोस्त कहिए'

'जय-जगत्' के मानी यह है कि हम किसी से डरेंगे नहीं और किसी को डरायेंगे भी नहीं। किसी से दबेंगे नहीं और किसी को दबायेंगे नहीं। हम दब्बू नहीं है। यह है निडरता। यह निडरता हममें होनी चाहिए। दूसरी बात है सब पर प्यार करना। यह भावना होनी चाहिए कि सारी दुनिया में हमारे ही रिश्तेदार हैं, हमारे ही लोग हैं। कुल दुनिया में हमारे ही दोस्त फैले हैं, दोस्तों से दुनिया

भरी है। इसमें कोई दुश्मन नहीं है— 'ना कोई बैरी नाहिं बिगाना।' यहाँ बोलने का एक रिवाज है, कहते हैंः "यहाँ इस पहाड़ी पर हमारी फौज खड़ी है और उस बाजू दुश्मन है।" उधर भी इसी तरह बोलने का रिवाज होगा। लेकिन हमें यह सोचना चाहिए कि हम किसी के दुश्मन नहीं, सब हमारे दोस्त हैं। हम ऐसी जिन्दगी बसर करें कि हमें किसी का डर न हो और न हम किसी को डरायें ही। आज यहाँ फौज खड़ी है और बच्चे खेल रहे हैं, किसी चीज का डर, खौफ नहीं है। लेकिन किसके बल पर? तो फौज के ही बल पर। लेकिन अगर कहीं यहाँ से फौज हट जाय या हार जाय तो ? खतम !

शस्त्र पर आधारित सच्ची बहादुरी नहीं

पलासी की लड़ाई में एक बाजू क्लाइव लड़ रहा था और दूसरी बाजू नवाब था। दोनों सेनाओं के बीच का फासला बहुत कम था याने दो फर्लांग भी नहीं था। दो-तीन घण्टे में वह लड़ाई खत्म हुई। नवाब की फौज हारी। उसकी फौज से बहुत सारे भाग निकले और थोड़े कट मरे। क्लाइव की फतह हुई कुल बंगाल पर अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया और देखते-देखते सारा भारत अंग्रेजों के हाथ में आ गया।

जर्मन लोगों ने लाखों की तादाद में दूसरे मुल्क पर हमला किया और तीन-चार दिनों में उन पर कब्जा कर लिया। यह बहादुरी आपने सुन ली। अब उनकी बुजदिली भी सुन लीजिए। जब अमेरिका की सेना फ्रान्स के किनारे उतरी, तो जर्मनी ने देखा कि अमेरिका के पास बीसगुना ज्यादा हवाई जहाज और ज्यादा शस्त्रास्त्र हैं। यह सब लेकर अमेरिकी सेना फ्रान्स के किनारे उतरी है। तब जर्मनी ने समझ लिया कि अब अपनी कुछ न चलेगी। तुरन्त तीन लाख जर्मन सेना ने शस्त्र नीचे रख दिये और शरण आये। याने बहादुरों की बुजदिली जाहिर हुई। जो शख्स हमलावर थे, बुजदिल बने। इस तरह सारे देश के नसीब के फैसले चन्द घण्टों में, किसी एक मैदान पर, चन्द लोग करें, यह कैसी बात है? इसी के कारण लोग डरपोक बनते हैं, बुजदिल बनते हैं। जो शस्त्र पर आधार रखती है वह सच्ची बहादुरी नहीं है।

बहादुरी शस्त्रों पर निर्भर नहीं

सच्ची बहादुरी कौन-सी है, यह हमें देखना चाहिए। डरकर भागनेवाले पर ही शेर हमला करता है और उसका मुकाबला करता है। मनुष्य की आँखों में वह देख लेता है। वहाँ उसे जरा भी डर नजर आया, तो वह एकदम हमला करता है। आँखों में गुस्सा देखता है, तो भी हमला करता है। लेकिन जब वह ऐसी आँखों में देखता है, जिनमें न तो गुस्सा है और न डर, बल्कि बिलकुल शान्ति है, तो वह हमला नहीं करता। ऐसे तजुरबे शिकार करने वाले को आते हैं। शेर को आँखों की पहचान होती है। उनमें क्या चीज भरी है, बहादुरी है या बुजदिली, यह वह देख लेता है। इसलिए हमें सचमुच अन्दर से बहादुर बनना चाहिए। जो शख्स शस्त्र के आधार पर बहादुर होता है, उसकी बहादुरी तब खत्म हो जाती है, जब कि वह अपने सामने ज्यादा मजबूत शस्त्र देखता है। बिल्ली चूहे के सामने शेर बनती है। चूहा उसके सामने काँपता है, भाग जाता है। लेकिन जब बिल्ली के सामने कुत्ता आता है, तब वह डरपोक बन जाती है। क्या यह सच्ची बहादुरी है? चूहा तो छोटा-सा जानवर है, इसलिए उसके सामने वह शेर बनती है।

हमें किसी को न डराना चाहिए और न किसी से डरना ही चाहिए। हम इधर किसी को डराते हैं तो किसी से डरते भी हैं। हमें समझना चाहिए जो किसी को दबाता है, वह दूसरे किसी से दबता भी है। सबके साथ मैत्रीभाव में रहना चाहिए। मैत्री-भाव रहेगा तो दिल से दिल जुड़ेगा।

सच्ची बहादुरी कब ?

जो समझेगा कि यह शरीर एक चोला है और इसे कोई मारेगा, तो परवाह नहीं, वही सच्चा बहादुर होगा। ऐसी हिम्मत देश में कब आयेगी? जब हम सबको अपना दोस्त समझेंगे, किसी को भी दुश्मन नहीं समझेंगे। सब पर प्यार करेंगे। एक का सुख सबका सुख हो, एक का दुख सबका दुख हो। जब ऐसा समाज बनेगा और वह अन्दर से निर्भयता महसूस करेगा, शरीर को एक चोला समझेगा, तभी देश महफूज होगा। नहीं तो देश महफूज नहीं होगा।

मैं यह चाहता हूँ कि यहाँ सब दिल जुड़ जायँ। दूसरी बात, जनता निडर, निर्भय बने और अन्दर शान्ति, हिम्मत इतमीनान महसूस करे। दिल का इत्तिफाक हो— सब दिल एक हो जायँ और डर न रहे, ये दो चीजें जम्मू और कश्मीर में मैं कर सकूँ, तो यहाँ की सारी तकलीफों की भरपाई मान लूँगा।

सीज फायर लाइन के मानी

आज दुनिया में हर कोई अपनी-अपनी अलग-अलग मिल्कियत रखता है। जाती तौर पर ही नहीं, बल्कि मुल्क भी अपनी-अपनी मिल्कियत मानते हैं। एक मुल्क से दूसरे मुल्क में जाना हो, तो पासपोर्ट और वीजा की जरूरत पड़ती है। मेरी निगाह में यह निकम्मी बात है। भगवान् ने दुनिया सबके लिए बनायी है। जापान जापानियों का, हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियों का, यह सब बातें पुरानी हो गयी हैं। जब तक हम यह नहीं मानते हैं कि सारे मुल्क दुनिया के हैं, तब तक झगड़े कायम ही रहेंगे। फिर चाहे कभी वह जाति के झगड़ों का रूप लेंगे, तो कभी वर्गों के झगड़ों का। यहाँ पर Cease Fire Line के इस तरफ हिन्दुस्तान की फौज खड़ी है, तो उधर पाकिस्तान की उतनी ही फौज खड़ी है। Cease Fire Line के मानी है Keep ready for Fire Line. जिस क्षण हुक्म होगा, उस क्षण गोली चलाने के लिए तैयार रहो। इस तरह छोटे-छोटे दिल बनाकर हम एक-दूसरे का डर खरीदते हैं।

डरखाते नहीं, प्रेमखाते खर्च हो

दुनिया में जिनता डर है, उतना पहले कभी नहीं था। बड़े मुल्क भी डरते हैं और छोटे भी। एक-दूसरे के डर से रूस और अमेरिका फौज पर बड़ा भारी खर्च कर रहे हैं। हिन्दुस्तान भी पाकिस्तान के डर से फौज रखता है और पाकिस्तान कहता है कि पता नहीं, हिन्दुस्तान की नीयत कैसी है, कहीं वह हमला कर दे, तब हम क्या करेंगे? इसलिए हमें तैयार रहना पड़ता है। हमें समझना चाहिए कि यह इन्सानियत नहीं है। हमारी समझ में नहीं आता है कि क्या वजह है कि

पाकिस्तान के लोग खुलेआम इधर नहीं आ सकते और इधर के उधर नहीं जा सकते। मैं यह नहीं कहना चाहता हूँ कि यह खयाली डर है। इसका भी एक सबब है, लेकिन उस सबब को हमें उखाड़ना होगा। आज हम करीब तीन सौ करोड़ रुपया हर साल लश्कर पर खर्च कर रहे हैं और पाकिस्तान सौ करोड़। दोनों का मिलाकर चार सौ करोड़ रुपया खर्च हो रहा है। डरखाते जो खर्च होता है वही प्रेमखाते क्यों नहीं हो सकता है?

हमलावर के साथ असहयोग

लेकिन यह मामला यही पर रुका हुआ है कि इसकी शुरुआत कौन करे। एक-दूसरे पर एतबार हो, तो यह कदम उठाने की हिम्मत होगी। एतबार के लिए हिम्मत भी चाहिए और हिकमत भी। समझना चाहिए कि जो शख्स फौज के भरोसे हिम्मत करता है, बहादुरी दिखाता है, उसकी बहादुरी निकम्मी है। हर नागरिक में यह हिम्मत होनी चाहिए कि कितना भी बड़ा मसला खड़ा हो, तो भी हम उसका मुकाबला अहिंसा से करेंगे। कोई मारने आयेगा, तो उसके साथ सहयोग नहीं करेंगे। एक दिन तो हमें मरना ही है, इसलिए हम मरेंगे, लेकिन न उसे मारेंगे, न उसके साथ सहयोग करेंगे। लोग कहते हैं कि यह नामुमकिन है। इन्सान इतना ऊँचा नहीं उठ सकता है। इस पर मैं कहता हूँ कि जिस जमाने में कुत्ता भी आसमान में चला गया, जो पहले कभी किसी ने मुमकिन नहीं माना था, उस जमाने में क्या इन्सान इतना नहीं कर सकेगा? हमें समाज को यह बहादुरी की तालीम देनी होगी। इसके लिए बहुत जरूरी है कि जमीन की मिल्कियत मिटाकर गाँव का एक कुनबा बनाया जाय।

तीन बातें

हमें समझना चाहिए कि जब तक हम तीन बाते नहीं करते हैं— बैनुल-अकवामी मैदान में एक-दूसरे पर एतबार और प्यार करने की तैयारी, गाँव का कुनबा बनाना और हमलावर से न सहयोग करना, न उसे मारना— तब तक दुनिया के दुख नहीं मिटेंगे। इसकी तालीम समाज को

देनी होगी। हमारी तहरीक इसी के लिए चल रही है। वह सिर्फ जमीन का मसला हल करने के लिए नहीं चल रही है।

विज्ञान के जमाने में इन्सान के सामने दो ही रास्ते हैं— मिट जाओ, फना हो जाओ या एक हो जाओ। भूदान तहरीक यही कहती है, इसीलिए दुनिया भर के लोग इस काम को देखने आते हैं। चारों ओर जब आग हो, वहाँ ठंडक पहुँचाने की चीज दिल खींच लेती है। हम चाहते हैं कश्मीर से दुनिया को प्रकाश मिले, किरणें मिलें।

•

9. सियासत से कश्मीर की ताकत टूटेगी

मुझसे यहाँ सभी सियासी जमातवाले मिलते हैं। आज मुझसे 'नेशनल कॉन्फरेन्सवाले' और 'महाज रायशुमारी' ('प्लेबिसाइट' फ्रण्ट) वाले मिले थे। उन्होंने मुझसे बहुत प्यार से बातें कीं।

रायशुमारीवालों ने मेरी बात मान ली

रायशुमारीवालों ने दिल खोलकर बातें कीं। मुझे इसकी बहुत खुशी है कि वे महसूस करते हैं कि इस शख्स के सामने दिल खोलने में जरा भी खतरा नहीं। यह शख्स हमारा दोस्त है। इसके साथ हम दोस्ताना ढंग से बातें कर सकते हैं, यह हमें सही सलाह देगा।"

मैंने उनसे कहा कि साइन्स के जमाने में कौमें, मुल्क नजदीक आ रहे हैं और एक-दूसरे को एक-दूसरे के बारे में दिलचस्पी पैदा हो रही है। इस हालत में मसले सियासत से हल नहीं होंगे, रूहानियत से ही हल होंगे। उन्होंने मेरी इस बात को तसलीम किया। मैंने उनसे कहा कि सियासी मसलों को छोड़ दो और गाँव को एक बनाने में, गाँव की एक स्टेट बनाने के काम में लगो। आखिरी सूरत— जो बहुत दूर की नहीं, बल्कि नजदीक की ही है— में इधर गाँव की स्टेट, ग्राम-स्वराज्य रहेगा, जो बुनियाद होगी और उधर दुनिया की स्टेट होगी। इसीलिए हम 'जय जगत्' कहते हैं। बाकी सूबे, मुल्क वगैरह जो बीच की कड़ियाँ होंगी, वे ग्राम-स्वराज्य और दुनिया की हुकूमत को जोड़नेवाली कड़ियाँ होंगी। सारी इक्तसादी और असली ताकत गाँव की हुकूमत के हाथ में रहेगी और अखलाकी ताकत दुनिया के मरकज में रहेगी। अगर हम ऐसा नहीं करते, तो दुनिया का खत्मा होनेवाला है। अब या तो दुनिया प्यार से एक बननेवाली है, जिसकी बुनियाद ग्रामराज्य होगा और शिखर दुनिया का मरकज होगा या दुनिया मिटने वाली है। यह हम ध्यान में नहीं लेंगे, छोटी-छोटी सियासत ही मन में रखेंगे, तो समझना चाहिए कि इस जमाने में हम बिलकुल गये-बीते, पुराने जमाने के लोग साबित होंगे।

यही बात मैं सबको दिल खोलकर सुनाता हूँ और यही बात मैंने आज रायशुमारीवालों से कही। अभी तक ऐसा कोई शख्स यहाँ नहीं आया था, जो 'हार्ट टू हार्ट टॉक' (दिल खोलकर बातें) करता हो, धीरज से समझाता हो, सब कुछ सुनता हो। रायशुमारीवालों ने भी यही महसूस किया। उनका प्यार देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई। हर सोचनेवाला इस बात को समझता है कि हम दिल के साथ दिल जोड़ने की बात करते हैं, तभी दुनिया टिक सकती है। यह रूहानियत से ही होगा, सियासत से नहीं।

हमें दो काम करने हैं

हमें दो काम करने हैं : 1. रूहानियत से मसले हल करने की तरकीब ढूँढ़नी है और दुनिया का रूहानी इन्तजाम करना है, जिसमें इधर गाँव की स्टेट और उधर दुनिया की स्टेट हो और बाकी सब बीच की जोड़नेवाली कड़ियाँ हो जायें। 2. इक्तसादी (आर्थिक) हालत के बारे में अलग-अलग जमात या कौम के लिए नहीं सोचना चाहिए। किन्तु कुल जमात के बारे में, गाँव के बारे में सोचना चाहिए। इसलिए मैं शरणार्थी, हरिजन वगैरह लोगों से कहता हूँ कि तुम यह मत सोचो कि हम शरणार्थी हैं या हरिजन, बल्कि यह समझो कि हम सब एक हैं। जैसे गुरुनानक ने कहा था : 'आयी पंथी सकल जमाती' कुल दुनिया में हमारी एक ही जमात है, वैसे ही बरतना सीखो और छोटे-छोटे मुतालबे, छोटे-छोटे खयाल छोड़ दो।

सियासत के जूते बाहर रखें

मुझे यह कहने में बड़ा दुख होता है कि पंजाब के सिखों की ताकत टूट रही है। गुरुद्वारे की भी स्टेट बन गयी है और उसे हथियाने की कोशिश चल रही है। जम्हूरियत का एक ढकोसला, ढोंग चल रहा है, जिसकी वजह से गुरुद्वारे में भी चुनाव होंगे और उससे फैसले होंगे! उसमें अकलियत अकसरियत की बात ला रहे हैं। प्यारे भाइयों, क्या कभी धर्म में भी चुनाव हुए हैं? क्या गुरु नानक को मेजॉरिटी ने चुना था? सिख-विचार जिसके दिमाग को सूझा, क्या उसे 51 प्रतिशत

लोगों ने वोट दिया था और 49 उसके मुख्तलिफ गये थे? ये सियासी पचड़े, सियासत में ही तकलीफ दे रहे हैं, इसलिए मैं उन्हें वहाँ से हटाने की बात कर रहा हूँ। क्या वे धर्म में भी आने चाहिए? मैंने सिख भाइयों से कहा है कि आप गुरुद्वारा में जाते हैं, तो जूते बाहर रखकर जाते हैं। वैसे ही गुरुद्वारे में जाते समय सियासत के जूते बाहर छोड़कर जाइए । लेकिन आज तो सब लोग सियासी जूते लेकर ही गुरुद्वारे में जा रहे हैं। तोबा ! तोबा !! भगवान् इन लीडरों से दुनिया को बचाये ! दुनियाभर के सियासी लीडरों की एक जमात बन रही है, जो दुनिया को बिलकुल गुमराह कर रही है। अभी पंजाब में जो चल रहा है, उससे मेरे दिल को बहुत दुख होता है। वह धर्म को ऊँचा ले जाने का रास्ता नहीं, बल्कि नीचे गिराने का रास्ता है। अब तो हमें यह करना चाहिए कि सब जमातें इकट्ठा बैठकर भगवान् की इबादत करें। मगर आज सिखों में ही दो टुकड़े हो रहे हैं और गुरुद्वारे तक में कत्ल होता है, यह सब क्या है?

सिखों की ताकत टूट रही है

आखिर सिखों ने जो धर्म बनाया था, वह किसलिए बनाया था? हिन्दू और मुसलमानों के झगड़े होते थे। मूर्तिपूजा करनी चाहिए या नहीं, इस पर झगड़े चलते थे। उस वक्त नानक ने सबको बचानेवाली एक मजबूत जमात खड़ी की। आज वह टूट रही है। राजनीति के झगड़े धर्म में नहीं आने चाहिए। जिस धर्म में अल्पमत-बहुमत के झगड़े हों, वह धर्म नहीं टिकेगा। सिखों के गुरुग्रन्थ में ही कहा है, "**पंच परवाण पंच प्रधान। पंचों का गुरु एक धियान**" पांचों का ध्यान जब एक होगा तभी फैसला होगा, तभी काम होगा और तभी धर्म मजबूत बनेगा।

मैंने एक दफा विनोद में एक कहानी बतायी थी। एक स्कूल में मास्टर ने लड़कों को गणित का हिसाब करने को दिया। एक लड़के का जवाब ठीक हुआ, लेकिन 25 लड़कों का जवाब गलत निकला। क्लास में एक मजाक करनेवाला लड़का था। वह उठकर खड़ा हुआ और बोला : "सर, क्या एक की बात सही और बाकी 25 लड़कों की बात गलत हो सकती है?" अकलियत और अकसरियत में यही होता है। धर्म के झगड़ों में सियासत लायी जायेगी, तो लोगों के दिमाग

ज्यादा उलझेंगे, सुलझेंगे नहीं। मेरे प्यारे भाइयो, यह सियासत जहाँ भी पैठेगी, फूट पैदा करेगी। हमें एक-दूसरे पर भरोसा, विश्वास रखना होगा। साइन्स के जमाने में यह सियासत नहीं टिकेगी। इसलिए हम कहते हैं कि राजनीति के बदले अब लोकनीति आनी चाहिए।

सियासत मरने की तैयारी में

इस साइन्स के जमाने में 'मेरी-मेरी' मत कहो, 'हमारी' कहो। जो 'मेरी-मेरी' कहेगा, उसकी ताकत टूटेगी 'हमारी' कहनेवाले की ताकत बढ़ेगी। रूहानियत पुराने जमाने से ही यह कह रही है कि 'मेरी-मेरी' छोड़ो और 'हमारी' कहो। अब साइन्स भी वही बात कह रहा है। जहाँ रूहानियत और साइन्स दोनों एक होकर यह बात कह रहे हैं, वहाँ 'मेरी-मेरी' कहनेवाला शख्स कैसे टिकेगा? कोई भी शख्स बहाव के खिलाफ तैरकर कहाँ जा सकेगा? दो-चार हाथ तैरेगा, लेकिन फिर डूब जायेगा। इसलिए समझना चाहिए कि अब जमाना सियासत का नहीं, बल्कि रूहानियत और साइन्स का मिला-जुला जमाना है। रूहानियत की साइन्स के साथ कोई मुखालिफत नहीं है। जैसे मोटर में दो किस्म की मशीनें होती हैं, एक दिशा दिखानेवाली और दूसरी रफ्तार बढ़ानेवाली, वैसे ही अपनी जिन्दगी में भी दो तरकीबों की जरूरत है। दिशा दिखाने का काम रूहानियत करेगी और रफ्तार बढ़ाने का काम साइन्स करेगा।

विज्ञान-युग में लोक-शक्ति का महत्त्व

लोकशक्ति और राजशक्ति, ये दो शक्तियाँ पहले से काम करती आयी हैं। लेकिन अब विज्ञान का जमाना आया है, इसमें लोकशक्ति जोर करेगी और राजशक्ति कमजोर होगी। यह बात जिनके ध्यान में नहीं आयी, वे आज भी राजशक्ति के पीछे पड़े हैं।

अब सियासत के हाथ में कुछ भी शक्ति नहीं रहेगी। यह सियासत मरने की तैयारी में है। इस समय यह मरते-मरते छटपटा रही है। हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, तिब्बत, कोरिया, बर्मा, इराक, मिस्र आदि जगह जो उलझनें पैदा हो रही हैं, वह सब सियासत की आखिरी छटपटाहट है।

सियासत मरनेवाली है, इसीलिए ये सब उलझनें जारी हैं। अब जो कोई सियासत टिकाये रखने की कोशिश करेगा, वह भी उसके साथ ही मरनेवाला है।

दुनिया में डर छाया हुआ है

आज कुछ भाई मेरे पास आये थे, जिन्होंने कुछ सियासी मसले मेरे सामने रखे। मैं कहना चाहता हूँ कि दुनिया में ऐसा एक भी देश नहीं है, जहाँ पर सियासी मसले नहीं हैं। वैसे होना तो यह चाहिए कि अमेरिका में सियासी मसले न हों, क्योंकि दुनिया की आधी दौलत वहाँ पर है, वहाँ की जमीन जरखेज है, सिर्फ 400 साल से जोती हुई है। वहाँ साइन्स प्रगति कर चुका है। वहाँ किसी चीज की कमी नहीं है। तिस पर भी वहाँ पर डर छाया हुआ है। फौज पर अरबों रुपयों का खरचा किया जा रहा है। नये-नये हथियार ईजाद हो रहे हैं। आज दुनिया में जिधर देखो, उधर डर छाया हुआ है। हर किसी की छाती में धड़कन है। रूस अमेरिका से डरता है और अमेरिका रूस से डरता है। दोनों देशों में हमारे जैसे ही दो हाथ, दो पैर वाले जानवर रहते हैं, जिनको दिल भी हासिल है। दोनों देशों के लोग अपने बाल-बच्चों में रहते हैं, उन पर प्यार करते हैं। लेकिन रूस के प्यार करने वालों से अमेरिका वाले डरते हैं और अमेरिका के प्यार करनेवाले लोगों से रूस वाले डरते हैं। अब तो रूस के पास ऐसे हथियार हैं कि वे घर बैठे-बैठे कहीं भी फेंके जा सकते हैं। अमेरिका के नागरिक शिकायत करते हैं कि अमेरिका उस मामले में पिछड़ रहा है। लेकिन वहाँ का एक नामानिगार (संवाददाता) लिखता है कि घबड़ाने की जरूरत नहीं है। रूसवाले आई.सी.बी.एम. से जो काम कर सकते हैं, वहीं काम अमेरिका दूसरे हथियारों से कर सकता है।

कहा जाता है कि अमेरिका का एक अड्डा पेशावर में बन रहा है। यह समझ लीजिए कि पाकिस्तान भी अमेरिका का बन्दा, चेला बन गया है। वह अमेरिका के कब्जे में है, इसमें किसी को शुबहा नहीं होना चाहिए। जो कौम फौज की ताकत पर भरोसा रखेगी, उसे या तो रूस की या अमेरिका की कदमबोसी करनी पड़ेगी। वैसे अमेरिका जैसे बड़े देश भी डरते हैं और हिन्दुस्तान, पाकिस्तान जैसे छोटे देश भी डरते हैं।

इस तरह सारी दुनिया में जो डर छाया हुआ है, वह तब तक नहीं मिटेगा, जब तक हमारे दिमाग सियासत में उलझे हुए रहेंगे। इसलिए सियासतदाँ से मैं कहना चाहता हूँ कि साइन्स के जमाने में सियासत गयी— बीती चीज हो गयी है। अब आपको ऐसी ताकत, प्यार की ताकत ढूँढ़नी होगी, जिससे दिल के साथ दिल जोड़ सकें। जिनके दिल जुड़े हुए हों उन पर कोई हमला नहीं कर सकता है।

एटम बम के सामने छुरी किस काम की ?

हम लोगों के पास रूस और अमेरिका के जैसे हथियार तो नहीं हैं, लेकिन हम कहते हैं कि हम एक छुरी रखेंगे। अब वह छुरी किस काम में आयेगी? अपने ही भाई के पेट में भोंकने के काम में आयेगी। रूस और अमेरिका के खिलाफ तो आपकी कुछ नही चलेगी। यह मत समझिए कि इस जमाने में कोई मुल्क यहाँ आकर आप पर हुकूमत चलायेगा। दूसरे देशों में जाकर हुकूमत चलाने की बात अब नहीं चल सकती है। अंग्रेजों की सल्तनत यहाँ मुश्किल से डेढ़ सौ साल चली। एक देश का दूसरे देश पर कब्जा चले, यह बात साइन्स के खिलाफ है। क्योंकि उससे 'वर्ल्डवार' का डर रहता है। इसलिए किसी देश का दूसरे देश पर हुकूमत चलाना, वहाँ का कारोबार अपने हाथ में लेना, यह अब बनेगा नहीं और जरूरी भी नहीं है। अब 'स्फियर ऑफ इन्फ्लुएन्स' वजन के मैदान की बात चलती है। रूस और अमेरिका ने अपने-अपने वजन के मैदान बना रखे हैं। चीन भी उसकी तैयारी कर रहा है और दूसरे देश भी चाहते हैं कि हमारा कहीं वजन हो।

सियासत को तोड़ने का काम करें

ऐसी हालत में आप अपने छोटे दिमाग से सियासत चलाना चाहेंगे और इस छोटे-से कश्मीर के 4 टुकड़े करेंगे, तो आपकी ताकत नहीं बनेगी, बल्कि ताकत टूट जायेगी। आज एक सियासी जमात के भाइयों ने हमसे पूछा कि फिर हमें क्या करना चाहिए? मैंने कहा, सियासत

को जोड़ने का काम करना चाहिए। गाँव-गाँव के लोग अपने गाँव का एक कुनबा बनायें। गाँव में स्वराज्य कायम करें। अपना मन्सूबा गाँववाले खुद बनायें। देहात का मन्सूबा देहली न बनाये, बल्कि देहात बनायें। देहली उसमें कुछ मदद दे। यह सब हमें करना होगा। गाँव में फूट डालने से ताकत नहीं बनेगी। लेकिन आप गाँव को एक बनाने का काम करेंगे, तो कश्मीर की, हिन्दुस्तान की और दुनिया की भी ताकत बढ़ेगी। यह नहीं करेंगे, तो उन चन्द लोगों के हाथ में ही दुनिया की हुकूमत रहेगी, जिनके हाथ में एटॉमिक वेपन्स होंगे। लेनिन ने कहा था कि हमने 'मासेस' के 'इन्टरेस्ट' (जनता के हित) में हथियार उठाये हैं। मालदार लोगों को, 'वेस्टेड इन्टरेस्ट' (निहित स्वार्थ) को हम इन हथियारों से खत्म करेंगे और फिर उसके बाद यह हथियार अवाम के हाथ में आयेंगे। लेकिन आज रशिया में क्या चल रहा है? वहाँ पर हथियार आज भी चन्द लोगों के हाथ में ही है, अवाम के हाथ में नहीं है। अवाम उन हथियारों का इस्तेमाल ही नहीं कर सकती है। इसलिए अगर आज की हालत कायम रही, तो जिनके हाथ में एटॉमिक वेपन्स हैं, उन्हीं की हुकूमत चलेगी, फिर चाहे जम्हूरियत हो या सोशलिज्म हो या कम्युनिज्म हो। इसलिए छोटी सियासत के विचार छोड़ दीजिए।

.

10. आगे का जमाना रूहानियत का

मेरी सिफत

आज यहाँ कुछ सियासी पार्टी के लोगों से हमारी बातचीत हुई। मैंने उनसे कहा कि यह विज्ञान का जमाना है। इस जमाने में अब सियासत में कोई ताकत नहीं रह गयी है। इन्सान के हाथों में नये-नये हथियार आ गये हैं। इसलिए अगर फूट और तफ़रके बढ़ानेवाली सियासत बढ़ेगी तो इन्सान का खातमा होनेवाला है। पार्टीवाले यह बात महसूस नहीं करते, यह उनकी जहालत है। असली बात तो यह है कि आज नये-नये हथियारों की ईजाद हो रही है और वे हथियार ऐसे खतरनाक हैं कि अगर हमारे तफ़रके बढ़े, तो उनकी बदौलत एक दिन दुनिया का खातमा होने की नौबत भी आ सकती है। इसलिए समझदार लोगों को चाहिए कि वे सियासत से दूर रहें, सियासत को दूर करें और रूहानियत से अपने मसले हल करें। मिली-जुली सियासत, जोड़नेवाली सियासत चाहिए। आज तक जो सियासत रही, वह जोड़नेवाली नहीं, तोड़नेवाली ही रही। इसलिए मैं 'सियासत यह लफ्ज ही छोड़ देना चाहता हूँ।

जब तक आप रूहानियत का रास्ता न लेकर सियासत का ही रास्ता लेंगे, तब तक आपके मसले हल होनेवाले नहीं हैं। अल्जीरिया, कोरिया, तिब्बत, ताईवान, हिन्दएशिया, कश्मीर— ऐसे कई मसले हैं! पुराने मसले कायम हैं और नये-नये पैदा हो रहे हैं। इसलिए यह समझ लीजिए कि सियासत से आपके मसले हल होनेवाले नहीं हैं।

यह बात मैं लगातार सुनाता ही जा रहा हूँ। उसका नाप-तौल नतीजे से नहीं होता। नतीजा परमात्मा पर छोड़ देता हूँ। यह मेरी सिफत है। इसके अलावा एक और बात है, वह यह कि जमाना मेरे साथ है। यहाँ जितने सियासतदाँ बैठे हैं, वे सब नादाँ

हैं, क्योंकि आने वाला जमाना मेरा है, उनका नहीं। यह मैं आपको समझाना चाहता हूँ।

फौज के हाथ में सियासत रहेगी

मॉडर्न मेकनाइज्ड आर्मी (आधुनिक शस्त्रास्त्रसम्पन्न सेना) जिनके हाथ में रहेगी, कुल सियासत उन्हीं के हाथ में जायेगी या उनके सामने वह खत्म भी हो सकती है। जाहिर है कि इसके आगे जिनके हाथ में सेना की ताकत रहेगी, उन्हीं के हाथों में सियासतदाँ भी रहेंगे। इससे उलटे जो लोग रूहानियत की राह पर चलेंगे, वे उनकी तलवार छीन लेंगे। उनकी तलवार छीनने के लिए इनको अपने हाथ में तलवार उठाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। जिनके हाथों में आज तलवार है, उनके दिल और दिमाग में यह रूहानियत की राह पर चलनेवाले लोग बैठेंगे। नतीजा यह होगा कि जिन्होंने अपने हाथों में तलवार उठायी है, वे खुद ब खुद उन तलवारों को हल बनाने के लिए कारखानों में भेज देंगे।

सियासतदाँ पतझड़-से गिरेंगे

अभी मैं 'आर्मी' वालों के सामने बोलकर आया हूँ। मेरी यह खुशकिस्मती है कि मुझे उनके सामने बोलने का मौका मिला। इसका कारण यह है कि मैं सियासत से अलग हूँ। मैं अपने विचार कहीं भी जाकर समझा सकता हूँ। वैसे ही वहाँ भी मैंने अपनी रूहानियत के विचार उनके सामने रखे। रूहानियत की बात उनको भी जँचती है। मैं मायूस नहीं होता हूँ। इसलिए कि मैं जानता हूँ कि आनेवाला जमाना मेरा है, आपका नहीं है, नेताओं का नहीं है।

आपके जो सियासी पार्टियों के बड़े-बड़े नेता हैं, वे ऐसे गिरनेवाले हैं, जैसे पतझड़ ! ओले गिरते हैं या बरफ पड़ती है, तब एकदम पतझड़ होती है, वैसे ही ये आपके सब लीडरान एकदम गिरनेवाले हैं, उनका एक ढेर होनेवाला है। लेकिन आज तो इसका भान उन्हें नहीं है। वे गुरूर में हैं। हुकूमत का डण्डा उनके हाथ में है। वे डण्डा उठाते हैं, इसकी मुझे कोई तकलीफ नहीं है। मैं तो उनके पास जाता हूँ, अपनी बातें सुनाता हूँ और वे मेरी बातें सुनते हैं। आपके बड़े-बड़े नेता भी मेरी बात सुनते हैं। मेरी बात उनको जँचती भी है, लेकिन वे उसे अमल में नहीं ला सकते। इसलिए

नहीं कि वे उन्हें नहीं चाहते, बल्कि इसलिए कि वे एक बहाव में बहे जा रहे हैं। इस बहाव से बाहर निकलना उनके आपे के बाहर की बात है। ये घोड़े पर बैठे हैं, लेकिन लगाम उनके हाथ में नहीं है। सारा दारोमदार वोटरों के हाथ में है।

विज्ञान के जमाने में रूहानियत जरूरी

आज इन सियासतदाँ का बड़ा जोर है। लेकिन आप देखेंगे कि एक वक्त ऐसा आयेगा, जब जिन हाथों ने एटम बम बनाया, वे ही हाथ उन बमों को तोड़ेंगे और लोगों की खिदमत में लगेंगे। जितने लोग सियासत से अलग रहकर रूहानियत का आसरा लेंगे, पनाह लेंगे, वे ही लोग साइन्स के जामने में टिकेंगे। साइन्स के जमाने में रूहानियत मार्गदर्शन देगी और साइन्स रफ्तार बढ़ायेगा। मोटर में एक यन्त्र राह दिखाने वाला होता है और दूसरा यन्त्र रफ्तार बढ़ानेवाला। साइन्स आपकी जिन्दगी की रफ्तार बढ़ायेगा और रूहानियत जिन्दगी की दिशा दिखायेगी। इस तरह दोनों की ही मदद से आपकी जिन्दगी चलेगी। अगर सियासत बीच में आयेगी और जिन्दगी में दखल देगी, तो आपकी मोटर गड्ढे में जायेगी। मैं आपके सामने दो समीकरण रखता हूँ:-

सियासत + विज्ञान = सर्वनाश

रूहानियत + विज्ञान = बहिश्त

रूहानियत और विज्ञान एक हो जायँ, तो दुनिया में बहिश्त (स्वर्ग) आयेगा, यह आप खूब समझ लीजिए। साइन्स का फायदा उठाना है, उससे काम लेना है, तो उसके साथ रूहानियत को जोड़ना होगा और अगर उसका फायदा न उठाना हो, उसकी बदौलत मर मिटना हो, तो बीच में सियासत लानी चाहिए।

अवाम को तबाह करनेवाले चुनाव

इन्सान नाहक खत्म होना नहीं चाहता। पर होता क्या है? चुनाव आता है, तब एक पार्टी के लोग अवाम से कहते हैं कि तुम हमें चुनकर दो, तो हम तुम्हें जन्नत में ले जायेंगे। दूसरी पार्टी

को चुनकर दोगे, तो वह तुम्हें जहन्नुम में ले जायेगी। ठीक इसी तरह दूसरी पार्टीवाले भी अवाम से बोलते हैं। याने अवाम के सामने एक-दूसरे को गाली देना, नुक्ताचीनी करना ही उनका प्रोग्राम रहता है। फिर आपस में टकराते हैं। मेरा राज चला, तो वे मुझसे टकराते हैं, उनका राज चले, तो मैं उनसे टकराता हूँ। इस तरह होता है, तब बीच में अवाम तबाह हो जाती है। फिर आपके देखते-देखते मिलिटरी का राज आ जाता है।

पार्टी का राज यानी चन्द लोगों का राज

जैसे फौज का राज होता है वैसे ही मान लीजिए, एक पार्टी भी चुनकर आये, तो उसी पार्टी का यानी उसके चन्द लोगों के हाथ में ही राज रहेगा। कहीं कांग्रेस चुनकर आयी, तो कहीं कम्युनिस्ट चुनकर आये । 40 की 'मेजॉरिटी' से चुनी हुई पार्टी रहती है। कोई बिल आनेवाला हो, तो पार्लियामेण्ट में आने के पहले पार्टी मीटिंग बुलाती है और उसमें उसे 19 विरुद्ध 21 के बहुमत से पास किया जाता है। बिल पार्लियामेण्ट में आने पर 19 लोग उसके खिलाफ वहाँ नहीं बोल सकते हैं। कारण पार्टी का अनुशासन होता है, ह्विप (सचेतक) होता है। पार्टी की जो राय होती है, उसके खिलाफ नहीं बोल सकते। याने पहले 40 प्रतिशत का राज था, अब 21 प्रतिशत का है। उन 21 प्रतिशतवालों में भी तीन-चार लोग ऐसे होते हैं, जो वह बिल लाने में प्रमुख होते हैं। उनकी राय से ही सब बातें चलती हैं। अगर उनकी कोई न माने, तो वे धमकाते हैं। मतलब यह कि आखिर सारा दारोमदार दो-चार मुख्य लोगों पर ही रहता है।

हुकूमतपरस्त सियासतदाँ

आप यह निश्चित समझ लीजिए कि जब तक आप पर कोई न कोई सियासी पार्टी हुकूमत चलाती रहेगी, तब तक गाँव की ताकत मजबूत नहीं बन सकेगी। पार्टीवाली जम्हूरियत रहेगी, तब तक दिलों के टुकड़े होते रहेंगे। इसकी वजह यह है कि जहाँ पार्टी पॉलिटिक्स चलती है, वहाँ एक पार्टी के हाथ में हुकूमत आती है और दूसरी पार्टी के हाथ में हुकूमत नहीं होती। दूसरी पार्टी

पहली पार्टी के साथ झगड़ती रहती है, वह भी हुकूमत अपने हाथों में लेना चाहती है। दोनों पार्टियाँ हुकूमतपरस्त (सत्ता-पूजक) होती हैं। नतीजा यह होता है कि खिदमतगार कोई नहीं रहता। हर कोई यही कहता है कि हमारे हाथ में हुकूमत रहेगी, तो हम आपको 'जन्नत' में ले जायेंगे, इसलिए आप हमें चुन दीजिए, अगर दूसरी पार्टी के हाथ में हुकूमत जायेगी, तो वे आपको 'जहन्नुम' में ले जायेंगे। इसलिए उन्हें वोट मत दीजिए। कोई लोगों को यह नहीं कहता कि 'जन्नत' और 'जहन्नुम' खुद आपके हाथों में है। कुरआनशरीफ में कहा है कि कोई शख्स दूसरे की जिम्मेदारी नहीं उठा सकता। हरेक को अपना-अपना बोझ उठाना पड़ेगा।

मानवता का दर्द

यहाँ सैलाब (बाढ़) आया, तो अल्लाह के फज्ल (कृपा) से श्रीनगर बच गया और देहात तबाह हो गये। पर क्या श्रीनगर के नागरिकों ने सोचा कि आसपास के देहातों को हम क्या मदद पहुँचा सकते हैं? यहीं की बात नहीं, हर जगह यही होता है। 'रिलीफ' (सहायता) का काम कौन करे ? 'प्राइममिनिस्टर्स रिलीफ फण्ड' (प्रधानमंत्री सहायता कोष) है ही। उसीमें से सरकार मदद पहुँचायेगी। लेकिन क्या लोगों का कोई फर्ज नहीं है? जब अंग्रेजों की हुकूमत थी और बिहार में जलजला हुआ, तो देश के नेताओं ने अपील की थी और सैकड़ों लोग मदद में पहुँच गये थे। पर अब स्वराज्य में क्या हुआ? लोग समझते हैं, सैलाब में जिनको तकलीफ हुई, उनकी मदद करने का काम सरकार का है। हाँ भाई! सरकार का काम तो है ही, नहीं है, तो वह सरकार काहे को बनी है? लेकिन हमारा भी तो कुछ फर्ज है या नहीं? अगर हम कुछ नहीं करेंगे, तो 'डेलिगेटेड डेमोक्रेसी' में इन्सानियत नहीं पनपेगी।

फौज है, तो क्या बहादुरी की जरूरत नहीं? अस्पताल हैं, तो क्या हमदर्दी की जरूरत नहीं? नागरिकों में भी तो बहादुरी होनी चाहिए या नहीं? रहम होनी चाहिए या नहीं? मैं अभी कोई जम्हूरियत पर, डेमोक्रेसी पर टीका करने नहीं बैठा हूँ। आज तक जो सिस्टम (शासन-पद्धतियाँ)

चलीं, उनमें सबसे बेहतरीन कोई सिस्टम है, तो जम्हूरियत ही है। लेकिन वही जम्हूरियत 'फार्मल' बन जाती है, तब दरअसल गाँव- गाँव गुलाम बन जाते हैं, आजादी का सिर्फ नाम रहता है।

आज आजादी कहाँ है?

क्या कश्मीर में, क्या हिन्दुस्तान में, क्या अमेरिका में और क्या रूस में, आज कहीं भी आजादी नहीं है, गुलामी है। किसी को अपनी ताकत पर कोई एतबार नहीं है। लोग जितना अल्लाह मियाँ का नाम नहीं लेते, उतना सरकार का नाम लेते हैं। आज बात-बात में 'सरकार' का जो नाम लिया जाता है, वह हालत मुझसे देखी नहीं जाती। कोई सरकार प्रजा को सुखी बनाती है, तो भी बड़ा खतरा है और कोई प्रजा को दुखी बनाती है, तो भी बड़ा खतरा है! मैं कहूँगा कि जहाँ लोगों की ताकत नहीं बनती, वहाँ खतरा ही होता है।

डेमोक्रेसी मे आप चुने हुए लोगों के हाथ में 5 साल के लिए हुकूमत सौंपते हैं। इस जमाने के 5 साल पुराने जमाने के 50 साल होते हैं। इसलिए पुराने जमाने के 50 साल में जितना काम कोई बादशाह कर सकता था, उतना भला या बुरा काम ये लोग 5 साल में कर सकते हैं।

अवाम खिदमतगार में वाकिफ

यह मैं इसलिए कह रहा हूँ कि अच्छा काम भी आप जिस मकसद से करते हैं, उसी पर उसकी कीमत निर्भर रहती है। अवाम (जनता) अपढ़ है, लेकिन अक्ल वाली है। थर्मामीटर जैसे बराबर हरारत को नापता है, वैसे ही अपढ़ लोग भी नापते हैं कि कौन सच्चे खिदमतगार हैं? इसमें कितनी हरारत है, यह ये ठीक नापते हैं। इनको कोई ठग नहीं सकता। क्योंकि हिन्दुस्तान में कदीम जमाने से सन्त पुरुष इनकी खिदमत करते आये हैं।

जम्मू-कश्मीर स्टेट में हमने प्रवेश किया, तब हमें एक किताब भेंट दी गयी थी—'लल्ला-वाक्यानि' (लल्ला के वचनों का अंग्रेजी तर्जुमा)। लल्ला (कश्मीर की सन्त स्त्री) छह सौ साल पहले हुई। लेकिन आज भी जनता उसे भूली नहीं है। इस बीच कितने बादशाह आये और गये,

पर लोगों ने किसे याद रखा? मैं आपको एक किस्सा सुनाऊँ? दिल्ली के नजदीक गुड़गाँव जिले में हमारी एक मीटिंग थी। सुननेवाले ज्यादातर मुसलमान थे। मैं उनको फिर से बसाने (री-हेबिलिटेशन) का काम कर रहा था। वे मेव लोग थे, जिनके घर-बार उजड़ गये थे। मैंने उनसे पूछा कि अकबर हिन्दुस्तान का बहुत बड़ा बादशाह हो गया। क्या आप उसे जानते हैं? उसका नाम सुना है? आम जनता का वह जल्सा था। वे कहने लगे कि नहीं सुना। दिल्ली के नजदीक 20-25 मील की दूर की यह बात है। फिर मैंने पूछा कि क्या तुमने अकबर लफ्ज ही नहीं सुना? उन्होंने कहा : सुना है, 'अल्लाह हो अकबर'। खत्म! इतना बड़ा अकबर बादशाह हो गया, फिर भी उसे याद नहीं रखते, जानते भी नहीं। बड़े-बड़े बादशाहों की आज यह हालत है, लेकिन कश्मीर की एक सन्त महात्मा लल्ला का नाम आज भी सबको याद है। कबीर को लोग याद करते हैं, क्योंकि वे अपने सच्चे खिदमतगार को पहचानते हैं। इसीलिए जम्मू-कश्मीर स्टेट में कदम रखते ही मैंने कहा था कि कश्मीर का, हिन्दुस्तान का और दुनिया का मसला रूहानियत से हल होगा, सियासत से नहीं।

मन्सूबे विकेन्द्रित हो

हम चाहते हैं कि गाँव-गाँव सेवा के लिए लोग निकलें। अपने घर की तो सभी देखते हैं, लेकिन गाँव की देखने के लिए कोई आगे आये। इस तरह जब गाँव की सेवा करनेवाले निकलेंगे, तभी गाँवों की तरक्की होगी। दिल्ली में बैठकर बड़े-बड़े दिमागवाले सारे भारत के लिए 'पाँचसाला' योजना बनाते हैं। लेकिन उनके दिमाग कितने ही बड़े क्यों न हों, कुल देश की योजना वे नहीं कर सकते। हर गाँव की हालत वे नहीं जानते। एक पंचवर्षीय योजना खतम हुई, दूसरी चल रही है, फिर भी बेकारी दिनोंदिन बढ़ रही है। दुनिया की ऐसी अजीबो-गरीब हालत है कि बेकारी भी बढ़ती है और योजना भी चलती है। डॉक्टर भी बढ़ते हैं और बीमारियाँ भी बढ़ती हैं। इसका कारण यही है कि गाँव-गाँव के लोग अपनी योजना नहीं बनाते।

सरकारी योजना का लाभ गरीबों को नसीब नहीं

होना तो यह चाहिए कि गाँव-गाँव के लोग योजना बनायें और सरकार उन्हें मदद दे। सरकार की योजना का लाभ उन्हीं को मिलता है, जो मदद चूस सकते हैं। बड़ों को ही मदद मिलती है, गरीबों को नहीं। दुनिया में कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो माँगने की भी ताकत नहीं रखते। असली दुखी मनुष्य को ढूँढ़कर मदद देनी पड़ती है। वह तो बेचारा बेजबान होता है। यहाँ तक कि आप उसके गाँव में आये हैं, इसका भी उसे पता नहीं चलता। इसलिए देहली में योजना बनने से गाँव की तरक्की नहीं होगी। तरक्की तो तब होगी, जब गाँव-गाँव में अपने गाँव का हित सोचनेवाले लोग निकलेंगे। गाँव के दुखी गरीबों का दुख जानेंगे और सारे गाँव वाले मिलकर दुख मिटाने की योजना करेंगे। इस तरह गाँव-गाँव में सेवा का इन्तजाम होगा, तभी यह काम बनेगा।

बिलकुल नयी बात

मैं एक बिलकुल नयी चीज बोल रहा हूँ। आज सभी जगह पार्टीवाली बात चल रही है। लेकिन अब कुछ लोगों के मन में यह बात आ रही है कि सियासी पार्टियों से काम नहीं बनेगा, इसलिए एक ऐसी स्वतंत्र जमात चाहिए, जो गैरजानिबदार होकर अवाम की खिदमत करे। आपको मालूम है कि इस समय मैंने अपनी आवाज इस पार्टीवाली सियासत के खिलाफ उठानी है। मैं कहता हूँ कि इसके लिए गाँव-गाँव की मिली-जुली ताकत खड़ी करनी होगी। हुकूमत विकेन्द्रित करनी होगी, अपनी सारी ताकत रूहानियत की राह पर लगानी होगी और जज्बा पैदा किये बिना चर्चा करके मसले हल करने होंगे। मैं यह एक नयी चीज समझा रहा हूँ।

मेरा काम पैगाम पहुँचाना

मगरिब से जो सियासत आयी, उसने हमें तोड़ा है। मजहब के भेद, जबान के भेद, जाति के भेद— इस तरह से तरह-तरह के भेद मौजूद थे। वे इस सियासत के कारण और भी बढ़े।

अलग-अलग पार्टियाँ बनीं। भेदों में इजाफा हुआ। एक-एक पार्टी में भी 'एम्बीशस' (महत्त्वाकांक्षी) लोग अपना-अपना ग्रुप (गुट) बनाते हैं। एक-एक मंत्री का अपना एक-एक गुट रहता है। अनेक पार्टियाँ, फिर एक-एक पार्टी के अलग-अलग ग्रुप, ग्रुप के गुट— नतीजा यह होता है कि देश की ताकत नहीं बनती। देश में अरबो रुपयों का खर्चा बढ़ रहा है। इसलिए मैं चिल्ला रहा हूँ। इस समय मेरा क्राइंग इन दि वाइल्डरनेस (अरण्य-रोदन) चल रहा है।

मैं कहता हूँ कि आगे का जमाना साइन्स का जमाना है। रूहानियत का जमाना है। अब सियासत की कुछ नहीं चलेगी। वह अगर कुछ करेगी भी, तो गलत मार्गदर्शन करेगी। मैं तो अल्लाह की इबादत करूँगा। कुरआनशरीफ में कहा हैः "अलैकल् बलागुल मुबीन्" "तेरे पर जिम्मेदारी अलग की है, याने पैगाम पहुँचाने की जिम्मेदारी तेरे पर है और हमारे पास हिसाब है।" मैंने आपके पास पैगाम पहुँचा दिया है। मैं बिलकुल दिल खोलकर पैगाम पहुँचा रहा हूँ। अब मार्गदर्शन कौन करेगा? रूहानियत! ताकत कौन देगा? साइन्स ! रूहानियत और विज्ञान, इन दोनों के अलावा तीसरी कोई चीज इसके आगे नहीं चलेगी।

•

11. रूहानियत से ही मसलों का हल

मसलों की वजह तंगदिली

आज छोटे दिल और बड़े दिमाग की टक्कर हो रही है। पुराने जमाने में दिमाग भी छोटा था और दिल भी। आज भी वैसा ही ही होता, तो हमारी निभ जाती। पर वैसा है नहीं। अब हम अपने दिल ऐसे ही तंग रखेंगे, छोटे रखेंगे तो मसले कतई हल तो होंगे ही नहीं, बढ़ जरूर जायेंगे। इन दस सालों में हमने कितने मसले हल किये और कितने पैदा किये? पुराने मसले कायम ही है और नये-नये पैदा हो रहे हैं। कोरिया का मसला, इराक, मिस्र, दक्षिण अफ्रीका, मोरक्को आदि के सारे मसले कायम हैं। अब तिब्बत का नया मसला पैदा हुआ। इस तरह उसमें इजाफा हो रहा है। क्योंकि सियासत से दुनिया के मसले हल होने के दिन लद गये हैं। इसलिए जब मैंने कश्मीर में कदम रखा, तभी कहा था कि कश्मीर का मसला रूहानियत से हल होगा, सियासत से नहीं। सियासत नाचीज है। जितना साइन्स बढ़ रहा है, उतनी सियासत फीकी पड़ रही है। सियासत और साइन्स दोनों एक होंगे तो समझना चाहिए कि दुनिया खतम ही होने वाली है। इसलिए हमें रूहानियत और साइन्स, इन दोनों को जोड़ना चाहिए। प्रश्न है रूहानियत से मसले किस तरह हल किये जा सकते हैं? किसी गुफा में, खोह में 10 हजार साल का अन्धेरा हो, वहाँ लालटेन लेकर जायँ, तो एक मिनट में वह खत्म हो जाता है। इसी तरह जहाँ हम रोशनी लेकर देखने जाते हैं, वहाँ वह मसला भाग जाता है। ये सारे मसले छोटे-छोटे दिलों ने पैदा किये हैं।

आज तक का चिन्तन मन की भूमिका पर

आज तक समाज-रचना की जितनी कोशिशें की गयीं, जितने तरह-तरह के इन्किलाब आये, लाये गये या लाने की कोशिश की गयी, वे सब दूसरे ही उसूल पर थे। वे उसूल आज कतई चलनेवाले नहीं हैं, यह बात मेरे दिल में पक्की बैठ गयी है। अब तक जो चिन्तन चला, सारा मेण्टल लेवल (मन की भूमिका) पर चला। उससे ऊपर उठने की बात अगर किसी ने की, तो

शख्सी (व्यक्तिगत) तौर पर, इनफरादी (अकेले) की। लेकिन हम जहाँ एक समाज के तौर पर सोचने बैठते हैं, माली, इक्तसादी हालत के बारे में सोचते हैं, मन की भूमिका में सोचते हैं, जिसमें सारा मानस-शास्त्र (साइकॉलॉजी) आता है और मन से मन टकराते हैं।

कश्मीर का छह मुल्कों से सीधा ताल्लुक

आज रायशुमारी चाहनेवाले भाई हमसे मिलने आये थे। मैंने उनसे कहा कि तुम लकीर के फकीर मत बनो! जरा सोचो, तो क्या 'मेजॉरिटी वोट' (बहुमत) लेना और उसे माइनॉरिटी (अल्पमत) पर लादना, यह बात दुनिया में चलेगी? आज दुनिया में कोई भी मसला छोटा नहीं रहता, बड़ा रूप लेता है। इसलिए सारी दुनिया की दृष्टि (वर्ल्ड वाइड आस्पेक्ट) से सोचो। मेरे पाँव में फोड़ा है तो वह केवल पाँव का ही नहीं, कुल जिस्म का है। इसमें सिर्फ पाँव को ही दिलचस्पी नहीं, सारे जिस्म को है। हम यहाँ कश्मीर-वैली में बैठे हैं। एक बाजू से उसका सम्बन्ध हिन्दुस्तान से है। दूसरी बाजू में पाकिस्तान और तीसरी बाजू में अफगानिस्तान से है। फिर उधर चीन और रूस से भी सम्बन्ध है और अमेरिका से भी। मगर वह दीखता नहीं, पाकिस्तान में अमेरिका पड़ा है। इस तरह छह मुल्क इसमें बिलकुल 'डाइरेक्ट्ली कन्सर्ड' हैं। उनका इससे सीधा ताल्लुक है।

विज्ञान-युग में अतिमानस भूमिका जरूरी

इसीलिए जब हम अपने मन से ऊपर उठकर सोचेंगे, 'सुप्रामेण्टल लेवल' (अतिमानस भूमिका) पर सोचेंगे, तभी दुनिया के मसले हल हो सकेंगे, नहीं तो नहीं। हम मन की भूमिका पर सोचते रहेंगे, तो टक्कर ही होगी—मेरा मन आपके मन से टकरायेगा। यह मन कैसे बनता है, जरा सोचना होगा। उसके पीछे तवारीख (इतिहास) लगी रहती है। मैं कहता हूँ, क्या यह कमबख्त तवारीख हमें बाँधने के लिए है या मदद पहुँचाने के लिए? तवारीख एक जंजीर, बेड़ी बन जाय और हमारा चिन्तन महदूद करे, तो खतरा है इसलिए आज तक जो हुआ, उसे अलग रखकर

'ऑब्जेक्टिवली' (तटस्थता से) सोचना होगा। विज्ञान के जमाने में जिस तरह सोचना जरूरी है, उसी तरह सोचना होगा।

कश्मीर आपके बाप का था, आपका नहीं है

कश्मीर का ही मसला लीजिए। कुछ भाइयों ने हमसे कहा कि कश्मीर हमारा है, हमारे बाप का है। मैंने कहा कि कश्मीर आपके बाप का था। लेकिन आपका नहीं है। मेरे बाप के जमाने में हिन्दुस्तान मेरे बाप का था। लेकिन आज नहीं है। चीनवालों के बाप के जमाने में चीन उनका था, लेकिन आज चीन उनका नहीं है। आज चीन, हिन्दुस्तान, कश्मीर, हर देश दुनिया का है। यह हम जितना जल्दी समझेंगे, उतने जल्दी हमारे मसले हल होंगे। फिर उन मसलों का स्वरूप ही बदल जायेगा। छोटी नजर से देखने पर जो रूप दीखता है, बड़ी नजर से वह नहीं दीखता, बल्कि दूसरा ही दीखता है। एक छोटा-सा कीड़ा मेरे पाँव के अँगूठे के नाखून पर बैठा है। उसे क्या मालूम कि यह बाबा नाम का एक जानदार प्राणी है। उसके पास कितनी ताकतें पड़ी हैं। उसके एक हिस्से पर, जिसे 'नाखून' कहते हैं, मैं बैठा हूँ। वह कीड़ा सिर्फ नाखून को जानता है, उससे ज्यादा इल्म उसे नहीं है। इसी तरह से हम छोटे दिमाग से देखते हैं, तो किसी चीज का जो रूप और रंग दीखता है, अगर हम सारी दुनिया की 'सेटिंग' (पटल) में देखेंगे, तो रूप बिलकुल ही बदला हुआ दीखेगा। ऋग्वेद में, जो कि दस हजार साल पुराना ग्रन्थ है, यह लफ्ज आया है—"विन्द्यमानुषः" याने कुल दुनिया के इन्सान एक हैं। हम किसी एक जगह के नहीं, बल्कि कुल दुनिया के हैं। उसी निगाह से हमें सोचना होगा।

मसले हल नहीं हो रहे हैं

आज विज्ञान का जमाना है। वैसे विज्ञान तो कदीम जमाने से चला आया है और धीरे-धीरे बढ़ता गया है। पुराने जमाने में इन्सान ने जब आग की खोज की, तब वह बहुत बड़ी खोज थी। इसलिए उस वक्त अग्नि को देवता समझकर उसके गाने गाये गये। वह एक बड़ी भारी ईजाद थी।

इस तरह विज्ञान विकसित होता गया। लेकिन इन दस-बारह साल में विज्ञान की जितनी तरक्की हुई है, उतनी उसके पहले दस हजार साल में भी नहीं हुई थी, इस बात को हमें समझना चाहिए। हिरोशिमा पर जो एटम बम गिराया गया, उस एक बम से जापान टिक नहीं सका और उसे शरण जाना पड़ा। लेकिन उस बम से हजारगुना ताकतवाले बम की आज खोज हुई है। इस हालत में आज देश के और दुनिया के छोटे-छोटे मसले हल नहीं होते हैं, उसका क्या कारण है? पुराने मसले कायम ही हैं और नये पैदा हो रहे हैं। इन सब मसलों का हल कब होगा?

वर्ल्ड वार या वर्ल्ड एडजस्टमेण्ट से मसले हल होंगे

मैं कहना चाहता हूँ कि इन सब मसलों का हल 'वर्ल्ड वार' (विश्व-युद्ध) से होगा या 'वर्ल्ड एडजस्टमेण्ट' (विश्व-सन्तुलन) से। या तो लड़ाई होगी और कुल दुनिया का खात्मा होगा और कुल मसले हल होंगे, या एक दिन ऐसा आयेगा, जब सबके मन ऐसे बनेंगे कि कुल दुनिया के मसले एक ही दिन में हल होंगे। उसके लिए मैं एक मिसाल देता हूँ। हिन्दुस्तान ने आजादी के लिए बहुत कोशिश की, इसलिए उसे आजादी हासिल हुई लेकिन बर्मा ने, लंका ने आजादी के लिए क्या कोशिशें की थीं? जिन्होंने खास कोशिश नहीं की थी, उन्हें भी आजादी हासिल हुई। एक ऐसा माहौल पैदा हुआ कि हिन्दुस्तान के साथ दूसरे भी 2-4 देशों को आजादी मिल ही गयी। याने एक जागतिक वातावरण (वर्ल्ड सिच्युएशन) बनता है और काम हो जाते हैं। इसी तरह इसके आगे ये लटकने वाले सवाल भी कुल के कुल एक दिन में हल होंगे। यह तब होगा, जब हम मन से ऊपर उठेंगे और 'सुप्रामेण्टल लेवल' (अतिमानस भूमिका) पर जाकर सोचेंगे।

आणविक अस्त्र अहिंसा के नजदीक

मैंने कई दफा कहा है कि मुझे विश्व-युद्ध का डर कभी भी मालूम नहीं होता। बहुत से लोग कोशिश करते हैं कि 'न्यूक्लिअर वेपन्स' (आणविक अस्त्रों) का उपयोग न हो, उनके प्रयोग न हों, लेकिन मुझे 'न्यूक्लिअर वेपन्स' का उतना डर नहीं मालूम होता, जितना 'कन्वेन्शनल वेपन्स'

(मामूली अस्त्रों) का मालूम होता है। मैं जानता हूँ कि जब तक आपके खंजर, तलवार, बन्दूक, ये सारे चलेंगे, तब तक अहिंसा नहीं पनपेगी। लेकिन 'न्यूक्लिअर वेपन्स' और अहिंसा बिलकुल नजदीक है। जैसे वर्तुल के दो सिरे बिलकुल नजदीक होते हैं और सबसे ज्यादा दूर भी वैसे ही 'एटॉमिक वेपन्स' अहिंसा के बिलकुल नजदीक भी हैं। उन्हें विकसित होना है, तो होने दें। विश्व-युद्ध से मैं कहता हूँ कि तू आ जा! तू मेरे लिए जगह देनेवाला है। याने तेरे बाद दुनिया को अहिंसा के सिवा गति ही नहीं है। लेकिन ये जो छोटे-छोटे औजार हैं, लाठी, तलवार, स्टेनगन, पिस्तौल— ये सारे खतरनाक हैं। जब तक ये जारी रहेंगे, तब तक अहिंसा को सामने आने का मौका ही नहीं मिलेगा। आज 'न्यूक्लिअर वेपन्स' ने आपके मामूली 'वेपन्स' (शास्त्रों) को बेकार बना दिया है। अब 'टोटल नॉनवायलेन्स' (परिपूर्ण अहिंसा) और 'टोटल वायलेन्स' (परिपूर्ण हिंसा), इन दोनों के बीच मुकाबला होगा। अब दुनिया के सामने एक ऐसा 'आल्टरनेटिव' (विकल्प) खड़ा है कि या तो इसे कबूल करो या उसे।

कसरत राय से फैसला करने में गलत

इस हालत में कोई वही पुरानी, रायशुमारी की बात करते हैं, तो क्या कहा जाय ! आखिर जिनका इसके साथ ताल्लुक है, उन सबकी रायशुमारी लेनी चाहिए। इसमें और एक बात यह है कि 52 प्रतिशत लोग एक बाजू और 48 प्रतिशत दूसरी बाजू हों, तो 52 वालों की राय 48 वालों पर लादना क्या न्याय, इन्साफ है? कसरत राय (बहुमत) से फैसला करने की बात बहुत ही 'क्रूड' (भद्दी) है। जहाँ आप संसार के नसीब की बात सोच रहे हैं वहाँ केवल एक मेकेनिकल प्रोसेस (यांत्रिक प्रक्रिया) नहीं हो सकती। ऐसे मसले पुराने ढंग से हरगिज हल नहीं हो सकते। इसलिए 'स्पिरिच्युआलिटी' रूहानियत (आध्यात्मिकता) इस जमाने की माँग है, उसके बिना नजात (मुक्ति) मुमकिन नहीं है। मैं जाती नजात (व्यक्तिगत मुक्ति) की ही नहीं, बल्कि सारे समाज की नजात की बात करता हूँ। इसीलिए कहता हूँ कि पुराने जमाने में हम किसी एक विषय पर जज्बा (भावना) पैदा करते चले जाते थे, उसी पुराने मन की भूमिका पर काम करने से कोई

मसला हल नहीं होगा। इसलिए अब हमें अपने भारत की पुरानी कूबत, ताकत, जो रूहानियत में है, उसे लाना होगा। उसी ताकत से कश्मीर के, हिन्दुस्तान के और दुनिया के मसले हल होंगे।

रूहानियत और मजहब एक नहीं

रूहानियत मजहब से अलग चीज है। मजहब हर जमाने में, हर कौम के लिए और हर समय के लिए एक नहीं होता, पर रूहानियत एक होती है। जैसे प्यार करना, सच बोलना, रहम रखना रूहानियत है, वैसे ही अल्लाह की इबादत करना भी रूहानियत है। लेकिन अल्लाह की इबादत के लिए घुटने टेकना, मगरिब की या मशरिक की तरफ मुँह करके इबादत करना, ये सब मजहब हैं। अल्लाह के लिए दिल में भक्ति रखो, अल्लाह को हमेशा याद करो, अल्लाह की फिक्र रखो— यह रूहानियत है।

सीढ़ियाँ बनायी गयी हैं। इन्सान सीढ़ी पर चढ़ा, लेकिन बीच में ही अड़ा रहा तो ऊपर पहुँचने के बजाय बीच में ही रुक जाता है। मजहब इन्सान को एक हद तक मदद पहुँचाता है और बाद में रुकावटें डालता है। मूरख लोग यह नहीं समझते और मजहब के नाम से झगड़ते हैं! वे नहीं समझते कि मजहब बदलता है, रूहानियत नहीं।

किताबपरस्ती

मजहब के तरीकों में कभी-कभी फर्क होता है। इसलिए कभी-कभी मजहबवाले नाहक झगड़ते हैं। जैसे कभी-कभी जबान के, जाति के, सूबे के, मुल्क के झगड़े होते हैं, वैसे ही मजहब के भी झगड़े होते हैं। मैं नहीं समझता कि ऐसे झगड़े क्यों होने चाहिए? कहा तो है एक शायर ने कि "मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।" लेकिन मजहब के नाम से ही झगड़े होते हैं। मजहब से ही जज्बा पैदा होता है। मुझे लोग पूछते हैं: "क्या आप कुरआनशरीफ पढ़ते हैं?" मैं कहता हूँ: "जी हाँ।" फिर पूछते हैं: "क्या आप उन आयतों पर चलते हैं?" "जी नहीं।" क्योंकि जिस आयत से मुझे जितना लेना होता है, उतना लेता हूँ। मगर मैं किसी आयत का, गीता का,

कुरआनशरीफ का, बाइबिल का या किसी भी किताब का बोझ नहीं उठाता। उसमें से जो जँचती है, उसे ले लेता हूँ।

वे बुतपरस्ती नहीं चाहते, लेकिन किताबपरस्त जरूर हो जाते हैं। वे किताब के बारे में कुछ खास जानते तो नहीं हैं। पढ़ते समय तलफ्फुज भी ठीक नहीं करते। इस पर भी कितनी जिद रखते हैं। वे किताब को पकड़े रहते हैं, उसे सिर पर उठाये रहते हैं।

किताब से मुफीद चीजें लें

किताब और धर्मशास्त्र इन्सान के लिए होते हैं या इन्सान उनके लिए? किताब में से ऐसी ही चीज लेना चाहिए, जो अपने लिए मुफीद हो, उपयोगी हो। दवा की किताब में हर तरह की बीमारी की, मर्जों पर दवा बतायी होती है। पर क्या वह सभी दवा मुझे लेनी चाहिए? नहीं, मेरे मर्ज के लिए जिसकी जरूरत हो, वही लेनी चाहिए। किताब में पचासों चीजें होती हैं। उनमें से कुछ ही ऐसी होती हैं, जो सबके लिए हैं। उसी का नाम है रूहानियत। जैसे— एक-दूसरे को हक पर चलने के लिए मदद करो, एक-दूसरे को रहम रखने के लिए सिखाओ। हक, सब्र, मुहब्बत— ये बातें सबको लागू होती हैं। पारसी, यहूदी, ईसाई, हिन्दू, मुसलमान आदि सभी धर्मवालों पर लागू होती हैं। इसी का नाम है रूहानियत।

मजहब बाहरी और रूहानियत अन्दरूनी चीजों के लिए

कुछ लोग रात में फाका करते हैं, कुछ लोग दिन में। जैन लोग शाम को सूरज डूबने से पहले खा लेंगे। वे कहते हैं कि रात में चूल्हा जलाने से जन्तु कीड़े आदि जीव मरते हैं। मुसलमान रोजा रखते हैं। वे रात में खायेंगे, दिन में नहीं। इसका नाम है मजहब। लेकिन अपने पर जब्त रखने के लिए फाका करना— यह है रूहानियत ! जियारत के लिए मक्का जाना, अजमेर जाना या काशी, अमरनाथ जाना, यह सब मजहब है, लेकिन कभी-कभी घर छोड़कर खिदमत के लिए

बाहर निकलना रूहानियत है। मजहब बाहरी चीजों के लिए आदेश देता है, रूहानियत अन्दर की ताकत बढ़ाती है।

मजहब आहिस्ता ले जाता है

मजहब का मतलब है— इन्सान को रूहानियत की तरफ ले जाना। दोनों एक ही चीज की तरफ जाते हैं। लेकिन कुछ लोग रास्ता नहीं जानते, इसलिए मजहब उनको आहिस्ता-आहिस्ता ले जाता है। रूहानियत एकदम रोशनी डालती है। सही चीज क्या है और क्या नहीं, रूहानियत एकदम बताती है। मजहब क्या करता है? अन्धा समझकर इन्सान को हाथ पकड़कर धीरे-धीरे ले जाता है। 'इधर चलो' या 'उधर चलो' ऐसे रास्ता बताता है। यह मुल्ला है, यह ब्राह्मण है, यह गुरु है, इनके पीछे चलो— यह सब मजहब सिखाता है। रूहानियत एकदम रोशनी देती है। वह कहती है, देखो, तुम्हारे और अल्लाह के बीच और कोई भी नहीं है। मजहब कहता है, अल्लाह के पास पहुँचना है, तो बीच में कोई एजेण्ट चाहिए। फिर चाहे वह पुरानी किताब हो या पुरानी मूर्ति ! मन्दिर में जाओ या मस्जिद में, गुरु की बात सुनो या किताब की ! मजहब में किताब, मन्दिर, मस्जिद यह सब आता है, तो अल्लाह और इन्सान के बीच परदा खड़ा हो जाता है। रूहानियत कहती है कि तेरा अल्लाह के साथ सीधा ताल्लुक है, बीच में कोई एजेण्ट नहीं है। मजहब और रूहानियत में यही भेद है।

मैं अल्लाह को पकड़ता हूँ

मैं गीता, जपुजी, कुरआनशरीफ, बाइबिल पढ़ता हूँ। लोग कहते हैं, तुम किसी एक किताब को पकड़ो। मैं कहता हूँ कि मैं किसी एक किताब को नहीं पकड़ता। अल्लाह को ही पकड़ता हूँ। वह चीज मुफीद है, वह मुझे हर चीज में मिल ही जाती है। कुरआन में कहा है : उम्मतुँ वाहिद् । यानी अल्लाह कहता है कि तुम्हारी सबकी कौम एक ही है। लेकिन लोगों ने फिरके

बनाये हैं। हर कोई समझता है कि हमारी चीज अच्छी है। लेकिन अल्लाह ने नबियों से कहा है कि तुम्हारी कौम एक ही है।

अल्लाह को न भूलना, अल्लाह पर प्यार करना, झूठ न बोलना, सच बोलना— यह रूहानियत है। रूहानियत एक ही है। मजहब गलत हो सकते हैं, अलग-अलग भी हो सकते हैं और अच्छे भी हो सकते हैं। लेकिन रूहानियत सबके लिए एक ही होती है और वह अच्छी ही होती है।

कश्मीर के मसले के दो पहलू

हमने देखा कि जम्मू और कश्मीर का जो मसला है, उसका अन्तर्राष्टीय सवाल तो तब हल होगा, जब बैनुल अकवामी हालात बदलेंगे और हिन्दुतान पाकिस्तान, चीन, रूस, अफगास्तिान आदि जिन-जिनका कश्मीर से सम्बन्ध आता है, उन सबके मन में मसला हल करने की बात आयेगी। जब उन सबके मन में ऐसा खयाल आयेगा, तब सिर्फ कश्मीर का मसला ही नहीं, बल्कि दुनिया के सभी मसले हल होंगे। परन्तु जहाँ तक कश्मीर का सवाल है, वह तब हल होगा, जब यहाँ के लोग अपनी अन्दरूनी ताकत महसूस करेंगे। होना तो यह चाहिए कि गाँव-गाँव के लोग अपनी जमात बनायें और एक-दूसरे के लिए मर-मिटने को तैयार हों।

प्रेम करने वाली फौज - ग्राम-समाज

आज तक मैं इतना ही कहता था कि गाँव एक बनें। लेकिन अब कहना चाहता हूँ कि गाँववाले एक-दूसरे के लिए मर-मिटने को तैयार हों, जिससे गाँव एक मजबूत फौज बने। दुश्मन से लड़नेवाली फौज नहीं, क्योंकि उसके सामने कोई दुश्मन ही नहीं है, बल्कि प्रेम करनेवाली फौज बने। जैसे फौजवाले अनुशासन और कानून से रहते हैं, वैसे ही गाँववाले अपना एक कानून बनायें और उसके मुताबिक चलें। राज्य का कानून अलग हो और गाँव का कानून अलग हो। गाँव के सब लोग मिलकर सोचें कि गाँव की ताकत किस तरह बढ़ सकती है और गाँव के हर तबके

के लिए क्या-क्या करना होगा। समाज में तबके होते हैं। हर तबके की जो सिफत होती है, उसे प्रकट करने का मौका मिलना चाहिए। हमारे गाँव का कोई मनुष्य दुखी हो और वह अकेला ही रोता रहे, यह हम बर्दाश्त न करें। सारा गाँव उसके दुख में शामिल हो, तो उसके दुख का भार हल्का होगा। इस तरह गाँववालों को चाहिए कि सुख-दुख दोनों बाँट लें। अगर मेरे पास कोई चीज पड़ी है या मैंने अपने परिश्रम से कोई चीज पैदा की है, तो वह मेरी मानी जाती है। मैं उसका मालिक माना जाता हूँ। मेरा उस पर हक है, लेकिन सबको बाँटकर खाने का हक है। दूसरों को उस चीज से महरूम रखने का हक नहीं है। जैसे घर के मालिक या मालकिन पिता, माता घर के मुखिया हैं, इसका मतलब यह है कि वे सबको खिलाकर बाद में खाते हैं। अगर माँ कहे कि मैं मालकिन हूँ, इसलिए मैं पहले खाऊँगी, तो वह मुखिया नहीं साबित होगी। गाँव के लोगों को चाहिए कि वे मिल-जुलकर काम करें, एक-दूसरे के सुख-दुख में हिस्सा लें। जाति, धर्म, पन्थ, पक्ष आदि का खयाल छोड़कर ग्राम-समाज बनायें। एक-दूसरे के लिए मर-मिटने के लिए तैयार हों, यही कश्मीर का मसला हल करने का तरीका है। जातियाँ काम के लिए बनी थीं, उसमें ऊँच-नीच की कोई बात नहीं है। धर्मों में भी कोई फर्क नहीं है। धर्म याने इबादत का तरीका। भगवान् के गुण अनन्त, लातादाद हैं, इसलिए इबादत के तरीके भी कई होते हैं। जिसको जो गुण पसन्द हो, उसकी वह इबादत करता है। सबकी रूह एक है, यह समझना होगा। “हम सब एक हैं और एक-दूसरे के लिए मर मिटने के लिए तैयार हैं”, इस भावना से काम करना रूहानियत के ढंग से काम करना है।

शान्ति-सेना की जरूरत

कोई भी कौम तरक्की करती है, तो वह अपनी हिम्मत पर ही करती है, लश्कर की हिम्मत पर नहीं। अगर लश्कर पर ही सारा दारोमदार रहा, तो लोग बुजदिल बनेंगे, डरपोक बनेंगे। लोगों की ताकत नहीं बढ़ेगी। इसलिए हमारा कहना है कि इस वक्त शान्ति-सेना की सख्त जरूरत है। लोगों में, अवाम में यह हिम्मत होनी चाहिए कि हम लश्कर पर अपना दारोमदार नहीं रखेंगे।

हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, अमेरिका, चीन, इंग्लैण्ड— सब जगह अवाम में प्यार है। लेकिन डर छाया है, यह डर सियासत के कारण छाया है। यह डर खत्म होगा— खत्म होगा— अगर जगह-जगह शान्ति-सेना खड़ी होगी। कभी भी पुलिस की जरूरत शान्ति के लिए नहीं रहेगी। अवाम निर्भय, निडर होकर रहेगी। यह बनेगा तो मुल्क की, देश की अन्दरुनी ताकत बढ़ेगी सिर्फ फौजी ताकत से देश की तरक्की नहीं होती है।

शान्ति-सेना की तस्वीर

शान्ति-सैनिक बहादुर होता है। यह काम बुजदिलों, डरपोकों का नहीं है। सब्र रखना, बरदाश्त करना, क्षमा करना बहादुर के लिए जीनत (शोभा) है। शान्ति-सैनिक रोजमर्रा सेवा करेगा और गैरजानिबदार बनकर लोगों की दुश्वारियाँ सुनेगा। उनका हल मुकदमे, झगड़े, विवाद कोर्ट में जाने नहीं देगा। कहीं दंगा-फसाद हुआ तो वहाँ जाकर शान्ति करेगा। मौके पर मर मिटने के लिए तैयार भी रहेगा।

कुल गाँव शान्ति-सेना बने

अभी तक मैं कहता था कि गाँव में काम करने के लिए शान्ति-सेना में नाम दीजिए। शान्ति-सैनिक मौके पर शान्ति के लिए मर मिटेंगे। लेकिन अब मैं दूसरी बात बोल रहा हूँ। वह यह कि कुल का कुल गाँव शान्ति-सेना बने। एक भी शख्स उसके बाहर न रहे। एक दिन में यह काम नहीं बनेगा, इसलिए आज मैं शान्ति-सेना का नाम तो ले रहा हूँ। परन्तु यही कहूँगा कि ये शान्ति-सैनिक दही की तरह हैं और सारा गाँव दूध है। दही सारे दूध में घुल-मिल जायेगा, तो सारे दूध का दही बन जायेगा। वैसे ही ये शान्ति-सैनिक सारे समाज में घुल-मिलकर गाँव को ही शान्ति-सेना बनायेंगे। जब गाँव शान्ति-सेना बनेगा, तो फिर गाँव की हिफाजत के लिए कुछ भी नहीं करना पड़ेगा। फिर गाँव पर कोई हमला नहीं करेगा। अगर बाहर के किसी देश ने हमला किया

भी, तो वह उस गाँव का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगा। क्योंकि सारा गाँव एक बनेगा, गाँव का कोई भी मनुष्य दुश्मन का साथ नहीं देगा। इस तरह गाँव एक मजबूत किला बनेगा।

.

12. जम्हूरियत कब पनपेगी

दुनिया शान्ति चाहती है

दुनिया भर के लोग शान्ति चाहते हैं। साइन्स के जमाने में साइन्स की ताकत अगर हिंसा के साथ जुड़ेगी, तो दुनिया का खात्मा हो जायेगा। साइन्स की ताकत अहिंसा के साथ जुड़नी चाहिए। यह बहुत आवश्यक है। यह बात अब उनके ध्यान में आ रही है, जिन्होंने शस्त्रास्त्र बढ़ाये और आज भी बढ़ा रहे हैं। आज भी वे शस्त्रास्त्र बढ़ा रहे हैं, उनकी वजह यह है कि उन्हें नया रास्ता नहीं सूझ रहा है। इस समय सियासतवालों का हिंसा की ताकत पर विश्वास नहीं रहा और अहिंसा की ताकत पर विश्वास जमा नहीं है।

सत्ता चन्द लोगों के हाथ में

हमें अब नयी ताकत बनानी होगी। वह ताकत, जिसे मैं लोकशक्ति कहता हूँ। लोग स्वयं अपना शासन चलायें। वर्तमान शासन को विकेन्द्रित करना होगा। अभी जो शासन है, वह चाहे वेलफेयर के नाम से हो, कम्युनिज्म के नाम से हो, डेमोक्रेसी के नाम से हो या किसी भी नाम से हो, उसके कारण कुल ताकत एक मरकज में आ जाती है और सारे समाज पर भार बढ़ जाता है। फिर समाज की तरक्की के लिए चन्द लोग मन्सूबा करते हैं, कानून बनाते हैं और कानून की रक्षा के लिए पुलिस तथा लश्कर रखते हैं। उन चन्द लोगों के हाथ में ताकत आ जाती है। आज दुनिया को बनाना या बिगाड़ना चन्द लोगों के हाथ में है।

आज जम्हूरियत कहीं नहीं पनपती

आज सुबह जो लोग आये, वे कह रहे थे कि यहाँ जम्हूरियत (लोक-शाही) पनपनी चाहिए। लेकिन वह कहाँ पनप रही है? क्या वह अमेरिका में पनप रही है? नहीं। वहाँ भी पूरी ताकत चन्द लोगों के हाथ में है।

इस सबकी वजह यही है कि प्रातिनिधिक लोकतंत्र से हमारे खुद के हाथ में ताकत नहीं होती। आज हम सबकी तरफ से इबादत का काम मुल्ला करेगा और खिदमत का काम करेगा नुमाइन्दा ! तब फिर हम क्या करेंगे? खायेंगे, पियेंगे और रोयेंगे ! जब तक हम इबादत और खिदमत जैसी जिन्दगी की महत्त्व की बातें तर्जुमान तथा नुमाइन्दों पर रखेंगे, तब तक सुखी नहीं बन सकते। अगर इत्तफाक से हम सुखी बन भी गये, तब भी वह गलत होगा। दूसरे की अक्ल से सुखी या दुखी बनना, दोनों ही गलत है।

जम्हूरियत तब पनपेगी जब इन जानिबदार पार्टियों के अलावा तीसरा ऐसा समाज होगा, जो खिदमत में लगा रहेगा। इसके मानी यह नहीं कि पार्टीवाले कुछ भी खिदमत नहीं करते। वे भी खिदमत करते हैं। किन्तु उनकी नजर 'इलेक्शन' पर रहती है।

खुदा के चेहरे : चुनाव

कुरआनशरीफ में आया है कि "खुदा के चेहरे के दर्शन के लिए हमें दान देना चाहिए।" इन पार्टीवालों के लिए 'खुदा के चेहरे' चुनाव हैं। चुनाव के लिए दान ! चुनाव के लिए खैरात !! खिदमत करेंगे और ये नापते रहेंगे कि हमने इतनी खिदमत की, तो कितना पाया? ये पक्के बनिया हैं। दो पैसे की खिदमत के चार पैसे चाहते हैं। जरा-सी खिदमत करेंगे और कैमरा से फोटो खिचवायेंगे। इस तरह से बदले की अपेक्षा रखकर खिदमत करनेवाले लोग खिदमत में जहर मिला रहे हैं।

इन पार्टीवालों के आगे-पीछे, अन्दर-बाहर सभी जगह चुनाव का विचार रहता है। यहाँ तक कि बाबा जिनके चुनाव-क्षेत्र (Constituency) में घूमता है, वहाँ भी लोग दौड़े-दौड़े पहुँच जाते हैं। चाहे उस वक्त पार्लियामेण्ट हो, तब भी वे आते हैं, साथ रहते हैं और दान भी दिलवाते हैं। नहीं तो फिर चुनाव के समय लोग उनसे पूछते हैं कि बाबा आया, तब आप कहाँ थे? पद-यात्रा में क्यों नहीं आये?

पद-यात्रा के दो मानी हैं। एक तो यह कि पाँव से चलना यानी पैदल चलना, पद-यात्रा। और दूसरा मानी है— पद-प्राप्ति के लिए पद-यात्रा। पद-प्राप्ति के लिए तमगा मिलना चाहिए, इसीलिए यात्रा करते हैं।

चुनाव ने जाति-भेद को जिलाया

भारत में जातिभेद, छुआछूत बहुत है। वह चीज मरने को थी, लेकिन उसे जिलानेवाली जड़ी-बूटी हमारे हाथ में आ गयी। तब जड़ी-बूटी थी लोकशाही का तरीका, जिसे हमने इंग्लैण्ड से जैसा का तैसा ही ले लिया। पार्सल खोला नहीं, देखा नहीं और ऐसा ही खाने लग गये और कहने लगे कि मिठाई मीठी लगती है। फिर उससे हैजा हो जाय, तो उसका कोई विचार ही नहीं। इसी से जातिभेद को बल मिला, नहीं तो राजा राममोहन राय से गांधीजी तक उस पर प्रहार कर चुके थे और वह मरने को ही था। लेकिन इलेक्शन के तरीके से ही उसमें प्राण आ गया। तरह-तरह के लोग जाति की तरफ से खड़े किये जाते हैं। जहाँ-तहाँ वही बात चलती है। दस साल पहले जितना जातिभेद था, आज वह उससे अधिक हो गया है। उसमें कोई जान नहीं, पर बिना जान के ही वह जिन्दा हो गया है। उसे हमें मिटाना चाहिए और हम मिटा सकेंगे। अगर हम प्रेम से बरतें, तो उसे हम मिटा सकते हैं।

अलावा इसके आज जो चुनाव चलते हैं और वह भी अक़ल्लियत (अल्पमत) और अक्सरियत (बहुमत) से होते हैं, लोकशाही के नाम से होते हैं और उन्हीं के कारण सत्ता के झगड़े गाँव-गाँव में पैठ गये हैं, गाँव-गाँव में आग लग रही है— ये सारी बातें तब तक हल न होंगी, जब तक हम मिल-जुलकर काम नहीं करेंगे और फैसले सर्वसम्मति से नहीं करेंगे।

प्रातिनिधिक लोकतंत्र के दोष

कई दफा यह 'डेमोक्रेसी' (लोकतंत्र) 'फार्मल' (औपचारिक) बन जाती है। होता यह है कि हम अपने नुमाइन्दे भेज देते हैं और उनके जरिये समाज-सेवा का काम कराना चाहते हैं। हमने

सारा धर्म, धर्म के ठेकेदारों को सौंप दिया और उन्हें कह दिया कि हमारी तरफ से आप धर्म का काम कीजिए, हम आपको दक्षिणा दे देंगे। इससे हमें सवाब (पुण्य) हासिल हो जायेगा। खेती-सुधार वे करेंगे, दस्तकारियाँ वे बढ़ायेंगे, तालीम वे देंगे, संगीत एकेडेमी वे खोलेंगे, साहित्य को उत्तेजन वे देंगे, समाज-सुधार, शादी के कानून, विरासत के कानून— इन्सान की जिन्दगी के सब काम वे करेंगे। समाज-सेवा का काम नुमाइन्दों का और धर्म का काम मुल्ला-मौलवियों का होगा, तो हम क्या करेंगे? हम मेहरबानी करके खायेंगे, पियेंगे। पूरा खाना नहीं मिला, तो सरकार की निन्दा करेंगे और मिला, तो उसकी तारीफ करेंगे। निन्दा और तारीफ के सिवा हमारा दूसरा धन्धा ही नहीं है। यह जो 'डेलिगेटेड डेमोक्रेसी' (प्रातिनिधिक लोकतंत्र) है, नुमाइन्दों के जरिये काम करने का तरीका है, इससे इन्सानियत नहीं पनपती।

डेमोक्रेसी का ढोंग

जहाँ ऐसी फॉर्मल डेमोक्रेसी होती है, वहाँ उसका रूपान्तर देखते-देखते फौजी शासन में हो जाता है। क्या कभी आप मिट्टी का रूपान्तर दही में होते हुए देखते हैं? दूध का रूपान्तर दही में हो सकता है। क्योंकि वे एक-दूसरे के नजदीक हैं। मिट्टी का रूपान्तर दूध में नहीं हो सकता, तो डेमोक्रेसी का रूपान्तर फौजी सत्ता में कैसे हो सकता है? सही बात यह है कि आज असल में डेमोक्रेसी है ही नहीं। इस समय डेमोक्रेसी हो या वेलफेयरिज्म हो या सोशलिज्म, सबका आधार है फौज। जहाँ सबका रक्षण करनेवाला एक ही देवता (फौज) है, वहाँ सारे एक ही हैं। वे चाहे आपस में लड़ें, लेकिन उनमें कोई भी आज हिंसा पर कण्ट्रोल करना चाहे, नियंत्रण करना चाहे, तब भी वह नहीं हो सकता। क्योंकि उन सबका दारोमदार फौज है और सारी सत्ता चन्द लोगों के हाथ में है।

कभी सत्ता इनके हाथ में रहेगी, कभी उनके। कभी नेशनल कान्फरेन्स के हाथ में रहेगी और कभी डेमोक्रेटिक नेशनल कान्फरेन्स के हाथ में। लोग बेचारे अपना नसीब आजमाते रहेंगे।

यह जो डेमोक्रेसी का एक प्रकार का ढोंग चल रहा है, उससे मुक्ति हासिल करनी होगी और लोगों की शक्ति बनानी होगी, तभी शान्ति हासिल होगी।

जम्हूरियत में बादशाहत की नकल

आजकल बादशाहत बढ़ गयी है। जिले के डी. सी. के हाथ में उतनी ताकत होती है, जितनी पुराने जमाने के किसी बादशाह के हाथ में भी नहीं थी। फिर चाहे वह 'डेस्पॉट (तानाशाह) या 'इम्परर' (सम्राट्) ही क्यों न कहलाता हो। और यही सारा डेमोक्रेसी कहलाता है!

प्राइममिनिस्टर (प्रधानमंत्री) लोगों का चुना होता है, लेकिन अपनी कैबिनेट (मंत्रिमण्डल) वह खुद मुकर्रर करता है, उस पर लोगों का कोई खास असर नहीं होता। कहा जाता है कि प्राइममिनिस्टर टीम बनायेगा। कैबिनेट में वह अपने भरोसे के लोगों को रखेगा, जो उसकी हाँ में हाँ मिलायेंगे। अगर वे कुछ दूसरी बात कहेंगे भी, तो दबी जबान से; आखिरी आवाज तो प्राइममिनिस्टर की ही होगी। इसी का नाम है 'टीम'। यह मैं इसी देश की बात नहीं कर रहा हूँ। आज दुनियाभर की जम्हूरियतें बादशाहत की नकल बन गयी हैं। बादशाह ही अपने सरदार तय करते थे और अब मिनिस्टर तय करते हैं। यह सारा 'एफिशेन्सी' (क्षमता) के लिए होता है, बादशाहत में 'एफिशेन्सी' थी। वह अगर जम्हूरियत में न आये, तो वह पनपेगी कैसे? इसीलिए बादशाह की तरह प्राइममिनिस्टर कैबिनेट बनायेगा। क्योंकि उसमें मुख्तलिफ आवाज नहीं होनी चाहिए।

इस तरह बादशाहत की कॉपी (नकल) हो रही है। नाम जम्हूरियत का है, लेकिन ढंग बादशाहत जैसा है। बादशाहत में प्रजा का एक ही काम रहता था। वह यह कि अगर बादशाह अच्छा हो, तो उसकी तारीफ करना और अगर बुरा हुआ, तो उसकी निन्दा करना। औरंगजेब खराब था, तो सब उसे गाली देते थे। अकबर अच्छा था, तो सब उसकी तारीफ करते थे। नसीब में हाकिम अच्छा आया, तो उसकी तारीफ करना, नहीं तो बुराई। यही आम लोगों का काम रहता

था। लेकिन इससे लोगों की अपनी कोई ताकत नहीं बनती। आज की जम्हूरियत में और पुरानी बादशाहत में कोई फर्क नहीं, सिर्फ 'फार्म' में है। उसमें लोगों की कोई तरक्की नहीं हो सकती।

राजनीति से संन्यास लेने की परम्परा कायम हो

एक बात मैंने इन लोगों को बार-बार समझाया है कि कम से कम एक नियम कर दीजिए कि कोई भी राजनीतिज्ञ अमुक अवधि के बाद अपनी जगह पर नहीं रहेगा। वह वहाँ से 'रिटायर्ड' हो जायेगा। हमने यह माना है कि सबसे बड़े जज, जिनका कि मस्तिक सन्तुलित होता है, वे भी 65 साल के बाद 'रिटायर्ड' हो जाते हैं। लेकिन मिनिस्टरों के लिए ऐसी कोई मियाद नहीं है। क्या उनका दिमाग बड़े से बड़े जज से भी ज्यादा पुख्ता है? क्या बुढ़ापे का असर उन पर कुछ नहीं होता? क्यों चिपके रहते हैं? क्या हमारे विधान में ऐसा कोई प्रबन्ध नहीं है कि अमुक साल बाद लोग अपने स्थान पर नहीं रहेंगे? इसका मुझे कोई जवाब नहीं दिया गया। बादशाह और सबको हटा सकता था, अपने-आपको नहीं। वैसा ही अब भी है। इसीलिए यह सारा नाटक चलता है।

भारत की गुलामी मनोवृत्ति

मैं किसी की बेइज्जती नहीं करना चाहता। लेकिन एक मिसाल देता हूँ। राष्ट्रपति की सवारी निकलती है, तब क्या शान होती है ! चाहे जान भले ही जाय, पर शान से सवारी निकाली जाती है। ऐसे हमारे शान-शौकत के खयाल हैं। नतीजा यह हुआ कि राज्य-कारोबार खर्चीला हो गया है और हम लोगों को 'एकॉनॉमी' सिखाते हैं। एक ओर 'ऑस्टिरिटी' (सादगी) की बातें और दूसरी ओर यह सारा खर्च। क्या उनसे सादगी से नहीं रहा जाता? लेकिन विक्टोरिया रानी का वह रोब उठाने के लिए तो कई आदमी चाहिए, यह भावना हमारे दिमाग से अभी तक गयी नहीं है।

वाणी की चोरी सबसे भयानक

कहा जाता है कि डेमोक्रेसी में विरोधी पार्टी रहती है, तो उसका सरकार पर दबाव रहता है और हुकूमत करनेवाली पार्टी गलत काम करने से बचती है। परन्तु समझने की बात यह है

कि जिनके हाथ में हुकूमत रहती है, वे तो सत्ता चाहने वाले होते ही हैं और जो अपोजिशन करने वाले होते हैं, वे सत्ता अपने हाथों में लेना चाहते हैं। यानी सभी का काम सत्ता के ही इर्द-गिर्द चलता है, इससे लोगों की सेवा नहीं बनती, सिर्फ झगड़े होते हैं। इसलिए शुद्ध सेवा नहीं होती और न किसी भी विषय पर निष्पक्ष राय ही प्रकट होती है। आज तो जो भी राय प्रकट करेगा, वह अपने पक्ष के हित के लिए ही करेगा। मान लीजिए, कल अकाल पड़ा, लोग चिल्लाने लगे, तो अपोजिशन करनेवाली पार्टी उसका नाजायज फायदा उठाने की कोशिश करेगी। जब अपोजिट पार्टी का यह रूप होगा, तो हुकूमत करनेवाली पार्टी उससे ठीक उलटी दिशा ग्रहण करेगी। एक पार्टीवाला नेता दूसरी पार्टीवाले को गाली देगा और दूसरी पार्टीवाला पहली पार्टीवाले को। दोनों की बातें जनता सुनेगी, तो वह उन दोनों की निन्दा करेगी। फिर किसी के भी शब्दों पर लोगों का भरोसा नहीं रह जायेगा। जहाँ शब्दों पर से विश्वास उठा, वहाँ व्यवहार-शुद्धि नहीं रह सकती। मनु महाराज ने कहा है : '**वाच्यार्था निहिताः सर्वे वाङ्मूला वाङ्विनिःसृताः**'। जिसने वाणी की चोरी की, उसने सब कुछ चोरी कर ली। इसलिए यह जरूरी है कि एक-दूसरे के शब्दों पर विश्वास किया जाय। जहाँ लोगों का भरोसा उठा, वहाँ देश की परिस्थिति अच्छी नहीं रह सकती। बड़े-बड़े नेता जोड़ने का काम नहीं करते, तोड़ने का काम करते हैं। तब देश की ताकत कैसे बढ़ सकती है?

लोकतंत्र में शब्दों पर विश्वास हो

हम 'सोपोर' गये थे, जो एक सियासी मरकज है। वहाँ हमने कहा था कि 'पार्टी इन पावर' (अधिकारारूढ़ पार्टी) गलतियाँ नहीं करती, ऐसा नहीं। लेकिन उन गलतियों को वह कबूल नहीं करती। अपनी सरकार की आलोचना नहीं करती। जाहिरा तौर पर बोल नहीं सकती। उसके मुँह पर ताला लगा है। इधर विरोधी पार्टी वालों का मुँह खुला हुआ है, इसलिए वे चाहें तो बक सकते हैं। इससे नतीजा कुछ नहीं निकलता। अधिकारारूढ़ पार्टी अपनी गलतियाँ जाहिरा तौर पर कबूल नहीं करतीं। इसलिए मैंने वहाँ सुझाव रखा कि सरकार वालों को चाहिए कि वे अपने मुँह

का ताला थोड़ा खोलें और कुछ गलतियाँ हों, तो आलोचना करें, कन्स्ट्रेक्टिव क्रिटिसिज्म (विधायक आलोचना) करें। दूसरी पार्टीवालों से मैं कहना चाहता हूँ कि तुम्हारा मुँह खुला है, इसलिए जरा जब्त रखो। लेकिन आज होता क्या है? न तो उनका ताला खुलता है और न इनके मुँह पर जब्त होता है। बढ़ा-चढ़ाकर बातें की जाती हैं, इसलिए विरोधी पार्टी कैरेक्टिव (सुधारने वाली ताकतें) नहीं बनती। जो लोग हुकूमत में होते हैं, वे बँधे रहते हैं। इस वास्ते एक ऐसी जमात चाहिए, ऐसा एक समाज चाहिए जो सियासत से अपने को अलग रखे और गाँव-गाँव जाकर लोगों की खिदमत करे और उनकी रूहानी ताकत खड़ी करे। ऐसी ताकत बनाने की हिम्मत करोगे, तो प्रत्यक्ष लोकतंत्र आयेगा।

लोकतंत्र में देश के अनुरूप परिवर्तन जरूरी

यूरोप से हमने प्रजातंत्र का नमूना लिया। वह ज्यादातर इंग्लैण्ड का ही नमूना है। किन्तु यहाँ की और इंग्लैण्ड की हालत में कितना फर्क है, इसे देखिए। वहाँ एक ही अंग्रेजी जबान है। यहाँ हमारे देश में तरह-तरह की 14 राष्ट्रीय जबानें हैं। इनके अलावा जिन्हें 'बोलियाँ' कहते हैं, ऐसे भी कुछ हैं। किन्तु उधर यूरोप में एक-एक भाषा का एक-एक राष्ट्र है। यहाँ हिन्दू, इस्लाम, ईसाई, बुद्ध, पारसी, यहूदी जैसे अनेक धर्म हैं। लेकिन इंग्लैण्ड में एक ही धर्म है और वह है, ईसाई-धर्म। यहाँ अनेक जातियाँ हैं। लेकिन इंग्लैण्ड में जाति-भेद नहीं है, इसलिए यहाँ की और वहाँ की हालत में बहुत फर्क है। इंग्लैण्ड ने 200-300 साल बहुत पराक्रम किया और जगह-जगह से वहाँ सम्पत्ति का झरना बहने लगा। उन्होंने बड़ी-बड़ी इण्डस्ट्रीज बनायी, देश को मालामाल बनाया। इस तरह इंग्लैण्ड की तुलना में तो हिन्दुस्तान बहुत ही गरीब देश है। फिर भी वहाँ की लोकशाही का तरीका हमने ठीक वैसा ही (ज्यों का त्यों) उठा लिया। यह सच है कि शासन-पद्धतियों में सबसे बढ़कर तरीका लोकशाही का है, फिर भी हरएक की अपनी-अपनी अलग हालत होती है। उसे देखकर उसमें कुछ न कुछ फर्क करना चाहिए। वैसा न करें और जैसा का तैसा नमूना ही उठा लें, तो लोकशाही की मुश्किलें, तकलीफें, दुश्वारियाँ सामने आ

जाती हैं, फैसले जल्दी नहीं होते और काम में देर होती है। कई सवाल खड़े हो जाते हैं, और उसमें काफी वक्त जाता है। आधुनिक विज्ञान के जमाने में खोने के लिए इतना वक्त नहीं होता। इसलिए अपने देश की परिस्थिति देखकर लोकशाही में बदल करना और उसे अपने अनुकूल बनाना होगा। मैं मानता हूँ कि हम इसमें तब्दीली करेंगे, लेकिन इसमें कुछ समय जायेगा।

गैरजानिबदार सेवकों की जरूरत

डेमोक्रेसी में मुखालिफत करनेवाली पार्टी की जरूरत रहेगी। फिर भी एक ऐसी तटस्थ, गैरजानिबदार जमात होनी चाहिए जो सरकार की गलतियों को उसके सामने तटस्थ भाव से रख सके और लोगों के सामने भी रख सके। यह जमात सियासी पार्टी से अलग रहेगी। अगर अलग न रही, तो देश की ताकत नहीं बन सकेगी।

मैं जो गैरजानिबंदार लोगों की बात कह रहा हूँ, वह सियासी पार्टीवाले भी महसूस करते हैं। इसीलिए तो राष्ट्रपति, असेम्बली के स्पीकर, सरकारी नौकर, हाईकोर्ट के जज, शिक्षक और फौज आदि के लोग गैरजानिबदार हों, ऐसा तय है। क्या आप पसन्द करेंगे कि फौज किसी एक पार्टी की हो? नहीं चाहे राज्य कांग्रेस का हो या और किसी का, फौज तो गैरजानिबदार ही होनी चाहिए। शिक्षक, जज, कर्मचारी भी गैरजानिबदार ही होने चाहिए। आज है या नहीं है, यह अलग बात है। इस समय जिस पार्टी की सरकार होती है, उस सरकार का उन सभी लोगों पर असर होता है। इसे हम नहीं भूल सकते।

काश, ऐसा हुआ होता!

गांधीजी चाहते थे कि कांग्रेस गैरजानिबदार संस्था होकर काम करे। जिस दिन वे गये, उस दिन उन्होंने अपनी यह इच्छा लिखी थी कि कांग्रेसी लोक-सेवक संघ में पुष्पित एवं फलित हो। वह सियासी पार्टी न रहकर गैरजानिबदार जमात बन जाय और सत्ता पर तथा समाज पर नैतिक अंकुश रखे। गांधीजी ने कहा, लेकिन उनके साथियों को यह बात जँची नहीं। मैं उन्हें भी

दोष नहीं देना चाहता। हरएक के सोचने का ढंग होता है और हरएक का दिमाग भी अलग होता है। उस समय देश में परिस्थिति भी कुछ ऐसी थी कि वैसी परिस्थिति में शायद हममें यह काम करने की शक्ति नहीं है, ऐसा गांधीजी के साथी महसूस कर रहे थे। इसीलिए उन्होंने बापू की इच्छा के अनुकूल कदम नहीं उठाया होगा। खैर, अगर गांधीजी की बात मानी होती, तो कांग्रेस आज सेवापरायण संस्था होती और अपने निष्पक्ष बयानों से नैतिक असर डालनेवाली जमात बनती। वह आज नहीं बन सकी है और जिसका बनना निहायत जरूरी है। सियासी नेता दिलों को जोड़ने का नहीं, दिलों को तोड़ने का ही काम करते हैं।

हिन्दुस्तान पुरानी सियासत के रास्ते पर चलता रहेगा, तो देश की ताकत नहीं बनेगी। इसलिए सियासत से अलग होकर एक ऐसी जमात बनानी चाहिए, जो अलग- अलग पार्टियों के बीच जहाँ भी घर्षण हो, वहाँ तेल डाल सके, स्नेह दे सके। सेवापरायण, सत्यनिष्ठ और स्नेह बढ़ानेवाली जमात के लोग तटस्थ होकर हुकूमत करनेवाली पार्टी की तथा दूसरी पार्टियों की गलतियाँ बतायेंगे और सहानुभूति पूर्वक उन्हें सुधारने की कोशिश करेंगे, तो देश में एक नैतिक ताकत बनेगी।

राजनीति के बदले लोकनीति

मैं मानता हूँ कि हमारा दिल भी हम बड़ा बनायेंगे, तब दुनिया में अमन और शान्ति होगी। मुख्य बात यह है कि लोगों को, अवाम को अपनी ताकत महसूस करनी चाहिए। आज होता यह है कि जिस सरकार को आपने चुना है, उसे पाँच साल के लिए खिदमत करने के लिए चुना है। सरकार चलानेवाले आपके नौकर हैं, लेकिन जब इस नौकर के नौकर का नौकर (पुलिस) गाँव में जाता है, तो जनता घबराती है। गाँव के लोग बादशाह हैं और सरकार है नौकर। लेकिन बादशाह नौकर से डरता है। यह मैं सिर्फ कश्मीर की बात ही नहीं कर रहा हूँ, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में भी यही चल रहा है।

साइन्स के जमाने में सियासत से अलग रहकर रूहानियतवाली जनशक्ति, लोकशक्ति हम खड़ी करें। इसे मैं सर्वोदय की भाषा में रखूँ, तो कहूँगा कि राजनीति के बदले अब हमें लोकनीति लानी चाहिए।

•

13. जय-जगत् का कौल

कश्मीरियों का खूबसूरत दिल

कश्मीर-वादी में हमें जो अनुभव आया, उससे यही महसूस किया कि कश्मीर-वादी के लोग ठण्डे मिजाज के हैं, गरम मिजाज के नहीं। वैसे चन्द लोग तो गर्म मिजाजवाले होते ही हैं। उनके बिना जिन्दगी में जायका नहीं रहता। जैसे मीठी ही चीज ज्यादा हो, तो उसके साथ थोड़ी-सी मिर्च, थोड़ा-सा कडुआपन चल जाता है, क्योंकि बाकी सारा मीठा ही मीठा मामला होता है। ऐसा ही अनुभव हमें कश्मीर- वादी में आया। मैंने देखा कि लोगों में बहुत प्यार है, किसी प्रकार की कौमियत का खयाल नहीं है। वैसे चन्द लोग जो सियासत में पड़े हैं, उनकी बात छोड़ देता हूँ लेकिन आम लोग मेहमान नवाज हैं, इन्सानियत को परखने वाले हैं, रूहानियत की कद्र करने वाले हैं और खूबसूरत दिल वाले हैं।

हिन्दुस्तान पर प्यार : दुनिया पर प्यार

हिन्दुस्तान के साथ तुम्हारा प्यार है। वह प्यार कायम रहे और बढ़े, यह मैं चाहता हूँ। लेकिन हिन्दुस्तान और दुनिया में कोई फर्क मत करो। क्योंकि हिन्दुस्तान में एक ही जमात नहीं है, मुख्तलिफ जमातें, मजहब वगैरह हैं। कश्मीर में हिन्दुओं के लिए अमरनाथ का मन्दिर है, राजस्थान में मुसलमानों के लिए अजमेर का दरगाहशरीफ है और बौद्धों के लिए बोधगया और सारनाथ हैं। ईसाइयों के लिए केरल में सेंट टॉमस का मौंट है। ईसामसीह के पहले शिष्यों में से एक शिष्य टॉमस हिन्दुस्तान में आया था और यहीं मरा। इस तरह हिन्दुस्तान में मुख्तलिफ जमातें रही हैं, इसलिए हिन्दुस्तान पर प्यार करने का मतलब है, दुनिया पर प्यार करना। हिन्दुस्तान मुख्तसर, थोड़े में दुनिया ही है। इसलिए हिन्दुस्तान पर हम प्यार करेंगे, तो कौमियत में गिरफ्तार नहीं होंगे, क्योंकि यह वसी देश है।

तिब्बतियों को पनाह देना भारत का धर्म

दस हजार साल का पुराना इतिहास हमारे पीछे है। यहाँ सैकड़ों जमातें आयी हैं, अब भी आ रही हैं। अभी आपने देखा कि तिब्बत से लोग डर के मारे भागे और इन्हें कहाँ पनाह मिली ? हिन्दुस्तान में। उनकी सियासत से हमें कोई ताल्लुक नहीं है, लेकिन वे मारे जा रहे थे, भाग रहे थे और पनाह चाहते थे, तो हमने पनाह दी। यह चीज चीनवालों को ठीक नहीं लगी। लेकिन मैं चीनवालों से कहना चाहता हूँ कि मेरे देश की इज्जत इसके साथ जुड़ी हुई है। यह मेरा देश वह देश है, जिसने गौतम बुद्ध को जन्म दिया। यह देश किसी से दुश्मनी करनेवाला नहीं है। इसलिए चीनवालों के साथ इसका वही प्रेम रहेगा, जो पुराने जमाने से चला आ रहा है। लेकिन हम तिब्बत के लोगों को पनाह नहीं देते, तो हम इन्सानियत को खोये हुए साबित होते।

पुराने जमाने में यहाँ ईरान से पारसी लोग भागकर आये। करीब 13 सौ साल पहले की बात है। वे बम्बई के किनारे उतरे और उन्हें यहाँ पनाह मिली। आज दुनिया में पारसी करीब एक लाख होंगे और वे हिन्दुस्तान में हैं। उनका एक मजहब है, जिसे जरथुस्त का धर्म कहते हैं। वे लोग हिन्दुस्तान में हमलावर बनकर नहीं आये थे, पनाह माँगने आये थे, तो हमने उन्हें पनाह दी। उनकी सियासत से हमारा कोई वास्ता नहीं था, हमारा तो इन्सानियत से वास्ता था। वे आफत में थे और भागकर आ रहे थे, इसलिए हमने उन्हें जगह दी। भारत देश का मतलब ही है— सबका भरण करनेवाला देश। इसलिए इस देश के दरवाजे सबके लिए खुले हैं। हमने तिब्बतवालों को इसीलिए पनाह दी।

मैं चीन को यकीन दिलाना चाहता हूँ

मैं चीनवालों को यकीन दिलाना चाहता हूँ कि गौतम बुद्ध का पैगाम उठाने के लिए कूबत के साथ कोई देश राजी हो, तो हिन्दुस्तान राजी है और कोई देश राजी हो या न हो। गौतम बुद्ध का पैगाम हिन्दुस्तान ने जितना माना, शायद ही किसी देश ने माना होगा। अहिंसा की बात

हिन्दुस्तान में जितनी पनपी, उतनी शायद ही दूसरे किसी देश में पनपी होगी। यह बात यहाँ के लोगों के खून में जितनी गहरी पैठी है, उतना दूसरे देश में दिखायी नहीं देती। मैं फख्र के साथ कहना चाहता हूँ कि यहाँ से बुद्ध भगवान् की नसीहत लेकर जो मिशनरी बाहर गये थे, वे फौज लेकर नहीं गये। वे तिब्बत, चीन, जापान, हिन्दएशिया, मंगोलिया, लंका, स्याम, बर्मा वगैरह देशों में गये, तो उन्होंने वहाँ पर अपनी हुकूमत कायम नहीं की; बल्कि वे वहाँ इल्म और प्यार लेकर गये और इसी तरह से चीन से यहाँ यू. एन. त्संग जैसे बड़े-बड़े यात्री आये। इसलिए चीन वालों के साथ हमारे ताल्लुक कभी नहीं बिगड़ सकते हैं। मेरी आत्मा, हिन्दुस्तान की आवाज चीन वालों को यह यकीन दिलाना चाहती है, लेकिन हमने तिब्बतवालों को पनाह दी, तो इन्सानियत के लिए दी, इसको वे समझें।

'जय-जगत्' भारत के लिए स्वाभाविक चीज

भारत इण्टरनेशनल नेशन (अन्तर्राष्ट्रीय राष्ट्र) है, मामूली राष्ट्र नहीं। दस साल में हम इतने आगे बढ़े कि आज यहाँ का बच्चा-बच्चा 'जय-जगत्' बोलने लगा है। यूरोप के लोग जब इस बात को सुनते हैं, तो उन्हें खुशी और ताज्जुब मालूम होता है कि हिन्दुस्तान के बच्चे किस तरह यह वसी खयाल कबूल कर सकते हैं! मैं कहना चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान के बच्चे 'जय-जगत्' इसलिए कबूल करते हैं कि ऋषि-मुनियों का, नबियों का पैगाम यहाँ की हवा में फैला है। इसलिए हिन्दुस्तान का बच्चा छोटी बात मुश्किल से समझ सकता है। मैं दूसरे देश से अलग हूँ, इसे नहीं समझ सकता। लेकिन मैं कुल दुनिया का हूँ और दुनिया हमारी है, इस बात को आसानी से समझ सकता है। सर्वोदय का मकसद यही है कि वह देश-देश के बीच जो दीवारें खड़ी की गयी हैं, उन्हें तोड़ना चाहता है। जैसे आज हम हिन्दुस्तान के एक सूबे से दूसरे सूबे में जा-आ सकते हैं, प्यार से कहीं भी रह सकते हैं, तिजारत कर सकते हैं, दर्शन के लिए, इल्म पाने के लिए जा सकते हैं, वैसे ही दुनिया में इन्सान कहीं भी जा-आ सकता है, यही हमें करना है। जब तक यह

नहीं होगा, तब तक सर्वोदय माननेवाले लोग चैन नहीं पा सकते। इसलिए देखते-देखते हम 'जय हिन्द' से 'जय-जगत्' तक पहुँच गये। इतनी वह चीज फितरती है।

दिल पुराना, दिमाग नया

'जय जगत्' यानी क्या? 'सारी दुनिया की जय हो।' एक के 'जय' में दूसरे की भी 'जय' हो। सबकी 'जय' हो। 'जय जगत्' में 'जय हिन्द' भी आ गया, 'जय कश्मीर' भी आ गया। अगर आप उतनी कोशिश करेंगे, तो 'जय जगत्' में 'जय श्रीनगर' भी आयेगा। यह सिर्फ बोलने की बात नहीं, करने की है। इसके लिए क्या करना होगा? आज हमारा दिमाग बहुत बड़ा बना है, पर दिल छोटा है। इसलिए दिल भी उतना बड़ा बनाना होगा। आज ये जो सारे झगड़े चल रहे हैं, वे सब बड़े दिमाग और छोटे दिल की पैदाइश हैं। उसी के कारण जद्दोजहद और कशमकश चल रही है। इस समय दिमाग है 'मॉडर्न' और दिल रह गया है पुराना— संग और तंग !

एक जमाना था, जब दुनिया के एक कोने में क्या होता था, यह दूसरे लोग नहीं जानते थे। अकबर के दरबार में इंग्लैण्ड के एक भाई आये, तब उसे पता चला कि इंग्लैण्ड नाम का भी कोई देश है। और आज ? एक स्कूल के बच्चे को अकबर बादशाह से भी भूगोल का ज्यादा ज्ञान होता है। हमारा दिमाग इतना बड़ा बन गया है। जापान 'फार ईस्ट' और अमेरिका 'फार वेस्ट' कहलाता था। बिलकुल दो सिरों में थे दोनों, लेकिन आज वे पड़ोसी बन गये हैं। दोनों के बीच में सिर्फ 12 हजार मील लम्बा समुद्र है। जो समुद्र तोड़ने का काम करता था, वही आज जोड़ने का काम कर रहा है। एक जमाने में जो चीज तोड़नेवाली थी, वही आज जोड़नेवाली बन गयी है। आज हमारा, दुनिया का ज्ञान भी बढ़ा है।

यह जमाना 'साइन्स' (विज्ञान) का है। आये दिन साइन्स बढ़ रहा है। जिस जमाने में कुत्ता भी हजारों मील ऊपर जाता है, उस जमाने में आदमी इतना नीचे, जमीन पर ही रहेगा? हिन्दू, मुसलमान, ऐसे फिरके बढ़ायेगा?

कुल मानव-समाज एक करना है

हम 'जय जगत्' कहते हैं। यह कोई आज की बात नहीं है। कुछ साल पहले आजाद-हिन्द सेना के एक भाई मुझसे मिलने आये थे। उन्होंने 'जय हिन्द' कहा, तो मैंने जवाब में कह दिया 'जयहिन्द, जय दुनिया, जय हरि'। यूरोप के लोगों को ताज्जुब होता है और खुशी भी होती है कि हिन्दुस्तान में बच्चा-बच्चा कहता है कि 'सारी दुनिया की जय हो'। क्या दुनिया के दूसरे किसी देश में यह चलता है? वहाँ तो हर कोई अपने-अपने देश की जय बोलता है। सिर्फ हिन्दुस्तान का काम करने से हमारा काम पूरा नहीं होगा, बल्कि हमें कुल मानव-समाज को एक करना है।

कुरआन में कहा है— 'उम्मतुम् वाहिद' यानी तुम सब एक जमात हो। इसी मकसद के लिए भूदान एक बहाना बन गया है। इस तरह की किसी बाहरी चीज, बिना अन्दरूनी चीज दिल में पैठती नहीं। आपके दिल को प्रसन्न करने के लिए हम फूल, फल जैसी कोई बाहरी चीज देते हैं, तो प्रेम की पहचान हो जाती है। छह लाख लोगों ने दान दिया, तो मैं जान गया कि उन्होंने हमारा प्रेम का सन्देश कबूल किया। नहीं तो मैं कैसे जानता? बड़ी खुशी की बात है कि जम्मू-कश्मीर में भी लोग प्रेम से दान दे रहे हैं और शान्ति-सेना में नाम दे रहे हैं। हमारी असली चीज बाहर आ रही है और 'जय जगत्' का कौल मंत्र हिन्दुस्तान कबूल कर रहा है।

हिन्दोस्ताँ ही नहीं, सारा जहाँ हमारा

आसमान से आफत उतरती है, तो सभी पर उतरती है। कुरआनशरीफ में 'तूफाने-नूंह' का किस्सा आता है। नूह एक बड़े पैगम्बर थे, जो सबको अच्छी नसीहत देते थे। लेकिन लोगों ने उनकी बात नहीं मानी, तो एक बड़ा सैलाब आया। फिर अल्लाह ने लोगों से पूछा कि तुम नूह की सुनते हो या 'तूफ़ाने-नूह' की ? कदीम जमाने की यह कहानी ध्यान में लेने की है। जाति, मजहब, सूबा, मुल्क वगैरह भेदों का खयाल नहीं होना चाहिए। इन्सान का ही खयाल होना चाहिए। इसीलिए हम 'जय जगत्' कहते हैं। सिर्फ हमारे देश की ही जय नहीं, बल्कि दुनिया की जय !

बड़ी खुशी की बात है कि गाँव-गाँव के लोग हमारी बात समझते हैं और यहाँ के बच्चे भी 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा' के साथ-साथ गाते हैं 'सारा जहाँ हमारा'। हमें समझना चाहिए कि हम सारे जहाँ के हैं। यह ठीक है कि हम जहाँ बसते हैं, वहाँ हमें अड़ोस- पड़ोस के लोगों की खिदमत करनी चाहिए। लेकिन हमारा दिल इतना वसी होना चाहिए कि उसमें कुल दुनिया के लिए गुंजाइश हो।

'जय जगत्' मंत्र है

'जय जगत्' यह कोई नारा नहीं है। नारे एक-दूसरे के साथ टकराते हैं। इसलिए यह नारा नहीं, बल्कि अरबी में जिसे 'कौल' कहते हैं या संस्कृत में 'मंत्र' कहते हैं, वह है। जैसे गायत्री मंत्र, अल्लाफातिहा मंत्र, 'विस्मिल्ला हि र्रहमान, निर्रहीम' यह मंत्र है, ऐसे ही 'जय जगत्' मंत्र है, 'कौल' है। 'जय जगत्' के पेट में 'जय हिन्द', 'जय कश्मीर', 'जय गाँव' सब आ जाता है। पुराना तरीका यह था कि एक ही जीत में दूसरे की हार होती थी। लेकिन अब हमने नया तरीका निकाला है, जिसमें आपकी, हमारी, सामने वाले की, सबकी जीत ही होती है। इसलिए सर्वोदय का कौल है 'जय जगत्' ।

.

14. जवान मेरा रूहानी सैलाब कबूल करें

ऊपर देखने से हसद, नीचे देखने से रहम

इन्सान का अपना-अपना नजरिया होता है। जब इन्सान ऊपर देखता है, तो उसके दिल में हसद, जलन, ईर्ष्या पैदा होती है। लखपती, करोड़पती की तरफ देखता है, तो दुखी होता है। वह सोचता है कि मेरे पास तो सिर्फ लाख ही रुपये हैं। दूसरे के पास करोड़ रुपये हैं। वह कितना खुशहाल है। इस तरह वह अपने को कमजोर पाता है और उसके मन में हसद पैदा होती है। जो शख्स नीचे की तरफ देखता है, उसे दुखी जमात दिखायी देती है। वह देखता है कि लोग कितने गरीब हैं, गये-बीते हैं। उनकी फिक्र करने वाला कोई नहीं है, तो वह समझता है कि इनसे मैं बहुत खुशहाल हूँ। मुझे 50 रुपये मिल रहे हैं। दुनिया में कई लोग ऐसे हैं, जिन्हें कुछ भी नहीं मिलता है। यों सोचकर वह अपने 50 रुपये में से 5 रुपये खैरात के लिए निकालता है। इस तरह नीचे देखने से 50 रुपयेवाले के दिल में हमदर्दी, रहम पैदा होती है और ऊपर देखने से 5 लाख पानेवाला भी दुखी होता है।

कुरआनशरीफ़ में कहा है— '**मिम्मा रज़क़नाहुम् युन्फ़िकून**'। अल्लाह ने तुम्हें जो भी रिज्क दिया है, उसमें से थोड़ा हिस्सा दूसरों को देना चाहिए। वह अपना फर्ज है।

पहाड़ पर पानी गिरता है, तो नीचे की तरफ जाता है। दुनिया का कुल पानी सबसे नीचे जो समुद्र है, उसकी तरफ दौड़ता है। यहाँ का पानी यह नहीं सोचता है कि समुद्र की तरफ जाना तो पहाड़वाले पानी का काम है, मेरा नहीं। पानी की यह सिफत हमें लेनी चाहिए। जैसे पानी हमेशा निचान की तरफ दौड़ता है, वैसे ही हमें उससे सबक लेना चाहिए कि हमें भी समाज में जो सबसे दुखी हैं, गरीब हैं, उनकी इमदाद में दौड़ना चाहिए। मुझे दो रोटी की भूख है और मेरे पास एक ही रोटी है, तब भी उसमें से एक टुकड़ा दूसरे को देना चाहिए और फिर बची हुई रोटी खानी चाहिए, यही इन्सान का फर्ज है। इसी में इन्सानियत है। अगर ऊपर देखा करोगे, तो दिल

में खयाल आयेगा कि हमें और ज्यादा मिलना चाहिए। इस तरह हवस को बढ़ाते जाना— यह इन्सानियत नहीं है। यह तो इन्सान के जिस्म में छिपी हुई हैवानियत है।

एक बनकर कुदरती सैलाब रोकें

आपको समझना चाहिए कि कश्मीर की बड़ी आजमाइश होनेवाली है। मैं मानता हूँ अल्लाह हम सभी की आजमाइश करता है। यहाँ सैलाब आया था। लोगों की क्या हालत हुई, यह मैं देख आया हूँ। सैलाब का मुकाबला करने के लिए जितने भी पार्टीवाले हैं, उन सबको एक होना चाहिए। मैं अभी पीर-पंचाल लाँघकर आया हूँ। वहाँ की तसवीर मेरे सामने है कि वहाँ पर कितनी गुर्बत है। एक पार्टी के भाइयों ने मुझसे कहा कि हम सहयोग देना चाहते हैं, लेकिन हुकूमत वाली पार्टी उसे लेती नहीं। उस (हुकूमत वाली) पार्टी वाले कहते हैं कि हम सहयोग लेना चाहते हैं, लेकिन कोई देते नहीं। दोनों इकट्ठा होकर बोलें, तो कुछ होगा। सैलाब का मुकाबला करने के लिए आपको अपने तफरके (भेदभाव) मिटाने चाहिए और गरीबों की खिदमत में जाना चाहिए। अगर आपने ऐसा नहीं किया, तो कहना पड़ेगा कि आपने अपना फर्ज अदा नहीं किया।

मेरा रूहानी सैलाब कबूल करें

दूसरा सैलाब मेरा है, जो कहता है कि आपके मसले सियासत या मजहबी तरीके से हल होनेवाले नहीं हैं, बल्कि रूहानियत से हल होंगे। इस पर आप गौर करें कि मैं सही कह रहा हूँ या नहीं? क्या आपके जो सियासत और मजहबी तरीके चल रहे हैं, उनसे आपकी ताकत बढ़ सकती है? आप मुत्तहिद (संयुक्त) हो सकते हैं? मैं कहना चाहता हूँ कि इन सियासी और मजहबी तरीकों से आपकी ताकत हरगिज नहीं बढ़ सकती। हम आपस में लड़ते-झगड़ते रहेंगे, तो दुनिया में उन्हीं की हुकूमत रहेगी, जिनके हाथ में आणविक शस्त्र हैं। हम उनके हाथ की कठपुतली की तरह रहेंगे। आजादी का नाम भले ही रहे, लेकिन दूसरे देशों का ही कब्जा रहेगा। हम उस रास्ते से जायेंगे, तो हम पर किसी न किसी का कब्जा होगा। नाम तो रहेगा आजादी का, लेकिन रूप होगा

गुलामी का। इस पर आप सोचिए। इसलिए हमें छोटे-छोटे तफरके और छोटी-छोटी गलतियाँ छोड़कर सारे समाज को इकट्ठा होना चाहिए; यह जो मेरा रूहानी सैलाब है, उसे आपको कबूल करना होगा और दूसरा जो सैलाब आया है, उसका मुकाबला करना होगा।

रूहानी ताकत या गुलामी

आप एक-दूसरे से प्यार करने के बजाय नफरत करते रहेंगे, तो 'जय जगत्' कैसे होगा? तब न 'जय जगत्' होगा न 'जय हिन्द' और न 'जय कश्मीर'। बल्कि 'हार कश्मीर', 'हार हिन्द' एवं 'हार जगत्' होगा। 'जय कश्मीर !', 'जय हिन्द !' और 'जय जगत्' तब होगा, जब हम सबके दिल एक होंगे।

हमें सोचना चाहिए कि हम कौन-सी ताकत बना सकते हैं। क्या हम अमेरिका के मुकाबले की माली ताकत बना सकते हैं? जब कि हिन्दुस्तान में हर आदमी के पीछे 3/4 एकड़ जमीन है और अमेरिका में 12 तथा रूस में 15 एकड़, तो हम कभी भी उनके मुकाबले की माली ताकत नहीं बना सकते और न फौजी ताकत ही बना सकते हैं। तब हम कौन-सी ताकत बना सकते हैं? अखलाकी व रूहानी ताकत। लेकिन अगर आप वह नहीं बनाना चाहते, तो लिख रखिए कि आपको कायम रहने के लिए गुलाम बने रहने के सिवा और कोई चारा नहीं रहेगा।

नयी तौहीद : इन्सान एक है

आपको समझना चाहिए कि हिन्दुस्तान के लोग ज्यादा आगे बढ़े हुए हैं और यूरोप के लोग पिछड़े हैं। श्रीनगर में शंकराचार्य के नाम से एक पहाड़ है। शंकराचार्य केरल का यानी हिन्दुस्तान के बिलकुल जनूबी सिरे का शख्स था। 1200 साल पहले वह यात्रा करने के लिए श्रीनगर आया था और उस पहाड़ पर उसने भगवान् शंकर की एक मूर्ति स्थापित की। वह पैदा हुआ केरल में और उसकी वफात हुई हिमालय में। इस तरह सारे हिन्दुस्तान को हमने एक माना था, इसीलिए जगह-जगह जियारत की जगहें बनीं। यूरोप के लोगों को अभी यह करना बाकी है कि हम सब

यूरोपीय एक हैं। लेकिन सिर्फ यूरोपीय एक हैं, ऐसा होने से भी दुनिया का काम नहीं बनेगा। बल्कि यूरोपियन, एशियन— हम सारे एक हैं, हम सब इन्सान हैं, ऐसा करना होगा। कुरआनशरीफ ने एक बात सिखायी है— 'अल्लाह हुवहद' यानी अल्लाह एक है। अब इसी तरह नयी तालीम देनी होगी कि इंन्सान एक है— 'इन्सान हुवहद'। पुरानी तौहीद है कि अल्लाह एक है, नयी तौहीद है कि इन्सान एक है। उसके लिए लफ्ज कुरआनशरीफ में मिलेगा। हिन्दू, बौद्ध, ईसाई, वगैरह, सब मजहबों की किताबों में मिलेगा। यह सब किताबों में लिखा है, लेकिन हम किताबें पढ़ते नहीं, सिर्फ किताबों का गुरूर बना हुआ है।

किताबें तोड़ने वाली नहीं हैं

दरअसल जो चीजें जोड़नेवाली थीं, उन्हें हमने तोड़नेवाली बनाया है। मैं कुरानवाला, तुम बाइबिलवाले, मैं अलग, तुम अलग। यहाँ तक होता है कि खाने-पीने के लिए तो सब इकट्ठा होते हैं, लेकिन अल्लाह का नाम लेने का मौका आने पर यह इधर जाता है, तो वह उधर। यानी यह अल्लाह ही ऐसा कम्बख्त निकला कि उसके नाम से हम अलग हो जाते हैं। अल्लाह तो सबको जोड़ने वाला है। किताबें सबको जोड़ने के लिए आयी थीं, लेकिन हमने उन्हें तोड़ने वाली बनाया। अल्लाह ने साइन्स के जरिये एक करामात की है। जो चीजें पहले तोड़ने वाली थीं, उन्हीं को अब जोड़ने वाली बना दिया है। जापान और अमेरिका पहले बिलकुल अलग थे। प्रशान्त महासागर ने उन्हें तोड़ा था। आज उसी समुन्दर ने उन दोनों को जोड़ दिया है। जो समुन्दर पहले तोड़ने वाला था, वही अब जोड़नेवाला बन गया है। लेकिन हम ऐसे कम्बख्त हैं कि जो किताबें जोड़ने वाली थीं, उन्हीं को हमने तोड़ने वाली बनाया। कुरआनशरीफ में कहा है कि हम किताबों में फर्क नहीं करते। किताबों की एक-दूसरे के साथ टक्कर नहीं हो सकती। जिस जमाने में तोड़नेवाला समुन्दर भी जोड़ने वाला बना, उस जमाने में आप अल्लाह का और किताबों का नाम लेकर एक-दूसरे का दिल तोड़ेंगे, तो क्या टिक सकते हैं? ये सियासतदाँ लोगों में जज्बा पैदा करते हैं और उस जज्बे के सरमाये पर, पूँजी पर अपनी सारी तिजारत चलाते हैं।

दिमाग ठंडा रखिए

मैं कहना यह चाहता हूँ कि विज्ञान के जमाने में यह बात बहुत खतरनाक है कि हम जज्बा पैदा करें। इस जमाने में जज्बा कतई पैदा नहीं करना चाहिए, ठंडे दिमाग से सोचना चाहिए। दिल में जोश रहे, क्योंकि उसके बिना कोई काम नहीं कर सकता। लेकिन उसके साथ दिमाग में होश भी रहे। लेकिन यहाँ तो दिल में भी जोश और दिमाग में भी जोश है। जिस गाड़ी को गार्ड का डिब्बा ही न हो, दोनों तरफ इंजन ही हो, तो वह गाड़ी कहीं भी गिर सकती है। जब इंजन के साथ गार्ड भी हो, तो वह गाड़ी को बराबर काबू में रखता है। वैसे ही इन्सान को अपने पर जब्त रखना चाहिए और दिमाग बिलकुल ठंडा रखना चाहिए।

हिन्दुस्तान : दुनिया की छोटी शक्ल

आज एक भाई हमसे पूछने लगे कि कश्मीर के मसले के बारे में आपकी क्या राय बनी है? मैंने कहा कि कश्मीर का मसला वहीं है, जो हिन्दुस्तान का मसला है। वह यही कि यहाँ मुख्तलिफ जमातें रहती हैं। लेकिन यह कोई मसला नहीं है। यह हमारी खूबसूरती है, खुसूसियत है, खूबी है, बशर्ते हम खालिस प्यार करना सीखें। वह देश कमनसीब है, जिसमें मुख्तलिफ जमातें नहीं हैं। ऐसे देश विज्ञान के जामने में बहुत ज्यादा तरक्की करनेवाले नहीं हैं। हिन्दुस्तान की यह खूबी है कि वह कुल दुनिया का एक नमूना है, सिर्फ इसलिए नहीं कि दुनिया की आबादी का छठा हिस्सा या सातवाँ हिस्सा यहाँ है, बल्कि इसलिए कि जैसे दुनिया में मुख्तलिफ जमातें हैं, वैसे ही हिन्दुस्तान में भी हैं। कुल दुनिया की एक छोटी-सी शक्ल में हिन्दुतान है। इसलिए हमारा दिल वसी होना चाहिए, तंग नहीं। अगर बड़े देश में हम दिल तंग रखकर रहना चाहेंगे, तो झगड़ों के सिवा कुछ नहीं होगा, हमारी तरक्की नहीं होगी, हम तबाह हो जायेंगे। लेकिन अभी अपने यहाँ देखा कि अमरनाथ-यात्रा हिन्दुओं की होती है, इसलिए हिन्दू वहाँ जाते हैं, फिर भी जितने मजदूर उनकी सेवा में जाते हैं, वे मुसलमान होते हैं। याने एक-दूसरे का नाता-रिश्ता ऐसा जुड़ गया है कि हम एक ही जिस्म के जुज हैं, जिन्हें काटकर अलग नहीं किया जा सकता। कान

को या पाँव को काटकर अलग रखा जाय तो, जिस्म की क्या हालत होगी? इसी तरह हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, पारसी, बौद्ध, यहूदी— ये सारे हिन्दुस्तान के मुख्तलिफ आजा (अवयव) हैं।

जबानें सीखें

यहाँ जिस तरह चौदह अच्छी, ताकतवर जबानें हैं, वैसी दुनिया के दूसरे किसी देश में नहीं हैं। यूरोप में ऐसी ही अच्छी जबानें हैं, लेकिन अभी वह एक देश नहीं बन पाया है। वहाँ अलग-अलग, छोटे-छोटे देश हैं। यहाँ कश्मीर में भी मुख्तलिफ जबानें हैं। कश्मीरी, उर्दू, हिन्दी, पंजाबी, डोगरी, बोधी— इतनी सारी जबानें चलती हैं। इसलिए यहाँ स्कूल खोलने हों, तो इतनी सारी जबानें पढ़ानी होंगी। इसके अलावा पण्डितों की जबान संस्कृत है, तो दूसरे अरबी-फारसी भी सीखते हैं। इतने छोटे-से सूबे में, जहाँ सिर्फ 40 लाख लोग रहते हैं, 7-8 जबानें पढ़ाने का इन्तजाम हमें करना होगा। यह अपने देश की खूबी है कि यहाँ हम सारे इकट्ठा हुए हैं।

कश्मीर पर दुनिया का हक

कुछ लोग पूछते हैं कि कश्मीर किसका हिस्सा है? मैं उनसे कहता हूँ कि तुम कैसे बेवकूफ बने हो, जो इस तरह पुराने जमाने का सवाल पूछते हो ! अगर पुराने जमाने की बात होती, तो मैं कहता कि कश्मीर जम्बू-द्वीप का हिस्सा है। लेकिन आज वैसा नहीं कहूँगा, बल्कि यही कहूँगा कि कश्मीर दुनिया का हिस्सा है। यहाँ दुनियाभर के 'टूरिस्ट' (मुसाफिर) आते हैं और करोड़ों रुपये देकर चले जाते हैं। वे यहाँ की खूबसूरती देखते हैं। तो क्या इस खूबसूरती पर कश्मीर का ही हक है? हमें समझना चाहिए कि इस पर कुल दुनिया का हक है। जैसे-जैसे विज्ञान तरक्की करेगा, वैसे-वैसे दुनिया की कुल कौमें ज्यादा नजदीक आयेंगी। ऐसी हालत में पुराने सवाल क्या पूछते हो कि कश्मीर पर किसके किसका हक है? कश्मीर पर कुल दुनिया का हक है। हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, अमेरिका, रूस, इंग्लैण्ड, जापान वगैरह सब देशों पर कुल दुनिया का हक है। अगर

ऐसा नहीं होगा, तो दुनिया में कशमकश जारी रहेगी और कुल दुनिया तबाह हो जायेगी। यह सवाल सिर्फ कश्मीर का नहीं, बल्कि कुल दुनिया का है। विज्ञान के जमाने में हम पहले जैसे अलग-अलग नहीं रह सकते।

अब पासपोर्ट, वीसा नहीं रहेंगे

इन 10 सालों में जमाना बहुत बदल गया है। विज्ञान के जमाने के 10 साल याने पुराने 100 साल हैं। हिरोशिमा पर बम गिरा और जापान को लड़ाई फौरन बन्द करनी पड़ी। आज अमेरिका और रूस के पास ऐसे बम पड़े हैं, जो हिरोशिमावाले बम से हजारगुना ज्यादा ताकतवर हैं। मैं कोई बढ़ा-चढ़ाकर बातें नहीं करता, बल्कि साइन्सदाँ जो बता रहे हैं, वही कह रहा हूँ। आज इन्सान को बड़ी-बड़ी ताकतें हासिल हुई हैं। इसलिए अब कश्मीर, जैसे छोटे-छोटे मसलों को भूल जाओ और यही याद रखो कि हम सबको प्यार से रहना सीखना है। दुनिया का यही एक मसला है कि मुख्तलिफ जमातें प्यार से इकट्ठा कैसे रहें, दूसरा कोई मसला ही नहीं है। दिल टूट जाते हैं, दिल से दिल अलग होते हैं तो नतीजा यही आनेवाला है कि इन्सान का खात्मा होकर रहेगा। इस वास्ते समझना चाहिए कि अब यह लाजिमी है कि जमातें नजदीक आनेवाली हैं, इसे आप रोक नहीं सकते। पहले कश्मीर आने के लिए परमिट लेना पड़ता था। लेकिन हमारे यहाँ आने से पहले परमिट हटाया गया। हम समझते हैं कि हमारे विचार का इस्तेकबाल (स्वागत) करने के लिए ही यह कार्य हुआ। अब हिन्दुस्तान और कश्मीर में आना-जाना खुले तौर पर चल रहा है। इसी तरह कल पासपोर्ट, वीसा भी खत्म होंगे और हिन्दुस्तान-पाकिस्तान में आना-जाना जारी होगा, हिन्दुस्तान, चीन वगैरह सब देशों में आना-जाना शुरू होगा। यह कब होने वाला है, उसकी तारीख हम नहीं बता सकते। वह तारीख तो अल्लाह मियाँ ही जानता है, लेकिन इतना यकीन रखो कि ऐसा होनेवाला है और जल्दी ही होनेवाला है। उस दिन के लिए अपना दिल तैयार रखो।

दिल में जोश, दिमाग में होश

मैंने कहा था कि दुनिया के मसले सियासत से हल नहीं होंगे, रूहानियत (आध्यात्मिकता) से ही हल होंगे। लेकिन जहाँ सियासत चलती है, अलग-अलग पार्टियाँ बनती हैं, वहाँ एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि हम आपस में वैर न करें। एक-दूसरे की बातें सुनते हुए दिल में जज्बा पैदा न होने दें। अगर दिल में जज्बा या खौफ पैदा हुआ, तो इस विज्ञान के जमाने में हम बिलकुल गये-बीते साबित होंगे। होना तो यह चाहिए कि दिल में आग हो और दिमाग में बर्फ। दिल में तड़पन, तमन्ना हो, लेकिन दिमाग ठंडा हो। विज्ञान के इस जमाने में लड़ाइयाँ भी जज्बे से नहीं होतीं। इसलिए सिर्फ जोश से काम नहीं बनता, जोश के साथ होश भी चाहिए। दिल में जोश और दिमाग में होश ! लड़नेवाले सिपाहियों को भी दिमाग ठंडा रखना पड़ता है।

बुजुर्ग कमान और जवान तीर

आपके दिल में, समाज में आज जो चल रहा है, उसके बारे में नाखुशी है। यह अच्छा है और लाजिमी भी है। बुजुर्ग जिस हालत में हैं, उससे जवान कुछ आगे बढ़ते हैं, तभी तरक्की होती है। लेकिन बुजुर्गों को बनना चाहिए कमान और जवानों को बनना चाहिए तीर ! आगे तीर दौड़ेगा, कमान नहीं। इसलिए जवानों को आगे बढ़ना चाहिए और बुजुर्गों के साथ लगाव भी रखना चाहिए। तभी देश आगे बढ़ेगा।

जवान पार्टी न बनायें, कुल बनें

जवान आगे जाने की बात करते हैं, तो हमें खुशी होती है। जवान जितना आगे जाना चाहते हैं, उतना आगे जाने के लिए बाबा तैयार है। बाबा ने तो ऐसी बात बतायी है, जैसी की बिलकुल अगुवा जवान भी मुश्किल से बोलते हैं। बाबा कहता है कि जमीन की मिल्कियत मिटा दो। मैं जब केरल गया था, तो वहाँ के जवान कम्युनिस्ट दोस्त हमेशा हमारी यात्रा में साथ आते थे। उन्होंने हमसे कहा कि जो आप बोल रहे है, वह हम भी नहीं बोल सकते। मैं कहना यह चाहता हूँ कि

सबसे आगे बढ़े हुए जो जवान हैं, उनसे भी बाबा दो कदम आगे है। मैं जवानों को समझाना चाहता हूँ कि मेरा तरीका सीखो। तुम पार्टी मत बनाओ। पार्टी याने पार्ट— टुकड़ा। तुम जुज मत बनो, कुल बनो। सबको हजम करने की काबिलियत सीखो। जैसे समुन्दर में सब नदी-नाले मिल जाते हैं, वैसे ही अपने विचार में सबको हजम करने की ताकत बनाओ।

हमारे देश की यह खुशकिस्मती है कि यहाँ मुख्तलिफ जमातें, मुख्तलिफ जबानें, कौमें, सूबे, मुख्तलिफ मजहब साथ-साथ रहते हैं। ये ही हमारी ताकत साबित होंगे, बशर्ते हम एक-दूसरे पर प्यार करें और इन्सान-इन्सान में कोई तफरका न करें।

अल्लाह चाहता है

हमें दो काम करने चाहिए: 1. मुख्तलिफ मजहबों को, जवानों को जोड़ना, 2. गरीब-अमीर को जोड़ना। ये दो काम करने के लिए बाबा कश्मीर आया है। लेकिन बाबा क्या कर सकता है? बाबा की कोई ताकत नहीं है, अल्लाह जो करायेगा, वही होगा। कुरआनशरीफ में कहा हैः "अल्लाह जो चाहेगा, वही होनेवाला है।" इसलिए मेरा सारा दारोमदार उसी पर है। मैं मानता हूँ कि वह चाहता है कि यह काम हो। तुम लोग अच्छा काम करना चाहते हो, यह बहुत अच्छी बात है। लेकिन वह काम टकराकर नहीं होगा। तुम्हें एक-एक दिल में पैठना होगा और एक-एक दिल पर कब्जा करना होगा। इस तरह दिल में पैठकर दिल जीतते जाओगे, तो तुम्हारी ही जीत होगी। आगे तुम्हारा ही जमाना है।

.

15. फौजी भाइयों से

फौजियों की विशेषता

आज कुछ भाई सिपाहियों में से आये थे। उन्होंने हम पर बहुत प्यार बरसाया। आश्चर्य की बात है कि फौज में दाखिल हुए भाइयों के दिल में इतना प्यार भरा है, इतनी श्रद्धा भरी है! हमारे जवान (सोल्जर्स) अच्छे जवान हैं। उनके दिल में देश के लिए काम करने की और सेवा करने की लगन है। वे भक्त हैं। वे जाति-पाँति का भेद नहीं मानते हैं, यही बड़ी अच्छी बात है। आज डी. सी. साहब ने हमें बताया कि जब सैलाब के कारण बहुत नुकसान हो गया, तब फौजी भाइयों ने बहुत ही प्यार से पुल बाँधने का काम किया। कई जगह पुल टूटे, वहाँ इन्होंने नये पुल बनाये। ऐसी सेवा की ख्वाहिश, परमेश्वर की भक्ति, जाति-पाँति न मानने की प्रावृत्ति आदि अच्छे गुण फौजी भाइयों में हैं।

आज उनमें से बहुत-से भाइयों ने 'गीता-प्रवचन' खरीदा है। इतना प्यार, भक्ति और श्रद्धा जिन लोगों में हो, उनके हाथों से कुछ न कुछ अच्छा काम होना ही चाहिए। वे हमसे मिले, तो उनको कितनी खुशी, कितना आनन्द हुआ ! माँ और बच्चे बिछुड़ने के बहुत दिनों बाद फिर मिलें, तो जितना आनन्द होता है, उतना ही आनन्द उनको हुआ।

प्यार खींचता है

उनका जो प्यार है, वह हमारे जिस्म के लिए नहीं, हमारे काम के लिए है। त्याग की, भक्ति की, कुर्बानी की बातें हिन्दुस्तान के दिल को ठंडक पहुँचाती हैं। कुर्बानी में तकलीफ होती है, फिर भी वह अच्छी लगती है। भक्ति, त्याग, दान— ये बातें किसके दिल को पसन्द नहीं आतीं ?

हर काम से मोक्ष सम्भव

हिन्दुस्तान में एक बहुत बड़ा विचार हमारे पुरखों ने हमारे सामने रखा कि समाज के अन्दर जिसे जो काम सौंपा गया है— समाज के लिए जो जरूरी है— वह काम जो मनुष्य करेगा, उस

पर परमेश्वर कृपा कर सकता है, उसे उसका दर्शन भी हो सकता है। अगर हम ईमान रखें, नेक रहें, किसी पर जुल्म न करें और खुदगर्ज न बनें, समाज के फायदे के लिए काम करें, मान-अपमान को समान समझें, खुदा की निगाह में सब समान हैं यह समझें, तो परमेश्वर हमें मोक्ष हासिल करने के लिए साधन देगा। यह बहुत बड़ा विचार है।

भगवान् के दरबार में सब समान

कोई ब्राह्मण वेदाध्ययन करे, लेकिन अपने लिए कोई ख्वाहिश रखे, तो बावजूद इसके कि वह वेदाध्ययन करता है, मोक्ष नहीं पायेगा। इससे उलटे कोई मामूली सिपाही— यहाँ तक कि कोई मेहतर या भंगी भी— समाज की, सेवा के खयाल से काम करे, तो वह मोक्ष पायेगा। ब्राह्मण भी मोक्ष पायेगा, अगर समाज की सेवा के खयाल से वेदाध्ययन करे। सारांश, चाहे ग्रन्थ पढ़ने का काम हो, चाहे लड़ने का, चाहे व्यापार-व्यवहार का काम हो, चाहे खेती का, चाहे शिक्षक हो, चाहे भंगी हो— समाज की खिदमत की दृष्टि से कोई भी काम करता हो, तो उसमें कोई दर्जा नहीं है। कोई ऊँचा नहीं, कोई नीचा नहीं। भगवान् के दरबार में सभी की समान इज्जत होगी।

सभी एक साथ प्रार्थना करें

आप सारे देश की सेवा में सिपाही बनकर ड्यूटी करते हैं। काम के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। भगवान् आपसे यह एक बहुत बड़ी सेवा ले रहा है। आपको एक मौका मिला है। हिन्दुस्तान के सभी सूबों, सब धर्मों और सब जातियों के लोग यहाँ हैं। सभी दोस्त बनकर रहें, कोई किसी को नीची निगाह से न देखे। सब साथी हैं, सब एक ही हैं, यह भावना रहे। आप सबका खाना-पीना, खेलना-कूदना— सब कुछ एक साथ चलता ही होगा। मानो एक कुनबा ही बन गया है। जैसे खाना-पीना एक साथ होता है, वैसे ही सबको भगवान् का नाम भी एक ही साथ लेना चाहिए। आज मैंने सहज ही पूछा कि क्या यहाँ कोई सत्संग चलता है, तो मुझे बताया गया कि हाँ, हिन्दू, मुसलिम, ईसाई, सिख— सब अलग-अलग अपनी प्रार्थना करते हैं। इस पर मेरे मन में सहज

विचार आया कि खाने, खेलने और लड़ने में हम सब एक साथ रहते हैं, लेकिन जहाँ भगवान् का नाम लेने का मौका आया कि बँट जाते हैं, यह ठीक नहीं। मानो यह भगवान् बड़ा कम्बख्त है, जिसके नाम से हम बँट जाते हैं। दरअसल होना यह चाहिए कि और कामों में चाहे हम बँटे रहें, पर जहाँ भगवान् का नाम लेना हो, वहाँ सभी एक हो जायें। इसके लिए कोई तरकीब ढूँढ़नी चाहिए। गीता, कुरआन, गुरुग्रन्थसाहब— इनमें से कुछ अंशों का एक साथ पाठ होना चाहिए। यह ऐसी चीज नहीं, जो मुफीद नहीं है। यह ठीक है कि गुरुग्रन्थ, जपुजी, गीता, कुरआन आदि के अध्ययन और पठन के लिए आप अलग-अलग भी बैठें। यह भी दिल को मजबूत बनाता है। लेकिन ऐसा भी होना चाहिए कि सब एक साथ बैठें, चन्द मिनट खामोश प्रार्थना की जाय और फिर तुलसी-रामायण के कुछ अंश, कुरआन की कुछ आयतें, गुरुग्रन्थ के और बाइबिल के कुछ वचन पढ़े जायँ। ये सभी हमें प्रिय होने चाहिए। यह सब मिलकर ही हमारा दिल और हमारा धर्म बनता है। जैसे सा, रे, गा, म आदि सप्त स्वर मिलकर सुन्दर संगीत बनता है, वैसे ही यह है। जैसे मिली-जुली संगत, जैसे मिली-जुली पंगत, वैसे ही यह भी मिला-जुला होगा, तो हमारा विचार ऊँचा बनेगा।

जो एक साथ खाते नहीं, वे एक साथ कैसे लड़ेंगे?

पानीपत की लड़ाई में एक बाजू अहमदशाह अब्दाली और दूसरी बाजू मराठों की फौज थी। जैसे अभी आप आमने-सामने खड़े हैं, वैसे ही वे एक-दूसरे के आमने- सामने खड़े थे। वे एक-दूसरे को देखना चाहते थे, एकदम हमला करना नहीं चाहते थे। एक दिन शाम को अहमदशाह अब्दाली ने देखा कि सामने मराठों की फौज में छोटी-छाटी आगें जल रही हैं। उसने अपने सेनापति से पूछाः "यह क्या हो रहा है?" उसने जबाब दिया कि "इन लोगों में जातिभेद है। ये एक-दूसरे के हाथ का खाना नहीं खाते। इसलिए अलग-अलग रसोई बना रहे हैं।" यह सुनकर अहमदशाह ने अपने साथी से कहाः "अगर ऐसा है, तब तो हमने जीत लिया।" कहने का सार यह है कि जो एक साथ नहीं खाते, वे एक साथ कैसे मरेंगे? आप तो खाना एक साथ खाते हैं,

खेलते भी एक साथ हैं, लेकिन भगवान् का नाम एक साथ नहीं लेते, तो अजीब बात हो जाती है। मेरा यह सुझाव है कि सब एक साथ थोड़ी देर बैठकर भगवान् का नाम लें, अलग-अलग भी लें, लेकिन एक साथ भी लें। हमारे साथ भी अलग-अलग धर्मवाले लोग रहते हैं, लेकिन प्रार्थना में सब एक साथ हो जाते हैं।

हम सब एक हैं

सामनेवाले को आप 'दुश्मन' कहते हैं। 'उस तरफ दुश्मन हैं' ऐसा बोला जाता है। फिर वे भी आपको 'दुश्मन' कहते होंगे। लेकिन हमारे अन्दर एक ऐसी चीज है, जो सिखायेगी कि हम सब एक हैं। विज्ञान के जमाने में 'हम सब एक है' यह भावना रहेगी, तभी हम टिक पायेंगे। आज क्या बड़े राष्ट्र और क्या छोटे राष्ट्र, सभी एक-दूसरे से डर रहे हैं। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान, अमेरिका और रूस दोनों एक-दूसरे से डरते हैं। सर्वत्र भय छाया है और सभी फौज के लिए खर्चा बढ़ा रहे हैं। फौज बिलकुल तैयार रखी जाती है। इन्सान को इन्सान का डर है, भय है। बड़े-बड़े शस्त्रास्त्र, Nuclear बढ़ रहे हैं। इन आणविक शस्त्रों को रोकना होगा। नहीं तो इन्सान की बरबादी होगी। इसलिए इस जमाने में 'जय जगत्' ही बोलना होगा। तब दुनिया की जय हो, सबका भला हो, यही खयाल रखना होगा।

हर नागरिक दुनिया का नागरिक हो

मैं यह जो सारा बोल रहा हूँ, इसके मानी यह नहीं है कि आप कोई बेकार काम कर रहे हैं। लेकिन आप और हम तब कामयाब होंगे, जब आपके देश में उनको और उनके देश में आपको जाने में कोई रुकावट न होगी। किसी भी देश में दूसरे देशवाले को रोका नहीं जायेगा। जैसे बम्बई का नागरिक सारे हिन्दुस्तान का नागरिक होता है, वैसे ही हिन्दुस्तान का नागरिक कुल दुनिया का नागरिक हो। याने किसी भी देश का नागरिक सारी दुनिया का नागरिक बने। यही हमें करना है और इसके लिए दिल को वसी, व्यापक, बनाना होगा।

धर्मयुद्ध की मर्यादाएँ

अगर लड़ने का मौका आया, तो हम लड़ें। अपना फर्ज समझकर लड़ें, लेकिन मन में वैर न हो। अर्जुन और द्रोणाचार्य के बीच ऐसा ही युद्ध हुआ। अर्जुन के लिए द्रोणाचार्य बाप की जगह थे। उसने भगवान् से पूछा कि "मैं इनके साथ कैसे लहूँ?" भगवान् ने कहाः "पहले उनके पाँव के पास वन्दन के लिए, प्रणाम करने के लिए बाण फेंक।" अर्जुन ने उनके पाँव के पास बाण छोड़ा, जिससे वन्दन हो गया। फिर लड़ाई शुरू हो गयी। याने पहले उनकी इज्जत करके फिर लड़ना शुरू किया। यह अजीब बात दीखती है। लेकिन धर्म में, धर्मयुद्ध में ऐसा ही होता है। उसमें सामने वाले के लिए मन में इज्जत होनी चाहिए।

खलीफा अली की कहानी

खलीफा अली की कहानी है। उनका एक भाई के साथ द्वन्द्व चल रहा था। आखिर लड़ते-लड़ते खलीफा अली की फतह होने के आसार दीखने लगे। एक मौका ऐसा आया, जब उसकी छाती पर खलीफा चढ़ बैठे। तलवार ऊपर उठा ली, उसे मारनेवाले ही थे कि इसी बीच वह शख्स, जिसकी छाती पर वह बैठे थे, उनके मुँह पर थूका। दूसरे ही क्षण खलीफा अली ने अपनी तलवार खींच ली और वे उठ गये। साथियों ने उनसे पूछा : "यह आपने क्या किया? अच्छी तरह वह आपके हाथ में आ गया था, कत्ल करने के बजाय आपने उसे ऐसे ही क्यों छोड़ दिया?" इस पर अली ने जो जवाब दिया, वह बड़ा ही सुन्दर है। उन्होंने कहाः "जब उस शख्स ने थूका, तो मुझे गुस्सा आ गया और गुस्सा आ जाने से वह धर्मयुद्ध नहीं रहा। इसलिए मैंने उसे छोड़ दिया।" छोटी-सी कहानी है, पर इससे बड़ी अच्छी नसीहत मिलती है।

निर्वैर होकर लड़ो

आज सुबह हम 'सीज फायर लाइन' देखने गये थे। वहाँ हमने देखा कि इधर हिन्दुस्तान की फौज खड़ी है, और उसके सामने ही उधर पाकिस्तान की फौज खड़ी है। हम सामनेवाले से

लड़ें, लेकिन उसके लिए मन में दुश्मनी न हो। आप देश के लिए लड़ रहे हैं। अब देश के लिए लड़ना ठीक है या बेठीक है, यह तो वे ही जानें, जिन्होंने यह तय किया है। उन्हीं पर श्रद्धा रखकर आप लड़िए। उनकी गलती निकालना हमारा काम नहीं। फिर भी हम फर्ज के लिए लड़ रहे हैं, जब्त के साथ लड़ रहे हैं, संयम के साथ लड़ रहे हैं, मन में वैर नहीं है, ऐसा होना चाहिए। गीता ने यही कहा है— लड़ना है तो लड़ो, लेकिन निर्वैर होकर तटस्थ बुद्धि से शान्त होकर लड़ो। हम तो मानते हैं कि जैसे-जैसे विज्ञान बढ़ेगा, वैसे-वैसे यह ध्यान में आयेगा कि अगर क्रोध आयेगा, दिमाग ठंडा नहीं रहेगा, तो निशाना गलत होगा। इसलिए विज्ञान के लिए और धर्म के लिए भी दिमाग शान्त रखकर काम करना लाजिमी होता है। फिर वहाँ प्यार शुरू होता है। राम-रावण का युद्ध हुआ। रावण की हार हुई। वह मर गया, तो राम ने उसके श्राद्ध की व्यवस्था की थी। मतलब यह कि जिसके साथ लड़ना है, उसके लिए मन में प्रेम और इज्जत होनी चाहिए। तभी वह धर्मयुद्ध होता है। इसलिए दिल और दिमाग शान्त रहें।

आप हमसे बहुत नजदीक

बहुत खुशी हुई कि हमें आपसे मिलने का यह मौका मिला। हम शान्तिसेना का नाम लेते हैं। उसके लिए आप ज्यादा लायक हैं। क्योंकि शौर्य, धैर्य, साहस, हिम्मत आदि जो गुण उसके लिए चाहिए, वे सब आपमें मौजूद हैं। इसलिए आप हमारे नजदीक से नजदीक हैं। इसके अलावा एक कारण और है। आज दुनिया मजहबों और राजनैतिक दलों के झगड़ों से तंग है। लेकिन फौज की कोई पार्टी नहीं होती। इसीलिए वह देश की फौज बनती है। हम जो सर्वोदय-समाज बनाना चाहते हैं, वह भी पक्षमुक्त समाज होगा। इसलिए भी आप हमारे नजदीक से नजदीक हैं। परमेश्वर आप सबको उत्तम बुद्धि दे, ज्ञान दे, शान्ति दे और प्रेम दे।

.

16. उस्ताद क्या करें?

जब इन्सान का दिमाग ठंडा और दिल गर्म रहता है, तब वह तरक्की करता है। दोनों ठंडे हों, तो सारा मामला ठंडा हो जायेगा और दोनों गर्म हों, तो सब कुछ जल ही जायेगा, कुछ भी बाकी न रहेगा। पुरानी पीढ़ी के लोगों के दिल और दिमाग दोनो ठंडे होते हैं और नयी पीढ़ी के दोनों गर्म होते हैं। इसलिए इनका मामला ठीक नहीं रहता है और उनका भी। दोनों के बीच बेहद फासला हो जाता है। इसलिए पुरानी पीढ़ी का ठंड़ा दिमाग और नयी पीढ़ी का गर्म दिल, दोनो इकट्ठा हो जायँ, तो समाज की तरक्की की रफ्तार बहुत बढ़ेगी और दोनों के बीच का फासला कुछ कम हो जायेगा। याने होश भी हो और जोश भी हो। होश तब होता है, जब दिमाग ठंडा रहता है और जोश तब होता है, जब दिल गर्म होता है।

उस्ताद पुरानी और नयी पीढ़ी को जोड़ें

सवाल यह है कि हमें कैसे सधे? पुरानी पीढ़ी को यह हरगिज नहीं सधेगा। कोशिश करने पर भी वे अपने दिल को गर्म नहीं कर सकेंगे। बूढ़ों का दिमाग ठंडा होता है और आखिर में जिस्म भी ठंडा पड़ जाता है। आखिर बूढ़े को गर्म कैसे रखा जाय, यही मसला रहता है। इसी तरह नयी पीढ़ी को अपना दिमाग ठंडा रखना मुश्किल मालूम होता है। यह उस्तादों का काम है कि पुरानी पीढ़ी का दिमाग और नयी पीढ़ी का दिल, दोनों को जोड़ दें। दुनिया को और समाज को उस्तादों की यही गरज है। अगर उस्ताद न रहें, तो पुरानी और नयी पीढ़ीं को जोड़नेवाला कोई नहीं रह जायेगा। उस्तादों के ऊपर यह जिम्मेवारी है कि पुरानी पीढ़ी के तजुर्बे नयी पीढ़ी के पास पहुँचा दें और नयी पीढ़ी का जोश कायम रखें उस्तादों का यह खास धर्म है।

आसमान में खूब घूमें

मैं उस्तादों को यह समझाना चाहता हूँ कि मेरे तजुर्बे से फायदा उठायें। उस्तादों को खुले आसमान में खूब घूमना चाहिए। कोई उस्ताद कहे कि मैं रोज दस मील घूमता हूँ, तो मेरी तसल्ली

होगी और मैं कहूँगा कि यह अच्छा उस्ताद है। तुलबा (विद्यार्थियों) को पढ़ाने के लिए उस्ताद को भी कुछ पढ़ना चाहिए। जितना पढ़े, उससे दस गुना सोचना चाहिए। सोचने के लिए सबसे ज्यादा मदद अगर किसी से मिलती है, तो आसमान से। कुरआनशरीफ में और उपनिषदों में आया है कि दुनिया की सबसे बड़ी जीनत, शोभा जो है, वह आसमान में देखने को मिलती है। वहाँ सात आसमानों का जिक्र है। जो परला आसमान है, वह बहुत दूर है। शायद ही कोई शख्स होगा, जिसका दिमाग वहाँ पहुँचेगा। लेकिन नजदीकवाला जो आसमान है, उसका मजा और मदद हमें मिलती है। आसमान से खूब नये-नये विचार मिलते हैं, यह हमारा तजुर्बा है। इसीलिए हमें कभी गुस्सा नहीं आता। जब कभी हमें ऐसा लगता है कि अब क्या किया जाय, तो हम घूमने चले जाते हैं। किसी की जिन्दगी में कोई दुख हो, किसी से बनती नहीं हो, किसी वजह से दिल में सुकून शान्ति न हो, तो घूमने निकल पड़ा और जरा खिलकत (सृष्टि) में जाकर देखो। खुले आसमान में दिल प्रसन्न हो जाता है, नये-नये विचार सूझते हैं और दिल में भरे हुए सारे गलत खयाल वहाँ से भाग जाते हैं। आसमान के साथ ताल्लुक एक बहुत बड़ी बात है।

खुद को पहचानो

अपना जो कुछ काम चलता है, उसे भूलकर, ताजा दिमाग लेकर घूमने जाइए। अपना घर, बच्चे, स्कूल, इम्तहान, पाठ्य-पुस्तकें आदि सब भूल जाइए। अपने सारे लेबल छोड़कर घूमने निकलिए। मैं किसी का भाई, किसी का बाप, किसी का उस्ताद, किसी का किरायेदार, यह सब छोड़िए और सिर्फ 'मैं हूँ' इतना ही लेकर आसमान में घूमिए। दुनिया में इन्सान के पाँव में यह एक जंजीर, बेड़ी कसकर बाँधी हुई है, जो उसे इधर-उधर जाने नहीं देती, सोचने नहीं देती, कुछ भी करने नहीं देती। इसलिए इन सबसे जरा दूर जाइए। घर-संसार से, सियासत से और इस जिस्म से भी अलग होकर देखिए, तब पता चलेगा कि 'मैं कौन हूँ', मेरा रूप क्या है। जब तक हमने नहीं पहचाना कि मैं कौन हूँ, तब तक हम तालिबे इल्म (विद्यार्थी) भी नहीं बन सकते, तो उस्ताद क्या बनेंगे? इसलिए आप इस पर गौर कीजिए कि मैं कौन हूँ। 'फलाने' का बोझ सिर पर रहेगा, तो

काम नहीं होगा। जब तक तुम खुद को नहीं पहचानते हो, तब तक क्या 'टीचते' (पढ़ाते) हो? मैं कौन हूँ, यह सोचो और 'मैं' पर जितने पर्दे आ गये हैं, उन सबको हटा दो ! दुनिया के झमेलों से, जिम्मेवारी से जरा अलग होकर अपने को परले आसमान में ले जाने की बात मैं नहीं कर रहा हूँ, वहाँ तो सिर फूट जायेगा। बल्कि मैं तो कहता हूँ कि अपने को नजदीकवाले आसमान में ले जाओ।

किताबों का बोझ न उठाइए

उस्तादों का काम है कि तुलबा की सेवा करें, बुजुर्गों के तजुर्बे उनके पास पहुँचायें। लेकिन तुलबा उन पुरखों से बँध न जायँ, यह भी देखना होगा। नहीं तो हमारे पुरखों ने जो कहा, उससे हम एक कदम भी आगे जाने के लिए तैयार नहीं हैं, ऐसी हालत हो जायेगी। किसी के दिमाग पर किताबों का बोझ पड़ा, तो उससे बदतर बोझ कोई नहीं हो सकता। अल्लाह बचाये उन्हें ! अभी हम अपने साथियों से चर्चा कर रहे थे कि "हम अपना सामान कन्धे पर उठाते हैं, किन्तु सर पर क्यों नहीं उठाते?" किसी ने जवाब में कहा कि "सिर पर बोझ उठाने से दिमाग पर बोझ पड़ता है।" मैंने कहा कि "सामान का बोझ सिर पर उठायें, तो दिमाग उतना नहीं दबेगा, जितना किताबों के बोझ से दबेगा।" फलानी किताब अच्छी है, तो पढ़ो लेकिन उसका बोझ क्यों उठाते हो? पुराने लोगों ने जो तजुर्बे किये, वे ही अगर तुम्हें और हमें करने होते, तो भगवान् हमें यह जन्म क्यों देता? अगर कोई नयी चीज करने को बाकी नहीं होती, तो वह हमें जन्म ही नहीं देता। लेकिन उसने हमें जन्म दिया है और आगे भी बच्चे जन्म लेनेवाले हैं, तो हमें नयी चीज खोजनी ही चाहिए। पुराने तजुर्बे का फायदा जरूर उठाना चाहिए। नहीं तो युक्लिड ने जो खोजें कीं, वे सब हमें फिर से करनी पड़ेगी। यह तो हद दर्जे की जहालत (मूर्खता) होगी, हमें वह नहीं करनी है। लेकिन पुराने लोगों से हम एक कदम भी आगे न बढ़ें, यह भी गलत है।

किताबें डाल पानी में

एक मुसलमान भाई बड़ी श्रद्धा से कुरआनशरीफ पढ़ते थे। वे उसके मानी नहीं जानते थे और न जानने की जरूरत ही महसूस करते थे। उसके गुरु ने उन्हें मंत्र दिया था कि "कुरआन पढ़ो, फिर और कुछ पढ़ने की जरूरत नहीं है। जो पढ़ते हो, उसके मानी भी जानने की जरूरत नहीं है, कुरआन ही बस है।" उसके इब्तेदा (आरम्भ) में 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' और आखिर में 'नास' आता है। शुरू में 'ब' और आखिर में 'स' तो 'बस' हो गया। इससे ज्यादा जानने की कतई जरूरत नहीं है। मुल्ला भी यही कहता है और वेद पढ़नेवाला भी यही कहता है। कुरआन के 'सुरे जुमा' में गधे की मिसाल दी है, जिस पर किताबें लादी हुई हैं। जो किताबों का बोझ उठाता है, लेकिन उस पर अमल नहीं करता, उसको गधे की मिसाल लागू होती है। इन्सान को किताबों की मदद जरूर होती है, लेकिन उस मदद की भी एक हद होती है। हम हद से ज्यादा उसमें फँस गये, तो खत्म हो जाते हैं। फिर तो यही कहना पड़ता है कि 'किताबें डाल पानी में। पकड़ दस्त तू फिरिश्तों का।' 'गुलाम उनका कहाता जा' के बदले हम कहते हैं 'दोस्त उनका कहाता जा'। यह जो विचारों की गुलामी है, उससे बदतर कोई गुलामी नहीं हो सकती। इसलिए हमें अपना दिल और दिमाग बिलकुल आजाद रखना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं कि पुराने तजुर्बे से फायदा न उठायें।

तालीम का ढाँचा बदलना अनिवार्य

हिन्दुस्तान की तालीम का ढाँचा इतना दकियानूसी है कि उस पर विज्ञान का कोई असर नहीं। आज का समाज बदला है, उस माहौल (वातावरण) का भी कोई असर नहीं है। फिर भी वह तालीम बेखटके चल रही है। तालीम याने प्लानिंग का एक विभाग (ऐटम) हो गया है। पढ़े-लिखे लोगों की बेकारी हटाने के लिए क्या-क्या करना है, यह पेश करते हैं—नये स्कूल खुलेंगे, तो इतने पुख्ता (परिपुष्ट) लोगों को नौकरियाँ मिलेंगी। याने तालीम की ओर भी नौकरी (जॉब) देने के खयाल से देखना ही अच्छा समझा जा रहा है। पढ़े-लिखे बेकारों को नौकरियाँ तो मिलती हैं।

लेकिन वे जिस फैक्टरी को चलाते हैं, वह फैक्टरी बेकारों की तादाद बढ़ानेवाली है, यह सोचने की बात है

मुफ्त तालीम का बड़ों को फायदा

यहाँ सरकार ने एक बख्शीश दी है कि इस स्टेट (राज्य) में युनिवर्सिटी तक तालीम मुफ्त मिलेगी। अब इसमें सोचने की बात है। इसके मानी यह है कि बड़े लोगों के बच्चों को— मंत्री के, पूँजीवादियों के, बड़े-बड़े सरमायादारों के, धनी लोगों के बच्चों को मुफ्त तालीम मिलेगी। फीस मुआफ होने पर भी गरीबों के बच्चे बहुत ऊपर तक सीखेंगे, यह नहीं मान सकते। यह भी एक खैरियत ही है। सब बच्चे अगर बेकार तालीम हासिल करेंगे, तो देश को एक खतरा ही होगा। देश की यह खुशकिस्मती है कि मुफ्त तालीम में सब लड़के ऊपर तक नहीं पढ़ेंगे। आज गाँव-गाँव के लोग स्कूल चाहते हैं। इसलिए नहीं कि इल्म की प्यास है। बल्कि इसलिए कि वे चाहते हैं कि जो मेहनत-मशक्कत उनको करनी पड़ती है, जिस 'ड्रेजडी' में वे रहते हैं, कम से कम उससे तो उनके बच्चे बच जायँ। लेकिन ऐसी तालीम जितनी बढ़ेगी, उतनी अनाज की पैदावार के साथ मुखालिफत (विरोध) है। ये लड़के जो सीखेंगे, उनमें से काम करने का माद्दा कितनो के पास और कितना है? हमारे एक दोस्त कहते हैं कि इस तालीम में सिर्फ तीन अँगुलियों का उपयोग होता है। वे लड़के नौकरी माँगेंगे। जिन्दगी में क्या हासिल करेंगे? नौकरी भी कितने लड़कों को मिलनेवाली है?

बेकार मध्यम वर्ग

आज हिन्दुस्तान में सरकारी नौकर पचपन लाख हैं। याने पचपन लाख परिवारों को सरकार वेतन देती है। साढ़े सात करोड़ कुनबों, परिवारों की सेवा के लिए पचपन लाख सेवकों का इन्तजाम सरकार करती है। याने तेरह परिवारों की सेवा के लिए एक परिवार सरकार रख

रही है। मतलब, इतना एक मध्यम वर्ग सरकार खड़ा कर रही है। यह वर्ग उत्पादन का काम कतई नहीं करेगा।

हमारे देश में यह बात चल पड़ी है कि जो हाथों से काम करेगा, उसकी इज्जत कम होगी। शिक्षक, प्रोफेसर, डॉक्टर, वकील ये सब लोग हाथों से काम नहीं करेंगे, उपज नहीं बढ़ायेंगे। लेकिन उनकी इज्जत ज्यादा होगी। वे जिस्मानी मजदूरी से नफरत करेंगे, उत्पादन के काम में कतई भाग नहीं लेंगे। यह पहले से चला आया है। अंग्रेजी सीखे हुए लोग भी कभी उत्पादन का काम नहीं करेंगे। याने एक उच्चतर मध्यम वर्ग खड़ा हुआ है, जो कायम रहने के लिए समाज को पीसता रहेगा और कशमकश जारी रहेगी। इसलिए तालीम मुफ्त देने से कुछ नहीं चलेगा।

तालीम का बना-बनाया ढाँचा

मैंने यहाँ के हाईस्कूल में देखा, एक टाइम-टेबुल तय रहता है। वह हफ्तेभर चलता है। एक ही 'पैटर्न' (नमूना)। ऊपर से सारा लिखकर आयेगा। उसमें ज़ेर, ज़बर (अ, आ, इ) का भी फर्क नहीं कर सकते। हफ्ते में 48 'पीरिअड्स' होते हैं। उनममें 15 'पीरिअड्स' अंग्रेजी, 12 'पीरिअड्स' गणित, 9 'पीरिअड्स' इतिहास और भूगोल ! ये तीन अनिवार्य (कम्पल्सरी) विषय हैं। बाकी 12 'पीरिअड्स' में 5 ऐसे हैं, जिनमें से 2 विषय (सब्जेक्ट) ले सकते हैं— हिन्दी या उर्दू, और संस्कृत, अरबी, फारसी, विज्ञान, ड्रॉइंग— इनमें से एक। इस प्रकार दो विषय लेने की बात है। अब इस जमाने में कौन बेवकूफ होगा, जो विज्ञान नहीं लेगा? इसलिए विज्ञान तो विद्यार्थी लेंगे ही। फिर ड्रॉइंग भी कोई क्यों न लेगा? इतनी अच्छी कुदरत यहाँ है, तो ड्रॉइंग के लिए अनुकूल ही है। इस वास्ते ड्रॉइंग और विज्ञान लिया, तो रास्ता साफ (स्टीयर क्लियर) हो गया। संस्कृत और हिन्दी न ली, तो भी चलेगा। याने आप ऐसे लड़कों की जमात तैयार करेंगे, जो उर्दू और हिन्दी में बात ही नहीं कर सकेंगे। कश्मीरी की तो बात ही नहीं। माँ कश्मीरी में बोलेगी, बाप उर्दू में बोलेगा, उस्ताद अंग्रेजी में बोलेगा। माताएँ तो कश्मीरी के सिवा दूसरी भाषा कतई नहीं बोलेंगी। यह माताओं का फैसला है। मैं कहना यह चाहता हूँ कि वे अपनी चीज नहीं छोड़तीं।

आजाद हिन्दुस्तान में अंग्रेजी नहीं चलेगी

आज हमारे बच्चों का क्या हाल होगा? 15 'पीरिअड्स' अंग्रेजी क्यों पढ़ानी चाहिए? कहते हैं कि बच्चों का अंग्रेजी का स्टैण्डर्ड गिरेगा, तो कैसे चलेगा? लेकिन आज वह गिरना लाजिमी है। आजाद देश पर आप अंग्रेजी लादना चाहेंगे, तो कौन लड़का उसे पकड़ेगा? मैंने कहा, अंग्रेजी मजबूत करनी है, तो 'क्विट इण्डिया' (भारत छोड़ो) के बदले 'रिटर्न टु इण्डिया' (भारत वापस आओ) कहना होगा।

मैं अंग्रेजी के खिलाफ नहीं हूँ। विदेशी भाषाओं की मैं कदर करता हूँ। मैं तो चाहता हूँ कि लड़के जापानी, चीनी, रूसी, जर्मन, फ्रेंच, फारसी, अरबी, इस तरह अपने अड़ोस-पड़ोस के देशों की जबानें सीखें, उसमें माहिर हों। लेकिन थोड़ा-थोड़ा सबको दें, दो-दो तोला हरएक को मिले, इसके बजाय चन्द लोग अच्छी अंग्रेजी सीखें तो ठीक। 'सी, ए, टी, कैट, डी, ओ, जी, डॉग' करने से क्या होगा? इसके बजाय चन्द लोग उसे सीखें और बहुत बढ़िया सीखें। लेकिन आम लोगों पर, बच्चों पर, अंग्रेजी लादी जाय, तो मुझे उसके लिए एक ही लफ्ज सूझता है, यह 'जुल्म' है। लादी जा रही है और विज्ञान को भी ऐच्छिक रखा है। अब यह ठीक है कि लड़के इतने बेवकूफ नहीं हैं कि विज्ञान न लें।

आज की तालीम के तीन दोष

तालीम में बच्चों को कुछ न कुछ मुफीद काम सिखाना चाहिए। आज हम ऐसी तालीम नहीं देते, जिससे देश की दौलत बढ़े। तालीम में दूसरा नुक्स यह है कि अंग्रेजी लादी जाती है, जिसकी वजह से लड़के मादरी जबान भी ठीक से नहीं सीख पाते। तीसरा नुक्स यह है कि इस तालीम में अखलाकी चीज नहीं है। कहा जाता है कि बाइबिल, कुरआनशरीफ, गीता, जपुजी— यह सब नहीं सिखा सकते। याने जिन चीजों ने हजारों वर्षों से हम लोगों के दिल और दिमाग पर असर डाला है और जिनसे लोगों की फितरत (स्वभाव) बनती है, वह सब हम स्कूलों में नहीं

सिखा सकते! कहा जाता है कि स्कूलों में धर्म-निरपेक्ष ज्ञान ही दिया जा सकता है। यह बात पहले से आज तक मेरी समझ में नहीं आयी कि यह धर्म-निरपेक्षता क्या है और इसके मानी क्या है? जिससे बच्चों के दिमाग में विश्वास पैदा हो, परमात्मा, अल्लाह की तरफ उनका रुझान हो, उनके मन में अल्लाह के लिए डर हो, प्यार हो— यह जरूरी है या गैरजरूरी है? लेकिन जरूरी साबित होता हो, तो उसकी तालीम कौन देगा?

इन सबको टालकर आप बच्चों को कौन-सी चीजें सिखानेवाले हैं? वे सारी चीजें धर्म-निरपेक्षता में नहीं आतीं, यों कहकर आप नहीं पढ़ायेंगे, तो फिर क्या पढ़ायेंगे? जिस तालीम का रूहानियत से कुछ वास्ता नहीं, जिसमें कोई चीज पैदा करने का इल्म नहीं, जिसमें मादरी जबान का ज्ञान नहीं, ऐसी तालीम से क्या फायदा होनेवाला है? ऐसी तालीम पाने से तो बिलकुल ही तालीम न पाना बेहतर है।

भगवान् की मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा-योजना

'फ्री एज्युकेशन' (मुफ्त शिक्षा) और 'कम्पल्सरी एज्युकेशन' (अनिवार्य शिक्षा) का मन्सूबा परमात्मा ने तैयार किया है और वह हर बच्चे को दे रहा है। हर बच्चे को माँ की गोद में जन्म दिया है। माँ उसे बचपन से मादरी जबान सिखाती है। यह है 'फ्री एज्युकेशन'। हरएक के पेट में भूख होती ही है। इसलिए काम करना पड़ता है। यह ज्ञान, इल्म होगा। यह है 'कम्पल्सरी एज्युकेशन'। इस तरह 'फ्री' और 'कम्पल्सरी एज्युकेशन' परमात्मा दे रहा है। आप हट जायेंगे, तो इसमें कोई फर्क पड़नेवाला नहीं है। मौजूदा तालीम में मुझे किसी प्रकार की तसल्ली नहीं है, इतमीनान नहीं है। तालीम का ठेका आपने क्यों ले रखा है? सरकार में है तालीम देने की कूबत ? मैं चाहता हूँ कि तालीम सराकर के हाथ में न रहे। तालीम के जरिये सरकार सब बच्चों को एक साँचे में ढालना चाहती है। दिमाग की आजादी के लिए इससे खतरनाक बात और क्या हो सकती है? यह बात लोकशाही के खिलाफ है। डिसिप्लिन के नाम पर यह सब होता है, लोगों को बिलकुल मशीन बनाया जाता है। इसलिए तालीम सरकार के हाथ में नहीं रहनी चाहिए। सरकार देश के

विद्वानों को आजादी दे और लोगों को उत्तेजन दे कि लोग जिस किस्म की तालीम चाहते हैं, ले और दे सकें।

आखिर आप कौन होते हैं बच्चों की जिन्दगी और दिमाग के साथ खिलवाड़ करनेवाले ? आपको क्या हक है? माँ-बाप अपने बच्चों को जो भी सिखाना चाहें, सिखायें, लेकिन आप कैद रखते हैं कि सरकार की नौकरी उसी को मिलेगी, जो डिग्री पाया हुआ है। इसके मानी यह है कि आपने तालीम की जो मशीनरी बनायी है, उसी से आनेवाले को नौकरी मिलेगी। आपको इल्म की कद्र नहीं है, अपनी मशीनरी की ही कद्र है। मैं क्या अपने लड़के को तालीम देने के लिए नाकाबिल हूँ? क्या डिग्री पाया हुआ प्रोफेसर तालीम दे सकता है?

डिग्री के बजाय विभागीय परीक्षा हो

मैंने सरकार के सामने सुझाव रखा है कि आप 'डिपार्टमेण्टल' परीक्षा लें। जो भी परीक्षा देना चाहे, वह फीस देकर परीक्षा देगा और पास हुआ, तो नौकरी मिलेगी। उस परीक्षा के लिए डिग्री की कैद क्यों होनी चाहिए? इस पर सरकार वाले कहते हैं कि ऐसा करने से परीक्षा देने वालों की बहुत बड़ी तादाद होगी। मैं कहता हूँ कि इससे आपका क्या नुकसान है? ऐसे जो बिलकुल फिजूल आक्षेप उठाये जाते हैं, उसके मूल में यह है कि वे अपने हाथ से तालीम नहीं जाने देना चाहते, उसे कसकर रखना चाहते हैं। आपकी परीक्षा ऐसी कौन-सी गंगोत्री है कि पानी उसी मुख से आना चाहिए, दूसरे मुख से नहीं।

आज की तालीम यानी बेकार बनाने के कारखाने

बड़ी खुशी की बात है कि कश्मीर की हुकूमत ने तालीम मुफ्त कर दी है। लेकिन आज की हालत में मुफ्त तालीम के मानी है, बेकार बनाने का कारखाना खुला हुआ है। जो भी उसमें आना चाहे, आ सकते हैं और बेकार बन सकते हैं। इसलिए जहाँ हम तालीम मुफ्त कर देते हैं, वहाँ तालीम का तरीका वह नहीं हो सकता, जिससे बेकार बनते हैं। आज की हालत में न अखलाकी

तालीम है, न रूहानी और न जिस्मानी। सिर्फ दिमागी तालीम दी जाती है और तालीम मुफ्त हो, तो भी गरीब के बच्चे स्कूल नहीं जा सकते, क्योंकि वे घर के कमानेवाले मेम्बर होते हैं। आज किसान अपने बच्चे को इसलिए पढ़ाना चाहता है कि उसे जो मेहनत-मशक्कत करनी पड़ती हे, उससे उसके बच्चे बच जायँ। अगर वे उससे बच जानेवाले होते, तो दूसरी बात थी। लेकिन तालीम पाये हुए लड़कों में से 10 प्रतिशत को भी काम नहीं मिलता और बाकी बेकार रहते हैं, क्योंकि उन्हें कोई दस्तकारी नहीं सिखायी जाती। अगर खेत में काम करना चाहें, तो भी नहीं कर सकते; क्योंकि उन्हें जो तालीम दी जाती है, उसकी वजह से उन्हें ठंढ, धूप, बारिश, हवा सहन करने की आदत नहीं रहती। इसलिए अगर तालीम में यह सब सहन करने की आदत डाली जायेगी, तभी यह मुफ्त तालीम आपको फायदा पहुँचायेगी। नहीं तो यह आपको बरबाद करेगी।

जवानों की जिन्दगी मुलायम बनी

जब मैं जवानों से कहता हूँ कि मेरे साथ घूमने आइए, तो वे कहते हैं कि हमसे नहीं बनेगा। अजीब बात है कि मेरे जैसा बूढ़ा घूम सकता है, लेकिन ये जवान नहीं घूम सकते। हमारी जिन्दगी मुलायम (Soft) बनी, तो कुल देश खतरे में है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि हमारे बच्चे खेलें-कूदें, बर्जिश (व्यायाम) करें, खेतों में कुदाली चलायें, जिससे जिस्मानी मजबूती आयेगी। उसके साथ-साथ रूहानी मजबूती भी आनी चाहिए। इस तरह तालीम में फर्क करना चाहिए। लेकन कोई भी पार्टी इस तरफ ध्यान नहीं दे रही है। पार्टीवाले यही सोचते हैं कि हमें कितनी सीटें मिलेंगे और दूसरे को कितनी मिलेंगी। सीटों के सिवा दूसरी कोई बात ही नहीं है। आज हमसे जो लोग मिलने आये, उनमें हर कोई यही कहता गया। शरणार्थियों ने कहा कि सरकार में हमारे कोई नुमाइन्दे नहीं हैं। शिया लोग भी यही शिकायत करते थे कि हमारी छोटी-सी जमात है, तो हमारे कोई नुमाइन्दे नहीं हैं। हरिजन, पंडित, वगैरह सभी यही शिकायत करते थे। इस तरह एक-एक जाति और मजहब देखकर नुमाइन्दें चुने जायँ, तो बड़ी आफत आयेगी। कोई नहीं कहता कि आज का जो तालीम का तरीका है, उससे नुकसान हो रहा है, वह बदलना चाहिए।

आज की तालीम जल्दी दफनायी जाय

जमाने की माँग है कि आज जो तालीम चल रही है, उसे जल्द से जल्द दफनाया जाय। दो तरह से दफनाया जाता है। पिता की लाश को इज्जत के साथ दफनाया जाता है। लेकिन यह हमारी तालीम इज्जत के साथ दफनाने लायक है ही नहीं। यह बुरी चीज है, जो हिन्दुस्तान के जिगर को खा रही है। लोगों का पराक्रम खत्म कर रही है। इसलिए उसे तो दूसरे तरीके से ही दफनाया जाना चाहिए।

आप बच्चों को इतनी बेकार तालीम देते हैं और कहते हैं कि बच्चों में अनुशासन नहीं है। मुझे तो ताज्जुब होता है कि बच्चे इतने भी अनुशासित कैसे हैं।

तालीम के बारे में बुनियादी उसूल

(1) तालीम लोगों के हाथ में होनी चाहिए, सरकार के हाथ में नहीं।

(2) तालीम का जरिया मादरी जबान ही होना चाहिए।

(3) उसके साथ-साथ दूसरी जबानें भी सिखायी जायँ, लेकिन लादी न जायँ।

(4) तालीम में अखलाकी, रूहानी चीज जरूर होनी चाहिए।

(5) तालीम में कोई न कोई दस्तकारी जरूर होनी चाहिए।

इन पाँच उसूलों को हम कभी नहीं छोड़ सकते। आप इस पर सोचिए। सरकार आपकी बनायी हुई है, इसलिए आप सोचेंगे, तो तालीम में जरूर फर्क हो सकता है।

तालीम भारत की खास चीज

हमें मगरिब (पश्चिम) से बहुत सीखना है, खासकर विज्ञान लेना है। मैं विज्ञान का कायल हूँ। जितना विज्ञान बढ़ेगा, उतनी रूहानियत बढ़ेगी। विज्ञान और रूहानियत के जोड़ से इन्सान

इस दुनिया में बहिश्त ला सकेगा। मगरिब ने विज्ञान बहुत विकसित किया है। उसे जरूर सीखना चाहिए। लेकिन हमारे देश की अपनी भी कुछ चीजें हैं; जिनमें तालीम एक है। जिस जमाने में यूरोप में तालीम नहीं थी, उस जमाने में हिन्दुस्तान में काफी तालीम थी। उपनिषद् में, जो कि चार हजार साल पहले की किताब है, एक राजा अपने राज्य का बयान करता है : '**न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः न अविद्वान्**।'— मेरे राज्य में कोई चोर नहीं है और कोई कंजूस नहीं है। मेरे राज्य में कोई शराब पीनेवाला नहीं है और कोई अविद्वान् नहीं है। यानी सिर्फ पढ़ा-लिखा ही नहीं, बल्कि आलिम नहीं, ऐसा शख्स मेरे राज्य में कोई नहीं है। इस तरह चार हजार वर्ष पहले का राजा अपनी हुकूमत का बयान करता है। तालीम अपने देश की खास चीज है, जिसमें हमने दस हजार साल का तजुर्बा हासिल किया है।

तालीम देना हरएक का फर्ज है

बचपन में इन्सान ब्रह्मचारी होगा, फिर गृहस्थ बनेगा। उसके बाद पुख्ता उम्र आयेगी, तो वह वानप्रस्थी बनेगा। कुरआनशरीफ में कहा है कि चालीस साल की उम्र में दिल दुनिया से हटकर परमात्मा की तरफ जाता है, जाना चाहिए। पैगम्बर ने अपने तजुर्बे से यह बात कही है। चालीस साल के बाद उनका दिल परमात्मा की तरफ गया था। ब्रह्मचारी याने पढ़नेवाला लड़का, गृहस्थ याने दुनिया में काम करनेवाला। तीसरी अवस्था वानप्रस्थ की है, जो तजुर्बेकार (अनुभवी) होता है। इसलिए उसका फर्ज है कि वह विद्यार्थियों को पढ़ाये। आज तो यह होता है कि बीस साल का जवान डिग्री हासिल करके टीचर या प्रोफेसर बनता है। बी. कॉम, पास करनेवाला जवान क्या कॉमर्स (व्यापार) टीचेगा? क्या उसने कभी व्यापार किया था? पाँच हजार रुपये उसे दे दिये जायँ, तो वह उसके 50 हजार नहीं, 500 ही बनायेगा। उसे कुछ भी तजुर्बा नहीं है। उसने सिर्फ किताबें पढ़ी हैं। ऐसे बेतजुर्बेकार जवान उस्ताद बनते हैं, तो बच्चों को क्या तालीम मिलेगी? वह बी. कॉम. बेकाम ही होते हैं। इसी तरह 'पॉलिटिक्स' पढ़ाने वाले भी जवान ही होते हैं, जिन्हें कुछ भी तजुर्बा नहीं होता। 'पॉलिटिक्स' कौन पढ़ायेगा? पं. नेहरू नाहक प्रधानमंत्री बनकर बैठे

हैं। वे प्राइममिनिस्टरी छोड़कर उस्ताद बनें, तो पॉलिटिक्स अच्छी तरह पढ़ा सकते हैं। यह अपने देश की चीज है कि इन्सान को एक उम्र के बाद उस्ताद बनना चाहिए। आपने तालीम पाया है इसलिए तालीम देना आपका फर्ज है। अगर मेरा निजाम (राज्य) चले, तो मैं पंडित नेहरू को राजनीति का प्रोफेसर बनाऊँगा और घनश्यामदास बिड़ला को कॉमर्स (व्यापार) का प्रोफेसर ।

तालीम का माहिर कौन?

लोग सोचते हैं कि हमारे पास कुछ भी नहीं है, सब कुछ मगरिब से ही लेना है। यह बात सही है कि उन्होंने कुछ तजुर्बे हासिल किये हैं। लेकिन उन लोगों के पास आत्मा को पहचानने की कोई चीज नहीं है। जो आत्मा को नहीं पहचानते, वे कितनी भी ऊँची उड़ान उड़ें, तो भी तालीम नहीं दे सकते। तालीम का माहिर वही हो सकता है, जो आत्मा को पहचानता है। यह अपने देश की चीज है, कश्मीर की अपनी चीज है।

•

17. कश्मीरी अफसरों की जिम्मेवारी

इन पाँच-छह सालों में ऐसे सरकारी अधिकारियों के सामने बोलने का मौका मुझे कई दफा मिला है। लेकिन दूसरी जगह और कश्मीर में फर्क है। इसलिए यहाँ के अधिकारियों की कुछ विशेष जिम्मेवारी हो जाती है। ये अधिकारी किसी भी पार्टी के नहीं होते। सरकार चाहे किसी पार्टी की हो, पर अधिकारी स्वतंत्र ही होते हैं। सरकारी अधिकारी तो सेवक होते हैं। सेवा के कुछ नियम होते हैं, उनके मुताबिक वे सेवा करते हैं। इसलिए यह मानी हुई बात है कि जितने भी अधिकारी होंगे, वे सब के सब गैरजानिबदार होंगे। अगर आप पर किसी पार्टी का रोब रहता हो, किसी पार्टी को आपकी सेवा का लाभ मिलता हो, तो आप गलत काम कर रहे हैं, नौकरी ठीक से नहीं कर रहे हैं, यही माना जायेगा।

गैरजिम्मेवारों को प्यार से जीतें

लेकिन आपका यह काम कश्मीर में मुश्किल है, इसलिए कि ऐसे भी लोग यहाँ पड़े हैं, जो बिलकुल गैरजिम्मेवार माने जाते हैं। उनका भी खयाल आप लोगों को रखना पड़ता होगा। इसलिए सावधान रहकर, सजग रहकर सेवा करनी होगी। उनकी भी सेवा आपको करनी है, वे भी आपकी सेवा के लायक हैं। लेकिन आपको चौकन्ना जरूर रहना होगा। इसीलिए मैंने कहा कि हिन्दुस्तान के सरकारी नौकरों में और आपमें फर्क है।

मेरी राय में ऐसे जो लोग हों, उन्हें हमें प्रेम से जीतना चाहिए। हमारा यहाँ का जो निजाम है, इन्तजाम है, वह अगर अच्छा चलता होगा, तो वे लोग प्रेम से जीते जा सकेंगे। डेमोक्रेसी में अगर हम गरीबों को सुखी न कर सके, तो उसके प्राति लोगों को आज जो मुहब्बत है, वह कायम रहेगी, ऐसा नहीं कहा जा सकता। मिस्र, इराक, फ्रांस में डेमोक्रेसी थी और देखते-देखते लश्करशाही आ गयी, क्योंकि वहाँ की डेमोक्रेसी में गरीबों को सीधी मदद नहीं पहुँचती थी। भ्रष्टाचार (करप्शन) बढ़ा, तो उस 'करप्ट डेमोक्रेसी' (भ्रष्ट लोकशाही) से 'ऑनेस्ट ओटोक्रेसी'

(ईमानदार तानाशाही) को ही लोग ज्यादा पसन्द करेंगे। लोगों को आपकी 'क्रेसी' से कोई ताल्लुक नहीं। उनकी मुश्किलात को दूर करनेवालों को ही वे चाहते हैं। लोगों को आप प्रेम से जीत सकते हैं। आप अवाम की खिदमत करें और लोगों में यह एहसास पैदा करें कि "हमारी आफत में हमारी हुकूमत दौड़े आती है, 'करप्शन' यहाँ बिलकुल ही नहीं है, गरीबों को सीधी मदद पहुँचती है, बीच में कोई एजेण्ट नहीं है, जो सबसे ज्यादा गरीब हैं, उनको पहले मदद मिल रही है।" ऐसा अगर यहाँ दीखेगा, तो मुझे यकीन है कि आप अवाम को जीत सकते हैं।

गरीबों को आपके लिए यकीन हो

जैसे आपके लड़कों को पूरा यकीन होता है कि आप जो कुछ काम करते हैं, वह सब उनके लिए ही करते हैं, वैसे ही लोगों को, गरीबों को पूरा यकीन होना चाहिए कि आप उनके खिदमतगार हैं, उनकी मुसीबतों में दौड़े जाते हैं, उनको सरकारी मदद पूरी पहुँचा देते हैं। वैसे सरकारी मदद तो आप पहुँचायेंगे ही, लेकिन उन्हें यह भी दीखेगा कि आप अपनी जिन्दगी में उनके लिए कुछ भूदान, सम्पत्तिदान देते हैं, तो उनके मन में एहसास पैदा होगा कि ये हमारे सच्चे खिदमतगार हैं।

लोग दुखी रहें, तो फौजी हुकूमत आयेगी

दूसरी बात मुझे यह कहनी है कि यह जमाना विज्ञान का है। साइन्स के जमाने में 'पॉलिटिक्स' (सियासत) बिलकुल पिछड़ गयी है। अब सियासत से मसले हल नहीं होंगे। उलटा सबको 'हल' कर सकती है, यानी दुनिया को खत्म कर सकती है। सियासत से दुनिया में 'फ्रैक्शन्स' (टुकड़े) ही पड़ते हैं। सब मिलकर समाज को शिक्षित (एज्यूकेट) करते हैं और उससे सरकार पर दबाव पड़ता है, यह जो राजनीतिक सिद्धान्त था, वह अब विज्ञान के जमाने में नहीं रह गया है। विज्ञान के कारण इन्सान के हाथ में इतनी ताकत आ गयी है। इसका मतलब यह हुआ कि जिस किसी के हाथ में 'सेना की शक्ति' रहेगी, उसके सामने किसी की कुछ नहीं चलेगी

और लोकतंत्र में 'नागरिक शासन' खत्म करके 'सैनिक शासन' आने में देर नहीं लगेगी। यह काम एक मिनट में हो सकता है। जिधर चारों ओर भ्रष्टाचार चलता हो, लोग चिल्लाते हों, गरीबों को राहत न मिलती हो और मंत्रिमण्डल हमेशा बदलता हो, तो वहाँ फौरन कुल ताकत मिलिटरी के हाथ में आ सकती है— फिर लोकतंत्र का परिवर्तन 'सैनिक शासन' में होते देर नहीं लगती।

लोकशक्ति के अभाव में लोकतंत्र खतरे में

यह ताकत 'साइन्स' की वजह से हाथ में आयी है। अब आगे पुरानी राजनीति नहीं चलेगी। इसलिए अब जरूरत प्रत्यक्ष लोकतंत्र (डाइरेक्ट डेमोक्रेसी) की है। याने लोग खुद अपना काम करें। आज सारा कारोबार केन्द्र में है, केन्द्रीय सरकार के हाथ में है।

प्रातिनिधिक लोकशाही (डेलिगेटेड डेमोक्रेसी) में पाँच साल के लिए लोगों के हाथ में सत्ता आ जाती है। आज के 5 साल याने पुराने जमाने के 50 साल। हम पाँच साल के लिए आपकी कुल जिम्मेवारी लेते हैं, ऐसा कहा जाता है। याने सब इनके हाथ में है। यह है आज की हालत ! इससे बचने का उपाय या इलाज यही है कि लोग ज्यादा से ज्यादा कारोबार अपने हाथ में लें और थोड़ी-सी मदद ऊपर से मिले। तभी लोकतंत्र मजबूत रहेगा, नहीं तो वह टिक नहीं सकता।

जम्हूरियत कब महफूज होगी?

मेरा मानना है कि आप लोगों को ऐसी कोशिश करनी चाहिए कि गाँव का मन्सूबा (योजना), कारोबार गाँव ही करे और गाँव में जमीन की मिल्कियत न रहे। गाँववाले मिलकर तय करें और जमीन की मिल्कियत छोड़ें। उस पर सबका हक हो। गाँव-गाँव अपने पाँवों पर खड़े रहें। सब गाँव अपना जिम्मा उठा लें। गाँव में बेकार हों, तो उन्हें काम दें। इसमें सरकार थोड़ी मदद करेगी। इस तरह गाँव-गाँव अपना कारोबार देखेंगे, तो डेमोक्रेसी महफूज रहेगी। नहीं तो क्या होगा? ऊपर अच्छे मनुष्य आये, तो लोग सुखी और खराब मनुष्य आये, तो लोग दुखी होंगे। इसलिए हम सुझाते हैं कि गाँव-गाँव में लोग अपने हाथ में राज्य लें और ग्राम-स्वराज्य बनायें।

लेकिन आपके हाथ में तो 'राष्ट्रपति-शासन' है। राष्ट्रपति का शासन और डिक्टेटरशिप में आप क्या फर्क मानते हैं? आपके हाथ में स्टेट का राज्य हो, तो वह खत्म हो सकता है। आज आपका राष्ट्रपति पार्लियामेण्ट को पूछे बगैर कुछ भी नहीं करता और उसे उतनी पावर भी नहीं है और न वह ऐसा शख्स ही है। फिर भी घड़ीभर के लिए मान लीजिए, राष्ट्रपति ऐसा शख्स ही हो और उसका सेना पर कब्जा हो और कारोबार भी गलत चल रहा हो, तो डेमोक्रेसी की डिक्टेटर-शिप बनने में देर न लगेगी। इसलिए डेमोक्रेसी को 'डीजेनेरेट' (भ्रष्ट) होने से बचाना चाहिए।

दोहरी प्रक्रिया

'डेमोक्रेसी' को यह खतरा सारे एशिया में है। इसका इलाज अच्छी मदद पहुँचाना मात्र नहीं। सबसे जो गरीब होंगे, उनको मदद तो पहुँचानी ही चाहिए। साथ ही साथ उन्हें 'डिपेन्डेन्ट' (परावलम्बी) भी नहीं रखना चाहिए। जैसे बाप बच्चे को खिलाता-पिलाता है, यह उसका फर्ज है, लेकिन उसका दूसरा फर्ज है— बच्चों को अपने पाँव पर खड़ा करना; वैसे ही डेमोक्रेसी में भी दोहरी बात होनी चाहिए। पहली बात है— गरीबों को खिलाना-पिलाना और उन्हें यह महसूस कराना कि राज्य हमारे लिए चल रहा है। और दूसरी बात है— जनता को अपने पाँव पर खड़ा करना। जिन लोगों ने आपको 'पावर डेलिगेट' की है— शक्ति सौंपी है, आप उन्हीं को 'पावर रीडेलिगेट' करें— वापस शक्ति सौंप दें।

कश्मीर में ग्राम-स्वराज्य जरूरी

आज चन्द लोगों के हाथ में खेती रहती है, इसलिए गाँवों में भाईचारा नहीं रहता है। और ऐसी हालत में जब गाँव-गाँव में ग्राम पंचायत होती है, तब जिनके हाथ में ज्यादा जमीन है, जिनकी सरकार में इज्जत है, ऐसे लोगों के हाथ में सत्ता रहती है। यानी चूसने का डिसेण्ट्रलाइज मनसूबा आपने किया, ऐसा होगा। गाँव-गाँव के लोग चूसे जाते हैं। आज की हालत में गाँव में मसावात लाने की कोशिश हमें करनी होगी। आज वह कोशिश नहीं होती है। सारा पावर सेण्टर में होता

है। फिर गाँव-गाँव में भी ऐसे लोग होते हैं, जो गरीबों को चूसते हैं। तो गाँव वाले कहते हैं कि आप ही हमें चूसें, इसके बजाय श्रीनगरवाले चूसें, तो अच्छा है। वे ज्यादा चूस नहीं सकेंगे, क्योंकि वे दूर हैं। इसलिए ऐसे लोगों के हाथ में कारोबार सौंपना, जिनके हाथ में जमीन भी ज्यादा है, पैसा ज्यादा है याने चूसने का साधन देना है। इसलिए कश्मीर में मैं देखता हूँ, ग्राम-स्वराज्य बहुत जरूरी है। यह विचार आप लोगों को समझा सकते हैं और इसके लिए आपको इस विचार का मुताला— अध्ययन— करना होगा।

जनता से अलग रहने वाले देवता

जो लोग हुकूमत के जरिये खिदमत करते हैं, वे हैं देवता। वे अक्सर बहिश्त में रहते हैं। उनका मकान आला दर्जे का होता है और वे लोगों से अलग रहना पसन्द करते हैं उनका रहन-सहन और उनका लिबास वगैरह मामूली लोगों से अलग रहता है। पुराने देवता हिन्दी या उर्दू में नहीं बोलते थे। कश्मीरी का तो सवाल ही क्या? वे परशियन बोलते थे। उनसे पुराने देवता संस्कृत बोलते थे। और आजकल के देवता अंग्रेजी बोलते हैं, जो उन्हें मामूली लोगों से अलग रखती हैं अक्सर वे लोगों की जबान बोलना पसन्द नहीं करते और न जानते ही हैं। घर में माँ से तो जरूर उनको कश्मीरी में बोलना पड़ता है, लेकिन दो जुमले बोलने के बाद वे अंग्रेजी लफ्ज बोलने लगते हैं। जब वे अंग्रेजी में बोलते हैं, तब 'एट होम फील' (मुक्तता का अनुभव) करते हैं।

खादिम सादगी से रहे

इसलिए सरकारी अधिकारी, जो वास्तव में खादिम हैं, लोगों में घुल-मिल नहीं सकते। देखा जाता है कि उनमें से जो भी लोगों में मिलते हैं, वे कितने प्यारे बन जाते हैं इसका जरा आप लोग भी अनुभव करके देखिए। मिसाल के तौर पर बख्शीजी लोगों से मिलते हैं, तो उन्होंने काफी प्यार पाया है। उन्होंने इज्जत खोयी नहीं है। लेकिन अक्सर अफसरों में अकड़ होती है। देश के

लोगों की जिन्दगी के साथ उनका कोई ताल्लुक होता नहीं। इसीलिए तो उनको 'देवता' नाम मिला है।

आज मुझे 'डल लेक' में ले गये थे। मैंने देखा कि वहाँ कुछ अच्छे 'हाउस बोट्स' बने हैं, साथ ही साथ कुछ गरीबों की झोपड़ियाँ भी। अगर हममें जरा भी 'सेन्स ऑफ ब्यूटी' (सुन्दरता का विचार) होती, तो हम ऐसा नहीं होने देते। इसमें कोई ब्यूटी नहीं है, यह भद्दापन है। वे लोग नंगे रहें और हम अपनी अकड़ में रहें एवं अपना दर्जा समझें, यह बिलकुल गलत खयाल है। तवारीख में आप देखेंगे कि उन्हीं बादशाहों का लोगों पर सबसे ज्यादा असर रहा है, जो सबसे अधिक सादगी से रहे हैं। नेपोलियन, शिवाजी वगैरह इसके उदाहरण हैं। सादगी के कारण लोगों का उन पर प्यार बढ़ा और वे उनके लिए मर मिटने को तैयार हुए। अक्सर कई अफसर अच्छे होते हैं। वे चाहते हैं कि उनके हाथ से मुल्क की खिदमत हो। पहले मेरा यह खयाल नहीं था। लेकिन इस आठ साल की पदयात्रा में मैंने देखा है कि इनमें बहुत से ऐसे होते हैं, जो खिदमत करना चाहते हैं। लेकिन उनका रहने का ढंग ही उन्हें जकड़े रहता है।

आप किसके नुमाइन्दे हैं?

मैं आपको कोई नसीहत देने के लिए यहाँ नहीं बैठा हूँ। मैं आपसे इतना ही कहना चाहता हूँ कि आपका ताल्लुक जिनके साथ है, उनकी हालत बिलकुल गिरी है। कश्मीर में हमने जो कुछ 'ब्यूटी स्पॉट्स' (सौन्दर्य के स्थल) देखे, वे सब के सब 'डर्टी स्पॉट्स' (असौन्दर्य के स्थल) थे। वहाँ हमने हद दर्जे की गुरबत देखती। लोरेन, गुलमर्ग जहाँ गये, वहाँ एक ही हाल था। एक जगह गाँववालों से मैंने कहा कि मैं आपके यहाँ खाना खाऊँगा। सारे गाँव में सिर्फ एक ही घर में खाना था। उस एक घर में मुझे मकई की रोटी और तरकारी मिली। मैं यह जानता हूँ कि यहाँ के लोग इतने मेहमान-नवाज हैं कि अगर किसी भी घर में जरा भी खाना होता, तो वे खुद छोड़कर मुझे जरूर देते। हमारे साथ जो मजदूर थे, वे पैसा लेने से इन्कार करते थे। वे कहते थे कि हमें खाना

दो। ऐसी हालत लोरेन में थी। आप ऐसे गरीब देश के नुमाइन्दे हैं, यह कभी मत भूलिए, नहीं तो संस्कृत में एक कहावत है, '**राज्यान्ते नरकप्राप्तिः**'।

इन्सानियत बड़ी चीज है। जहाँ वह होती है, वहाँ 'पुलिस-स्टेट' भी अच्छी बन जाती है और जहाँ वह नहीं होती, वहाँ 'वेलफेयर स्टेट' (कल्याणकारी राज्य) भी 'इलफेयर स्टेट' (अकल्याणकारी) बन जाता है। आजकल तो वेलफेयर के नाम से भारी ताकत चन्द लोगों के हाथ में आ गयी है।

'रघुवंश' के एक श्लोक में 'वेलफेयर स्टेट' का वर्णन किया है :

'स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः'

यानी राजा प्रजा का रक्षण करता है, प्रजा को शिक्षण देता है और सभी कुछ करता है। असल में प्रजा का पिता वही है। माँ-बाप तो सिर्फ जन्म देनेवाली मशीनें हैं। ऐसा 'वेलफेयर स्टेट' अगर रहा, तो जिन्दगी में क्या रह जायेगा? मजा नहीं रहेगा। जिन्दगी के सारे काम के लिए प्रजा सरकार पर निर्भर रहे, यह कतई ठीक नहीं है।

सब इन्सान समान हैं

आपमें से जो मुसलमान हैं, वे जानते हैं, कि जामा मस्जिद में नमाज पढ़ने के लिए जाते हैं, तब नमाज पढ़ने वाले सभी लोग समान माने जाते हैं। बादशाह भी वहाँ मामूली लोगों के साथ बैठता है। यही इस्लाम के लोकतंत्र का खयाल है। उपनिषदों में भी यही आता है। बाइबिल में भी ऐसा ही प्रसंग है। '**लव दाय नेबर, एज दायसेल्फ**' अर्थात् अपने जिस्म पर जितना प्यार हो, उतना ही प्यार पड़ोसी पर भी करो।

आज मुझे आपसे यही एक बात अर्ज करनी थी कि आप खायें, पीयें और मौज करें, तब इस चीज का बराबर खयाल रखें कि आप किसके नुमाइन्दे हैं।

•

18. हिन्दुस्तान का सिर सर्वोदय का सिर बने

हमें जम्मू-कश्मीर में बहुत कुछ देखने, सुनने और सीखने को मिला। कुल मिलाकर बहुत खुशी हुई। यहाँ के सब तबकों के लोगों के साथ हमारी मुलाकातें हुईं। सभी लोग बेरोक-टोक हमसे मिलते थे। मुख्तलिफ पार्टियों के लोग अपनी-अपनी बात हमारे सामने रखते थे। हमने देखा, अपनी बातें रखने में उन्हें किसी प्रकार की न कोई अन्दरूनी और न बाहरी रुकावट महसूस हुई। सबका दिल हमारे सामने खुला। जमातों से भी हमारी बातें हुईं और इफ़िरादी तौर पर भी हुई। उन सबका और यहाँ जो देखा, उसका हम पर काफी असर रहा।

प्रेममय क्रान्ति के आसार

हम समझते हैं कि इस सूबे में अमन और प्यार के तरीके से एक इन्किलाब होने जा रहा है और अपने भाइयों को अपने साथ करने में लोगों के दिल खुल रहे हैं। हमारे देश के दिल में हमेशा के लिए यह बात रही है कि हम अपने पड़ोसी पर प्यार करें, मिल-जुलकर रहें, उसके साथ झगड़ा न करें। ये बातें पहले से ही हमारे तमद्दुन में हैं। इन्सान के दिल में बीच-बीच में बुराई आती है, लेकिन वह टिकती नहीं। इन्सान की फितरत में जो अच्छाई है, वही कायम रहती है। फिजा बिगड़ जाने की वजह से बीच-बीच में बुराई आती है।

हमने देखा कि यहाँ के लोगों का दिल वसी है और आफत में भी वे मस्त रहते हैं। यहाँ पर (कानून की वजह से) मालिकों के पास जमीन थोड़ी रही है, लेकिन वे उसमें से भी प्यार दिखाने के लिए कुछ न कुछ दे देते हैं। जहाँ ऐसी जिन्दादिली हो, दिल में मुहब्बत, रहम, हमदर्दी हो, वहाँ इन्सान और इन्सानियत की बहुत तरक्की हो सकती है। यह 'पोटेन्शियल' (गर्भित शक्ति) चीज पड़ी है, जिसे 'डेवलप' (विकसित) करना है। खूबसूरत कुदरत है, तो इंन्सान भी बदसूरत नहीं हो सकता। लेकिन हमने यहाँ पर जितने 'ब्यूटी स्पॉट्स' देखे, वहाँ इनकी गुर्बत भी देखी। वहाँ की ब्यूटी हमारे दिल को खींच नहीं सकी। गुर्बत मिटाने का मसला हम सबके सामने पड़ा है, सिर्फ

कश्मीर के सामने ही नहीं, बल्कि सारे हिन्दुस्तान के और करीब-करीब आधी दुनिया के सामने पड़ा है। यह खूब समझने की बात है कि हम एक नहीं होंगे, तो उसका मुकाबला नहीं कर सकेंगे।

तफरके मिटने से ही दुनिया सुकून पायेगी

मजहब, कौम, जबान वगैरह सब तरह के तफरके मिटाकर हम अपने दिल को वसी बनायेंगे, तभी कश्मीर और हिन्दुस्तान की ताकत बनेगी और वह ऐसी ताकत होगी, जिससे दुनिया का हर शख्स सुकून पायेगा।

मैं चाहता हूँ कि कश्मीर सारी दुनिया को जोड़ने वाली कड़ी बन जाय। आज कश्मीर स्वयं एक मसला बन बैठा है। जब कि होना यह चाहिए कि कश्मीर का कोई मसला न हो और वह दुनिया के मसले हल करे। आखिर ऐसे खूबसूरत प्रदेश में झगड़े क्यों हों? यहाँ जो सियासी झगड़े चल रहे हैं, उन्हें मिटा दें, तो ताकत बनेगी। इसलिए मैं चाहता हूँ कि श्रीनगर के हर घर में सर्वोदय की किताबें पहुँचें और श्रीनगर में ऐसा कोई घर न रहे, जहाँ यह श्री न पहुँचे। विचार से बढ़कर कौन श्री, शोभा, जीनत हो सकती है? यहाँ पर जो 50 हजार घर हैं, इन सबमें आप सर्वोदय-साहित्य पहुँचा देंगे, तो आपकी और मेरी सोहबत कायम के लिए बनी रहेगी। मैं आशा करता हूँ कि श्रीनगर सर्वोदय-नगर बन जाय और कश्मीर सर्वोदय-स्टेट बन जाय। कश्मीर हिन्दुस्तान का सिर है, तो वह सर्वोदय का भी सिर बने।

गैरजानिबदार कारकून चाहिए

इसके लिए गैरजानिबदार (पक्षातीत) खिदमत करने वाले लोग चाहिए। हिन्दुस्तान में आज यही बात मुश्किल मालूम होती है, क्योंकि लोगों के दिमाग सियासत में पड़े हैं। मुल्क में नयी-नयी सियासी जमातें खड़ी हो रही हैं। इससे मुल्क में जान है, ऐसा दीखता है, इसलिए मुझे वह भी अच्छा लगता है। लेकिन आखिर दुनिया के मसलों का हल इनसे नहीं होगा। आप पेड़ से नीचे उतरेंगे, तभी पेड़ को काट सकेंगे। इसलिए चन्द लोग तो ऐसे निकलें, जो कि दलीय

राजनीति से अलग होकर काम करें। शान्ति-सेना में ऐसे लोग ही आ सकते हैं। दूसरे लोग आयेंगे, तो पहले से ही लोगों के दिलों में शक पैदा होगा कि ये पार्टीवाले पता नहीं क्या करेंगे। क्या गैरजानिबदार बनकर, पार्टियों से अलग होकर, सबकी खिदमत करने वाले, सब पर समान प्यार करने वाले लोग कश्मीर में नहीं मिलेंगे?

मेरी माँग है कि कश्मीर-वादी में हर पाँच हजार लोगों के पीछे एक कारकून (कार्यकर्ता) के हिसाब से चार सौ ऐसे कारकून मिलने चाहिए। उनकी ट्रेनिंग वगैरह का इन्तजाम कीजिए और कहिए कि यह ऋषि-मुनियों का, अल्लाह का देश है। तभी आपकी जबान में जोर आयेगा।

.

शब्दकोश

अ

अकीदा - श्रद्धा

अक्लियत – अल्पमत

अक्सरियत - बहुमत

अखलाकी - नैतिक

अदब - साहित्य

अदम तशदुद - अहिंसा

अदावत - झगड़ा

अनफरदा - एक-एक

अमन - शान्ति

अलामत – निशानी

अवलिया - फकीर

अवाम - जनता

अहम - महत्त्वपूर्ण

अहमियत – महत्त्व

आ

आजमाइश - परीक्षा

आजा - इंद्रियाँ

आयनुल यकीन - दर्शन द्वारा प्राप्त विश्वास

आरामगाह - विश्राम-स्थान

आला - उच्च

आलिम - विद्वान्

इ

इक्तसादी - आर्थिक

इजहार - अभिव्यक्ति

इजाफा - वृद्धि

इतमीनान - सन्तोष

इदारा - संस्था

इन्किलाबे कल्ब - हृदय-परिवर्तन

इन्तहां - सीमा

इन्तहाई - असीम

इफ्तेदाह - आरम्भ

इबादत - पूजा

इबादतगाह - पूजा-स्थान

इमदाद – सहायता

इलमुलयकीन - ज्ञान द्वारा प्राप्त विश्वास

इलाही - ईश्वरी

इल्म - ज्ञान

इस्तकबाल - स्वागत

इस्तकबालिया कमेटी - स्वागत समिति

ई

ईजाद - शोध

उ

उस्ताद - शिक्षक

आसार – लक्षण

क

कदमबोसी - चरणों की पूजा

कदीम - प्राचीन

कद्र - मूल्य

कर्जा - मृत्यु

कल्ब - हृदय

कशमकश - संघर्ष

कादिर - सर्वशक्तिमान्

काफिर - नास्तिक

काबिल - योग्य

काबिलियत - योग्यता

कायल - माननेवाला

कारकून - कार्यकर्ता

किताबपरस्ती - पुस्तक-पूजा

कुदरत - प्रकृति

कुफ्र - नास्तिकता

कुल - सम्पूर्ण

कौल - मंत्र, आवाज

ख

खालिक - शुद्ध

खाविन्द - पति

ए

एहसास - भान

ऐतबार - विश्वास

खूबसूरत - सुन्दर

खौफनाक - भयानक

ख्वाहिश - इच्छा

ग

गजब - गुस्सा

गरूर - गर्व

गालिब - विजेता

गिजा - अन्न

गुर्बत - दारिद्रय

गैरजानिबदार - निष्पक्ष

च

चश्मा - सोता

ज

जखीरा - भंडार

जज्बा - भावना

जद्दोजहद - संघर्ष

जन्नत - स्वर्ग

जम्हूरियत - लोकशाही

जलजला - भूकम्प

जहन्नुम - नर्क

जहालत - मूर्खता

खिदमत - सेवा

खिदमतगार - सेवक

खिदमतपरस्त - सेवापरायण

खिदमतपरस्ती - सेवापरायणता

खिलकत - सृष्टि

खुदगर्ज - स्वार्थी

खुसूसियत - विशेषता

जिस्मानी - शारीरिक

जिस्मानी मजदूरी - शरीर-परिश्रम

जीनत - शोभा

जुज - अवयव

जुनूब - दक्षिण

जुमला – वाक्य

त

तंगदिल - संकुचित हृदय

तंगनजरिया - संकुचित दृष्टि

तकरीर - भाषण

तकसीम - विभाजन

तजुरबा - अनुभव

तजुरबेकार - अनुभवी

तनहाई - एकान्त

तफरका - भेद

तफसीर - भाष्य

तब्दीली - परिवर्तन

तमगा – पदवी

जाती तौर पर - व्यक्तिगत तौर पर

जाती नजात - व्यक्तिगत मुक्ति

जानिबदार - पक्षीय

जालिम - जुल्म करनेवाला

जिन्दादिली - प्रसन्नचित्तता

जियारत - तीर्थस्थान, दर्शन

जिस्म - शरीर

तहजीब - संस्कृति

तहरीक - आन्दोलन

ताजीर - व्यापारी

तामीरी प्रोग्राम - रचनात्मक कार्य

तालिबिल्म - विद्यार्थी

तिजारत - व्यापार

तिलावत - पाठ

तीमारदारी - बीमारों की सेवा

तुलबा - विद्यार्थी (बहुवचन)

तौहीद - अद्वैत

द

दरख्त - पेड़

दस्तकारी - कुटीर-उद्योग

दिलकश - आकर्षण

दीदार - दर्शन

दीन - धर्म

दुआ - आशीर्वाद, प्रार्थना

दुश्वारी - कठिनता, अड़चन

तमद्दुन - सभ्यता

तमन्ना - इच्छा

तमीन - विवेक

तर्जुमान - प्रतिनिधि

तलफ्फुज - उच्चारण

तवज्जुह - ध्यान

तवारीख - इतिहास

तशद्दुद - हिंसा

तसल्ली - समाधान

तसव्वुर - कल्पना

नामानिगार - संवाददाता

निजाम - रचना

नियामत - देन

नुक्ता - बिन्दु

नुमाइन्दा - प्रतिनिधि

नूर - प्रकाश

नेक आमाल - अच्छे काम

प

पाक - पवित्र

पुख्ता - प्रौढ़

पैगाम - सन्देश

फ

फख्र - पवित्र

पुख्ता - कृपा

फन - कला

न

नक्शेकदम - चरण-चिह्न

नजरअन्दाज - दृष्टि से बाहर

नजरिया - दृष्टिकोण, विचार

नजात - मुक्ति

नजारा - दृश्य

नबी - पैगम्बर

नसीहत - उपदेश

नाकाफी - अपर्याप्त

नापाक - अपवित्र

बेदार - जाग्रत

बेदारी - जाग्रति

बेरहमी - निर्दयता

बैनुल अकवामी - अन्तर्राष्ट्रीय

म

मगरिब - पश्चिम

मजलूम - जिस पर जुल्म किया गया

मन्जर - दृश्य

मन्सूबा - योजना

मबनी - निर्भर

मरकज - केन्द्र

मर्दुमशुमारी - जनगणना

मशरिक - पूर्व

मश्क - अभ्यास

मसावात - समानता

फिजा - हवा

फित्रत - स्वभाव

फित्रती - स्वाभाविक

फिरकापरस्ती - साम्प्रदायिकता

फेहरिश्त - सूची

ब

बगावत - विद्रोह

बदसूरत - कुरूप

बहिश्त - स्वर्ग

बुजदिल - डरपोक

बुतपरस्ती - मूर्तिपूजा

बुनियादी इन्कलाब - आमूल क्रान्ति

बेखौफ - निर्भय

बेतजुरबेकार - अननुभवी

मुख्तलिफ - भिन्न

मुख्तसर – संक्षेप

मुजारा - किसान

मुतअस्सिर - प्रभावित

मुतालबा - माँग

मुताला - अध्ययन

मुत्तफिक - सहमत

मुत्तहिद - इकट्ठा, संयुक्त

मुश्तरका – सम्मिलित

मुश्तरका मिल्कियत - सामूहिक स्वामित्व

मुहैया होना - प्राप्त होना

महदूद - सीमित

महफूज - सुरक्षित

मह्व - लीन

माकूल - उचित

मादरी जबान - मातृभाषा

मादरे वतन - मातृभूमि

मायूस - निराशा

माली - आर्थिक

माहौल - वातावरण

मिकदार - मात्रा

मीजान - तराजू

मुकम्मिल - पूर्ण

मुकामी मैदान - स्थानिक क्षेत्र

मुखालिफत - विरोध

रोजा - व्रत

रौनक – शोभा

ल

लकीर - रेखा

लफ्ज - शब्द

लमहा - क्षण

लातादाद - अनन्त

लुगात - शब्दकोश

लुत्फ – मजा

व

वफात - मृत्यु

मुहलत - समय

मेहमाननवाज - अतिथि-सत्कार करनेवाला

य

याददाश्त – समृति

र

रजामन्दी - अनुमति

रसूल – भगवान् का दूत

रस्मुलखत - लिपि

रहनुमाई - नेतृत्व

रहम - दया

राज - रहस्य

रूह - आत्मा

रूहानियत - आध्यात्मिकता

रूहानी - आध्यात्मिक

शिर्क - भगवान् के साथ और किसी को जोड़ना

शुमाल – उत्तर

स

संगदिल - निर्दय

सबब - कारण

सब्र - धीरज

सरकारी मुलाजिम - सरकारी नौकर

सरमाया - पूँजी

सरमायेदार - पूँजीपति

सलीम - सुशील

वर्जिश - व्यायाम

वली - सन्त

वसी - व्यापक

वहदत - एकता

वाकफियत - परिचय

वाकिफ - परिचित

वादी – घाटी

श

शख्स - व्यक्ति

शख्सी मिलकियत - व्यक्तिगत स्वामित्व

शहवत - काम-वासना

शायर - कवि

शाया - प्रकाशित

शिरकत - साझेदारी

सियासत - राजनीति

सियासतदाँ - राजनीतिज्ञ

सुकून - शान्ति

सैलाब - बाढ़

ह

हक - सत्य

हमलावर - आक्रामक

हरारत - गर्मी

हरफी - शाब्दिक

हसद - ईर्ष्या

सल्तनत - साम्राज्य

सवाब - पुण्य

सिफत – गुण

सिफर - शून्य

हिकमत - युक्ति

हिदायत - आज्ञा

हुकूमतपरस्त - सत्तापरायण

हुकूमतपरस्ती - सत्तापरायणता

हैवानियत – राक्षसीपन